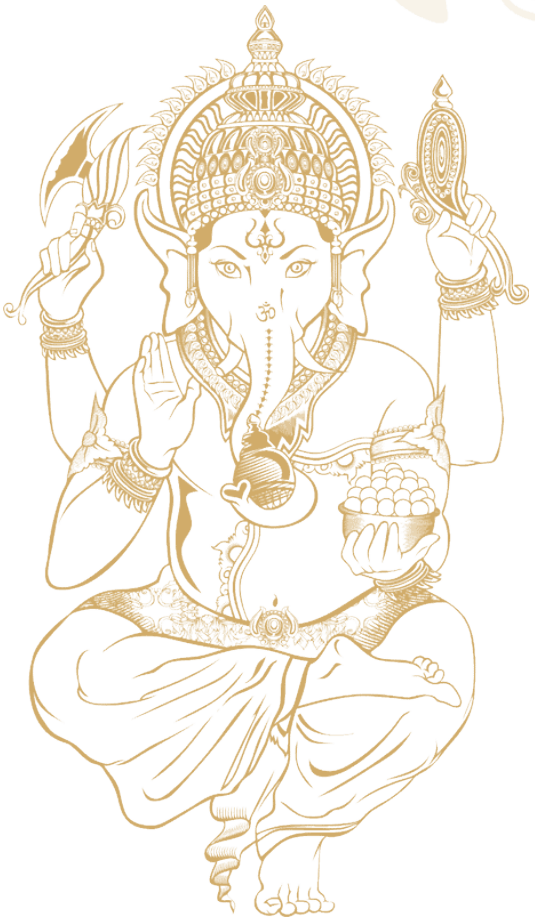

Mr.

22 Dec 2025

04:52 PM

Delhi

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120662401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**22/12/2025**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**16:52:00 घंटे**
इष्ट	24:13:49 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	16:30:52 घंटे
वेलान्तर	00:01:25 घंटे
साम्पातिक काल	22:35:57 घंटे
सूर्योदय	07:10:28 घंटे
सूर्यास्त	17:29:17 घंटे
दिनमान	10:18:49 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	06:38:28 धनु
लग्न के अंश	28:57:31 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**मकर - शनि**
नक्षत्र-चरण	**उत्तराषाढ़ा - 3**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	व्याघात
करण	तैतिल
गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	सिंह
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	जा-जामवंत
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	पौष	1
पंजाबी	संवत : 2082	पौष	8
बंगाली	सन् : 1432	पौष	6
तमिल	संवत : 2082	मार्गड़ी	7
केरल	कोल्लम : 1201	धनु	7
नेपाली	संवत : 2082	पौष	7
चैत्रादि	संवत : 2082	पौष	शुक्ल 2
कार्तिकादि	संवत : 2082	पौष	शुक्ल 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 2
तिथि समाप्ति काल _____: 10:51:59
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उत्तराषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 29:32:09 घंटे
जन्म योग _____: उत्तराषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग ____: ध्रुव
योग समाप्ति काल _____: 16:40:22 घंटे
जन्म योग _____: व्याघात
सूर्योदय कालीन करण ____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 10:51:59 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 33:10:17
भभोग _____: 64:50:40
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 2 वर्ष 11 मा 8 दि

घात चक्र

मास _____: वैशाख
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: मंगलवार
नक्षत्र _____: रोहिणी
योग _____: वैधृति
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: कुम्भ
सूर्य _____: कुम्भ
चन्द्र _____: सिंह
मंगल _____: मीन
बुध _____: धनु
गुरु _____: मेष
शुक्र _____: वृष
शनि _____: मकर
राहु _____: मिथुन

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

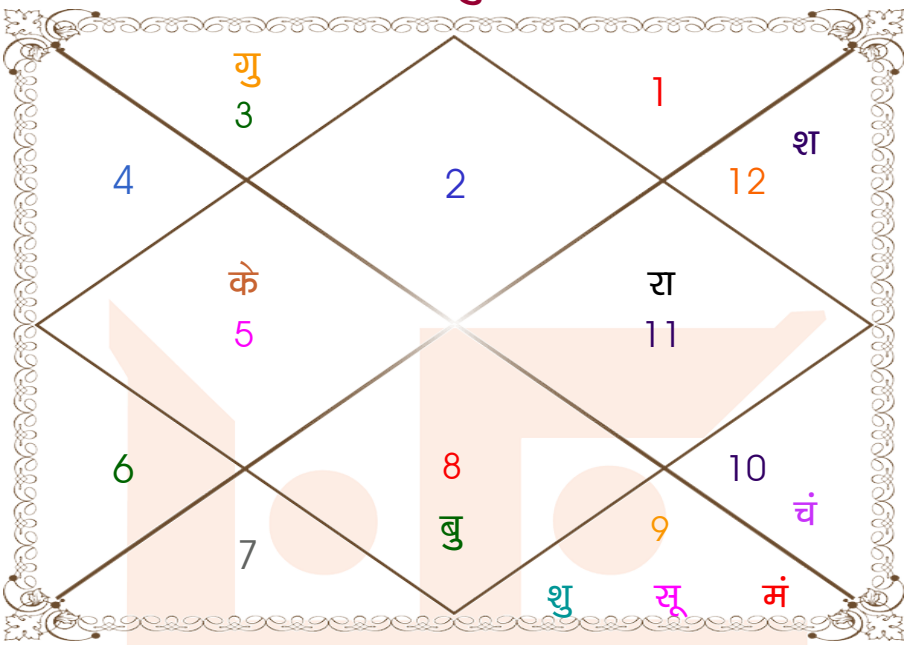

चन्द्र कुंडली

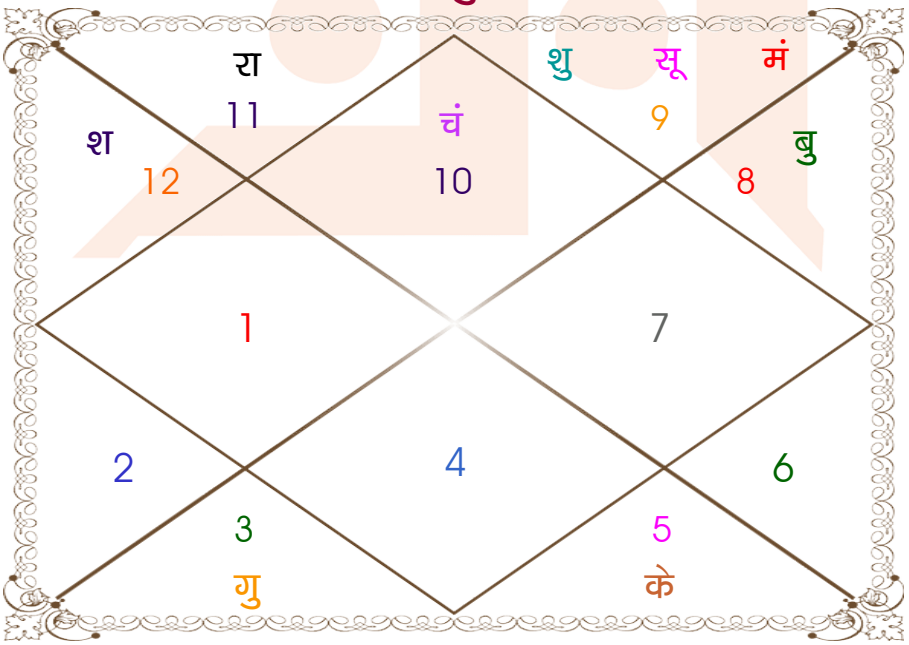

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

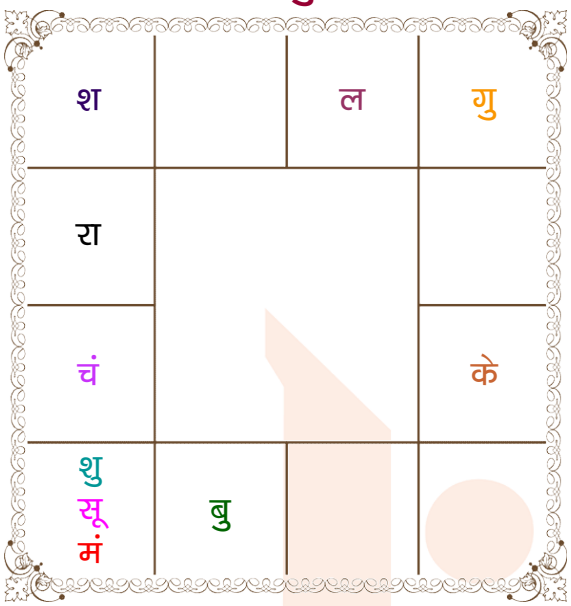

लग्न कुंडली

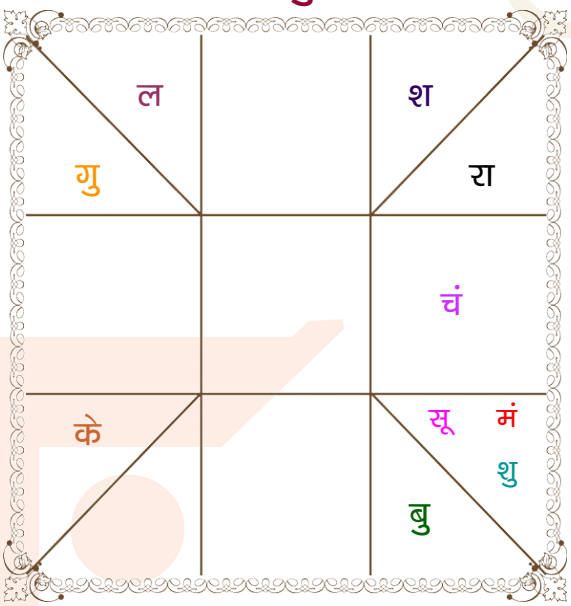

विंशोत्तरी
सूर्य 2वर्ष 11मा 8दि

सूर्य

22/12/2025

02/12/2142

सूर्य	30/11/2028
चन्द्र	01/12/2038
मंगल	30/11/2045
राहु	01/12/2063
गुरु	01/12/2079
शनि	01/12/2098
बुध	02/12/2115
केतु	02/12/2122
शुक्र	02/12/2142

योगिनी
संकटा 3वर्ष 11मा 1दि

संकटा

22/12/2025

23/11/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	22/12/2025
भद्रिका	03/01/2027
उल्का	04/05/2028
सिद्धा	23/11/2029

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	28:57:31	342:33:22	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	---
सूर्य			धनु	06:38:28	01:01:07	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	मित्र राशि
चंद्र			मक	03:28:00	12:20:16	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	सम राशि
मंगल		अ	धनु	11:11:51	00:45:35	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	मित्र राशि
बुध			वृश्चि	20:11:47	01:27:23	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		मिथु	28:19:31	00:07:03	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र		अ	धनु	02:59:44	01:15:32	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
शनि			मीन	01:27:47	00:02:34	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	17:14:46	00:08:51	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	17:14:46	00:08:51	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	04:01:06	00:02:00	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	05:11:35	00:00:25	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
प्लूटो			मक	08:13:09	00:01:41	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			कुंभ	13:03:47	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:17

लग्न-चलित

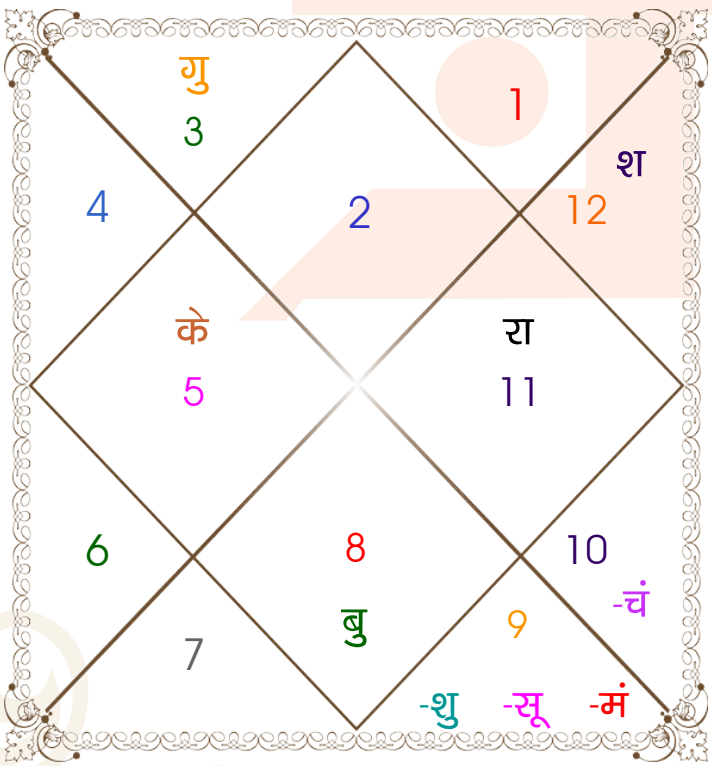

चन्द्र कुंडली

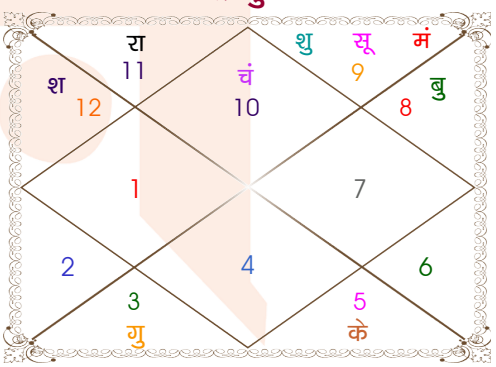

नवमांश कुंडली

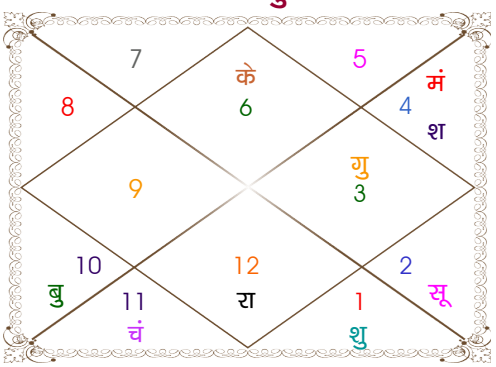

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	11:18:34	वृष	28:57:31
2	मिथुन	11:18:34	मिथुन	23:39:37
3	कर्क	06:00:39	कर्क	18:21:42
4	सिंह	00:42:45	सिंह	13:03:47
5	कन्या	00:42:45	कन्या	18:21:42
6	तुला	06:00:39	तुला	23:39:37
7	वृश्चिक	11:18:34	वृश्चिक	28:57:31
8	धनु	11:18:34	धनु	23:39:37
9	मकर	06:00:39	मकर	18:21:42
10	कुम्भ	00:42:45	कुम्भ	13:03:47
11	मीन	00:42:45	मीन	18:21:42
12	मेष	06:00:39	मेष	23:39:37

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	28:57:31
2	मिथुन	22:05:03
3	कर्क	15:41:03
4	सिंह	13:03:47
5	कन्या	16:23:36
6	तुला	23:42:37
7	वृश्चिक	28:57:31
8	धनु	22:05:03
9	मकर	15:41:03
10	कुम्भ	13:03:47
11	मीन	16:23:36
12	मेष	23:42:37

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

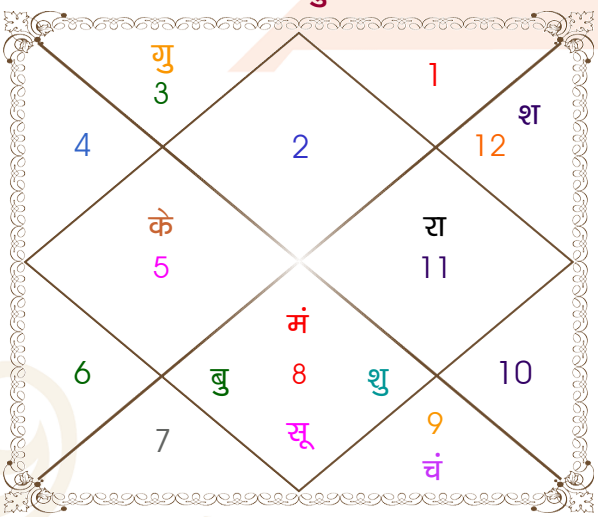

भाव कुंडली

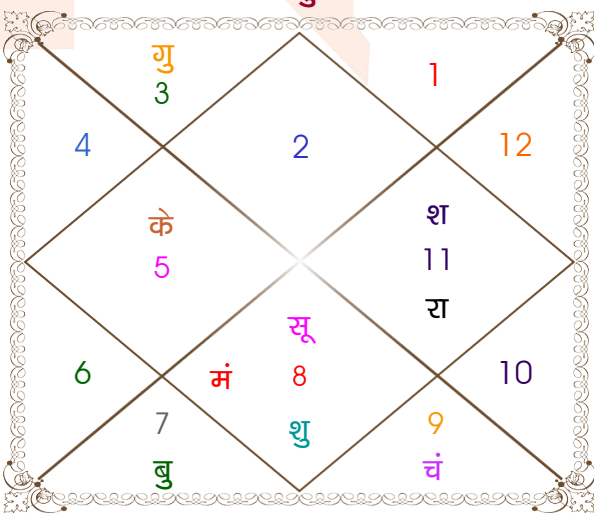

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	कुमार	मुदित	शयन	3.15	30 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	मृत	शान्त	कौतुक	3.63	45 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	कुमार	विकल	कौतुक	0.00	17 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	कुमार	शान्त	कौतुक	3.83	42 %
गुरु	आत्मा	धन	मृत	खल	उपवेशन	2.70	71 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	बाल	विकल	गमन	1.47	27 %
शनि	कलत्र	आयु	मृत	निपीदित	आगमन	1.62	67 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	मुदित	कौतुक	0.00	76 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	खल	गमन	0.00	76 %
कुल						16.38	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

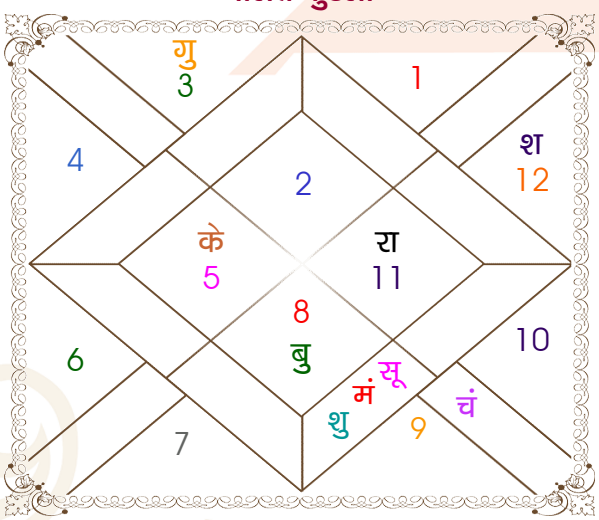

लग्न-चलित

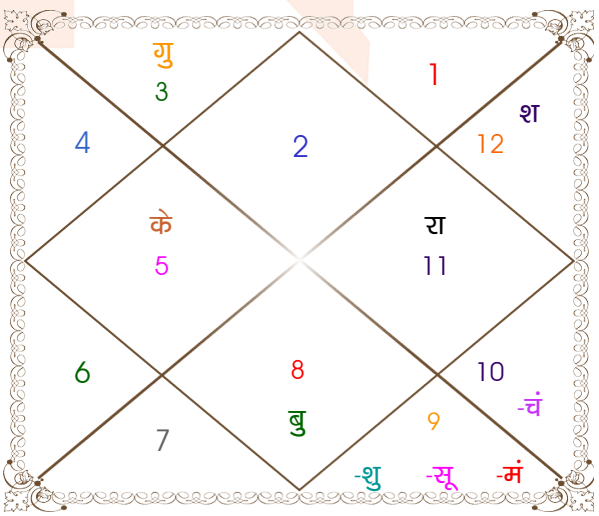

सुदर्शन चक्र

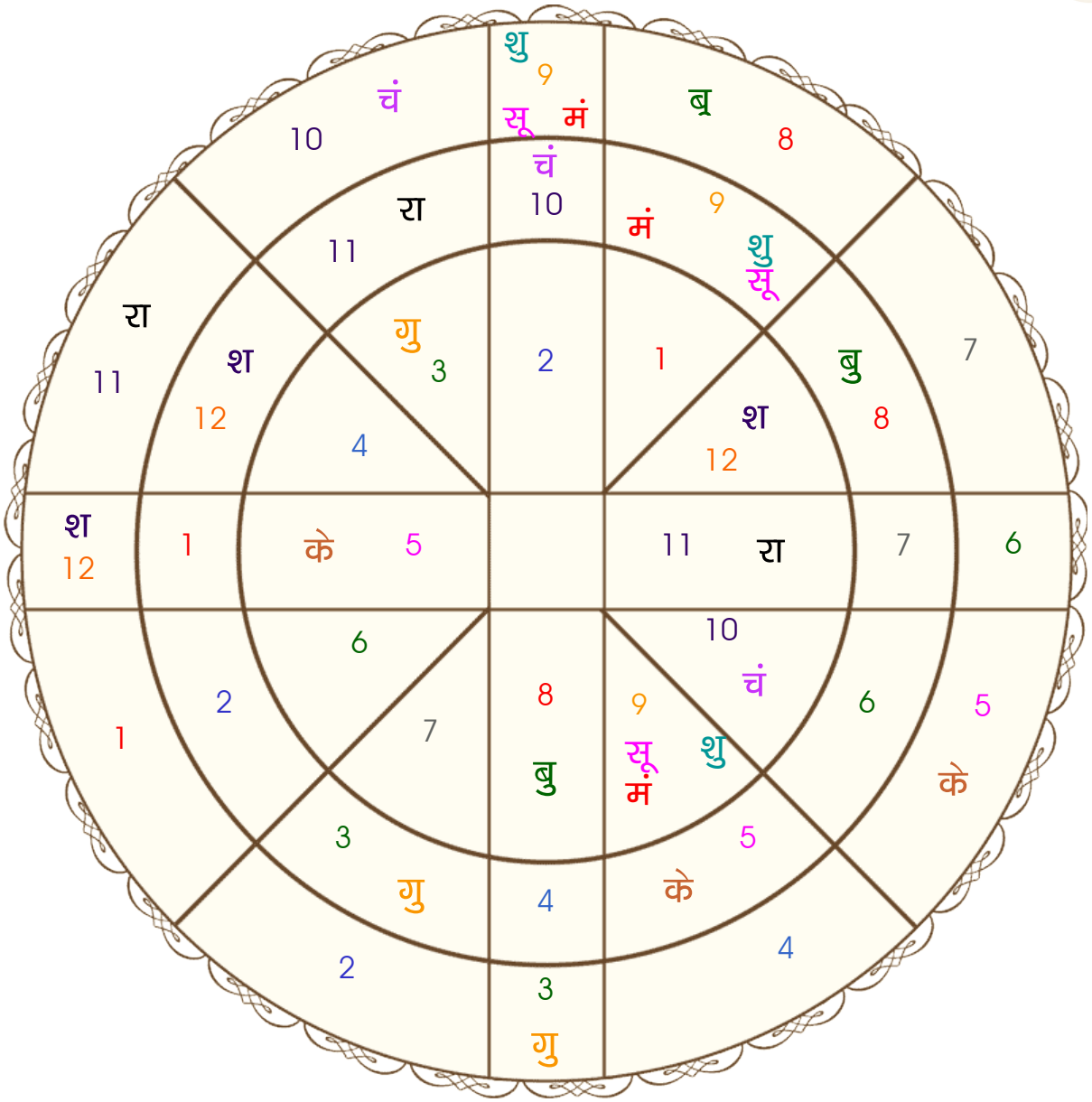

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 10 मास 21 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	06:44:56	गुरु	केतु	राहु	केतु
चंद्र		मक	03:34:28	शनि	सूर्य	शनि	बुध
मंगल		धनु	11:18:19	गुरु	केतु	शनि	गुरु
बुध		वृश्चि	20:18:15	मंगल	बुध	शुक्र	राहु
गुरु	व	मिथु	28:25:59	बुध	गुरु	शुक्र	बुध
शुक्र		धनु	03:06:12	गुरु	केतु	सूर्य	मंगल
शनि		मीन	01:34:15	गुरु	गुरु	राहु	राहु
राहु	व	कुंभ	17:21:14	शनि	राहु	शुक्र	केतु
केतु	व	सिंह	17:21:14	सूर्य	शुक्र	मंगल	मंगल
हर्ष	व	वृष	04:07:34	शुक्र	सूर्य	शनि	सूर्य
नेप		मीन	05:18:03	गुरु	शनि	शनि	गुरु
प्लूटो		मक	08:19:37	शनि	सूर्य	शुक्र	चंद्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	29:03:59	शुक्र	मंगल	शनि	सूर्य
2	मिथु	22:11:31	बुध	गुरु	शनि	बुध
3	कर्क	15:47:31	चंद्र	शनि	गुरु	शुक्र
4	सिंह	13:10:15	सूर्य	केतु	बुध	शनि
5	कन्या	16:30:04	बुध	चंद्र	शनि	शुक्र
6	तुला	23:49:05	शुक्र	गुरु	शनि	गुरु
7	वृश्चि	29:03:59	मंगल	बुध	शनि	सूर्य
8	धनु	22:11:31	गुरु	शुक्र	शनि	शनि
9	मक	15:47:31	शनि	चंद्र	शनि	शनि
10	कुंभ	13:10:15	शनि	राहु	बुध	शुक्र
11	मीन	16:30:04	गुरु	शनि	गुरु	राहु
12	मेष	23:49:05	मंगल	शुक्र	शनि	गुरु

के.पी. अयनांश : 24:06:49

फॉरच्युना : मिथुन 25:53:31

लग्न कुंडली

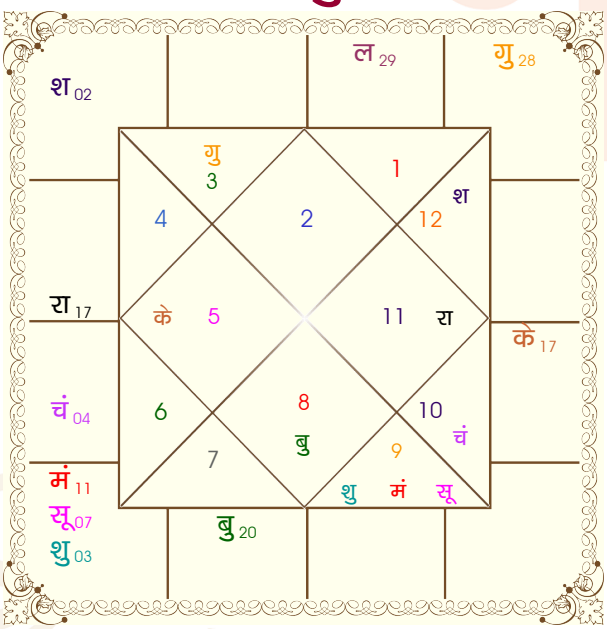

भाव कुंडली

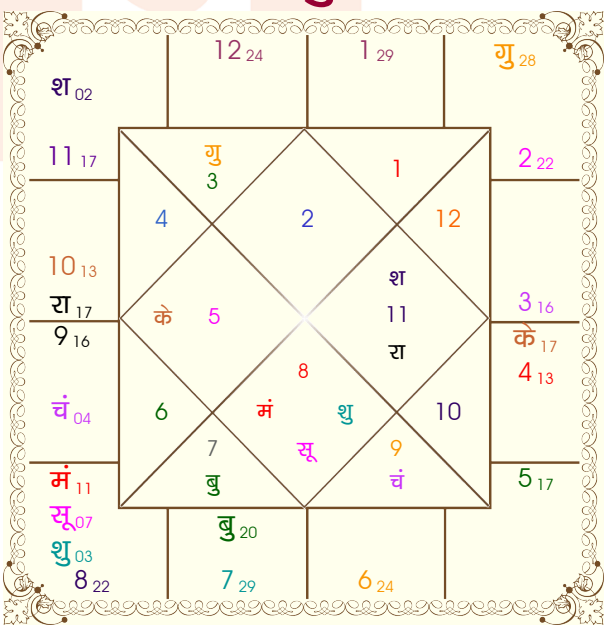

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र- केतु-
2	बुध, गुरु+ शनि,
3	चंद्र-
4	सूर्य+ चंद्र- मंगल, शुक्र, केतु,
5	बुध,
6	बुध+ शुक्र- केतु-
7	सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र, केतु,
8	चंद्र, गुरु, शनि-
9	शनि-
10	शनि, राहु+
11	गुरु, शनि-
12	मंगल-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4+ 7,
चंद्र	3- 4- 7, 8,
मंगल	4, 7, 12-
बुध	2, 5, 6+
गुरु	2+ 8, 11,
शुक्र	1- 4, 6- 7,
शनि	2, 8- 9- 10, 11-
राहु	10+
केतु	1- 4, 6- 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	के	शु
2	गु श	गु	बु	बु
3	--	--	--	चं
4	सू मं शु	के	चं	सू
5	--	--	बु	बु
6	बु	बु	के	शु
7	चं के	सू मं शु	--	मं
8	--	चं	गु श	गु
9	--	--	--	श
10	रा	श रा	--	श
11	--	--	गु श	गु
12	--	--	--	मं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	4	---	धनु	7
चंद्र	3	5,9	मकर	8
मंगल	7,12	1	धनु	7
बुध	2,5	7	वृश्चिक	6
गुरु	8,11	2,6	मिथुन	2
शुक्र	1,6	8,12	धनु	7
शनि	9,10	3,11	मीन	10
राहु	---	10	कुम्भ	10
केतु	---	4	सिंह	4

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	4	4	---	10	10
चंद्र	4	---	7	9,10	3,11	10
मंगल	---	4	4	9,10	3,11	10
बुध	2,5	7	6	1,6	8,12	7
गुरु	8,11	2,6	2	1,6	8,12	7
शुक्र	---	4	4	4	---	7
शनि	8,11	2,6	2	---	10	10
राहु	---	10	10	1,6	8,12	7
केतु	1,6	8,12	7	7,12	1	7

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	246.64	273.47	251.20	230.20	88.33	243.00	331.46	317.25	137.25	34.02	335.19	278.22
सूर्य	--	--	युति	--	--	युति	चतु	--	--	--	चतु	--
246.64	0.00	0.00	8.88	0.00	0.00	9.28	0.64	0.00	0.00	0.00	2.79	0.00
चंद्र	--	--	--	--	सप्त	--	तृती	--	--	पंच	तृती	युति
273.47	0.00	0.00	0.00	0.00	8.59	0.00	2.60	0.00	0.00	2.97	2.70	8.79
मंगल	युति	--	--	--	8वां	युति	4था	--	--	--	4था	--
251.20	8.88	0.00	0.00	0.00	2.21	6.53	5.24	0.00	0.00	0.00	8.09	0.00
बुध	--	--	--	--	--	युति	--	चतु	--	--	--	--
230.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.28	0.00	2.15	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	सप्त	--	--	--	--	9वां	9वां	--	--	9वां	सप्त
88.33	0.00	8.59	0.00	0.00	0.00	0.00	9.47	3.99	0.00	0.00	7.52	5.10
शुक्र	युति	--	युति	युति	--	--	चतु	--	--	--	चतु	--
243.00	9.28	0.00	6.53	2.28	0.00	0.00	2.76	0.00	0.00	0.00	2.52	0.00
शनि	10वा	--	10वा	10वा	पंच	10वा	--	युति	सप्त	3रा	युति	--
331.46	8.57	0.00	5.24	3.81	2.04	9.87	0.00	0.82	0.82	9.64	9.25	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	युति	--	सप्त	--	--	--
317.25	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.82	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	--	--	चतु	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--
137.25	0.00	0.00	0.00	2.15	0.00	0.00	0.82	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--
34.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	तृती	--	--
335.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.25	0.00	0.00	2.86	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	--	--	सप्त	--	--	नवां	--	पंच	तृती	--
278.22	0.00	8.79	0.00	0.00	5.10	0.00	0.00	0.04	0.00	1.36	2.11	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	58.96	83.66	108.36	133.06	168.36	203.66	238.96	263.66	288.36	313.06	348.36	23.66
सूर्य	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
246.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	नवां	--	--
273.47	0.00	0.00	0.11	0.00	0.00	0.00	0.00	5.17	0.11	0.81	0.00	0.00
मंगल	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	--	तृती	4था	--
251.20	2.85	2.63	0.00	0.00	0.00	0.00	2.85	2.63	0.00	2.65	7.32	0.00
बुध	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--
230.20	6.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.08	0.00	2.66	0.00	2.66	0.00
गुरु	--	युति	--	अष्ट	--	5वां	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--
88.33	0.00	8.83	0.00	0.92	0.00	8.83	0.54	8.83	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	अष्ट	--	--	--
243.00	9.12	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.12	0.00	0.84	0.00	0.00	0.00
शनि	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	3रा
331.46	2.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.84
राहु	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
317.25	0.00	0.00	0.00	9.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.06	0.00	0.00
केतु	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
137.25	0.00	0.00	0.00	9.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.06	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति
34.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.51	4.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.67
नेप	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
335.19	0.00	0.00	0.00	0.00	1.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	--	--	--
278.22	0.00	0.46	4.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.46	4.87	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	58.96	82.08	105.68	133.06	166.39	203.71	238.96	262.08	285.68	313.06	346.39	23.71
सूर्य	--	--	--	--	--	--	युति	--	नवां	--	--	--
246.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.93	0.00	0.07	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	नवां	पंचा	--
273.47	0.00	0.00	2.87	0.00	0.00	0.00	0.00	3.70	2.87	0.81	0.11	0.00
मंगल	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	--	तृती	4था	--
251.20	2.85	4.18	0.00	0.00	0.00	0.00	2.85	4.18	0.00	2.65	8.56	0.00
बुध	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--
230.20	6.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.08	0.00	1.14	0.00	1.63	0.00
गुरु	--	युति	--	अष्ट	--	5वां	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--
88.33	0.00	7.94	0.00	0.92	0.00	8.85	0.54	7.94	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
243.00	9.12	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.12	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	चतु	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	3रा
331.46	2.38	0.00	0.34	0.00	0.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.07	6.88
राहु	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
317.25	0.00	0.90	0.00	9.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.06	0.00	0.00
केतु	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--
137.25	0.00	0.00	0.00	9.06	0.00	0.00	0.00	0.90	0.00	9.06	0.00	0.00
हर्ष	--	--	पंचा	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
34.02	0.00	0.00	0.87	0.00	0.00	4.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.72
नेप	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
335.19	0.00	0.00	0.00	0.00	3.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
278.22	0.00	0.00	7.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.10	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

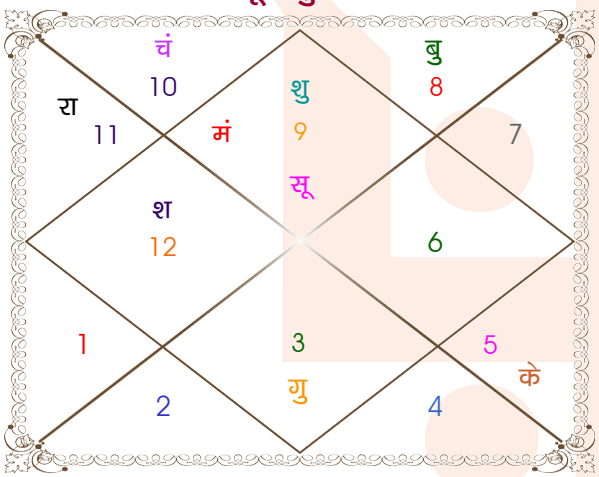

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

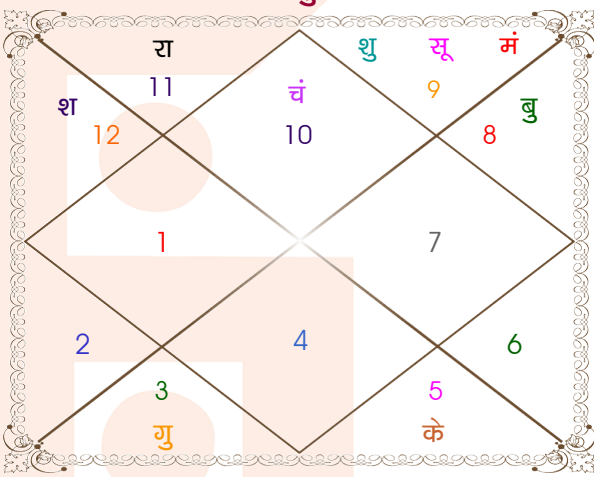

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

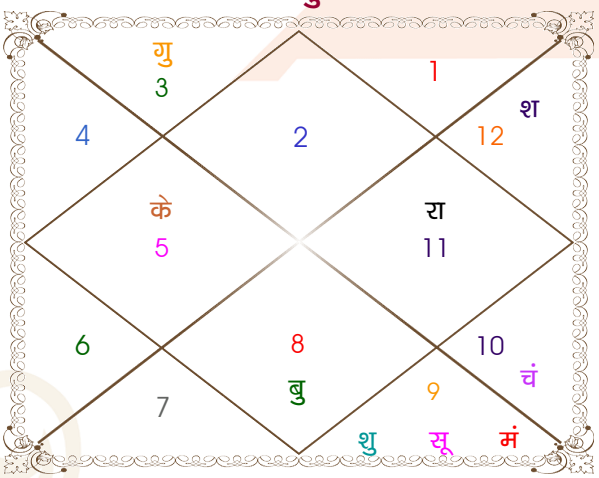

देह विचारः

होरा कुंडली

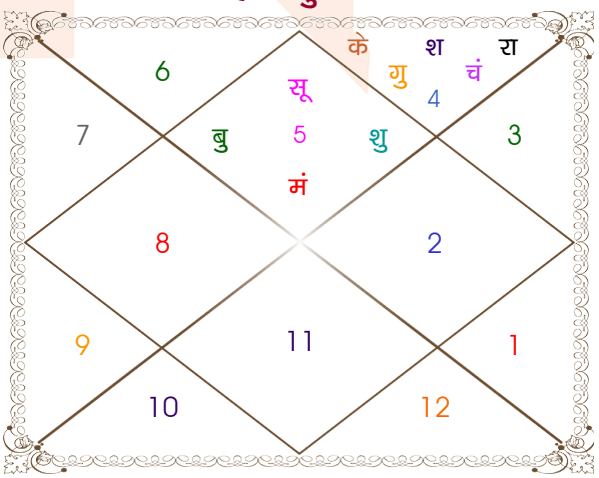

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

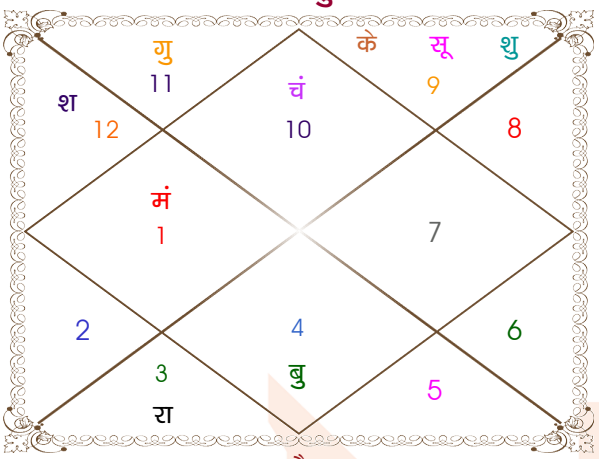

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

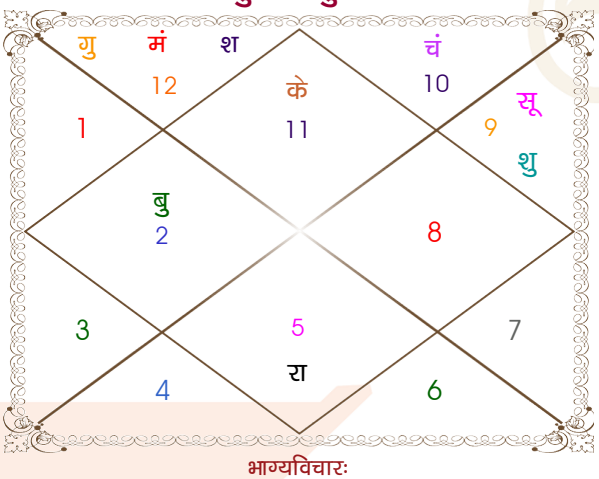

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

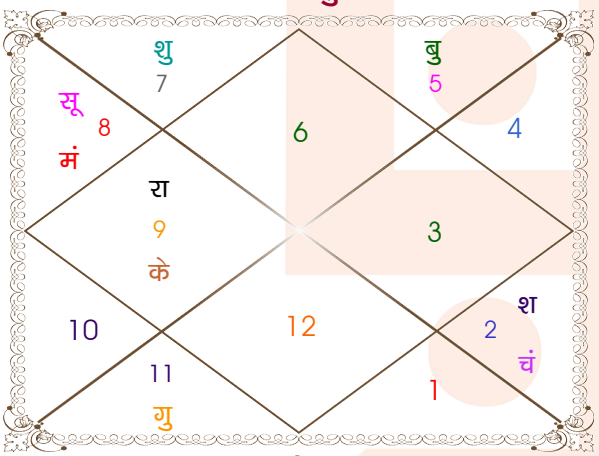

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

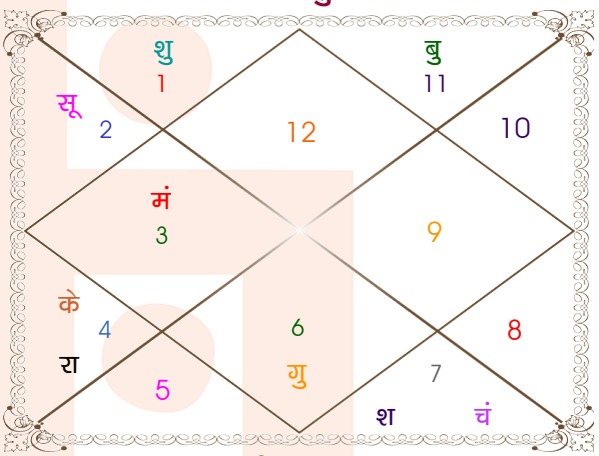

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

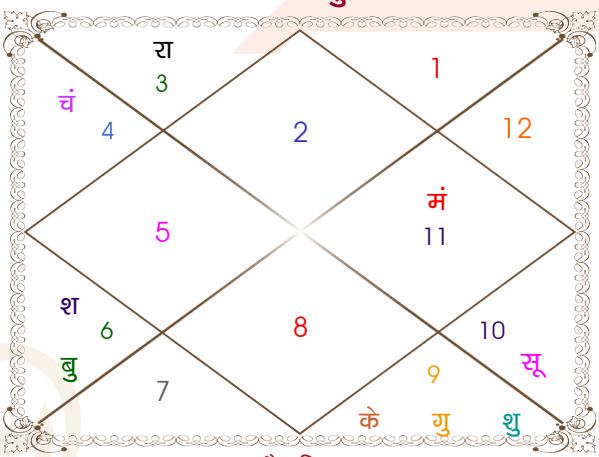

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

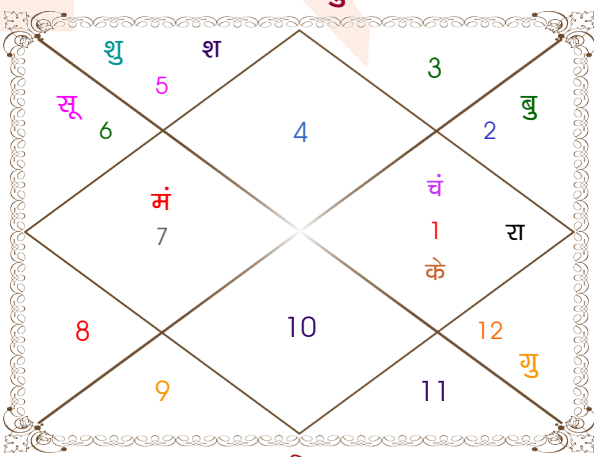

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

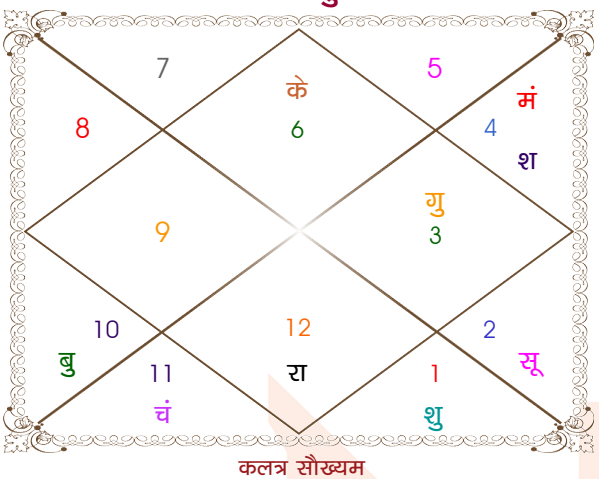

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

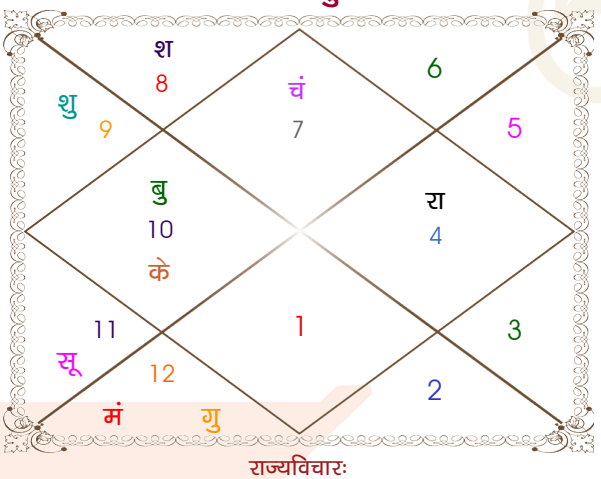

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

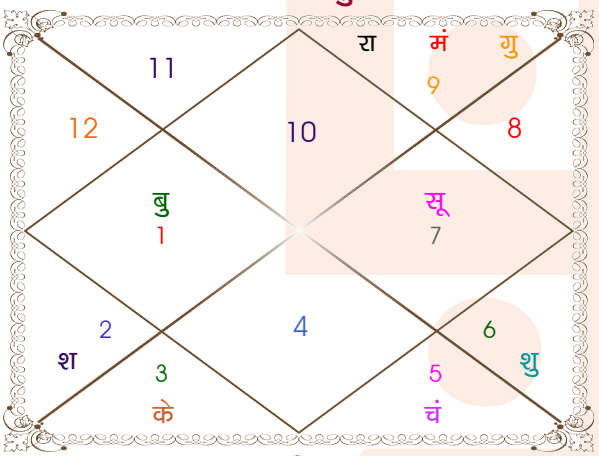

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

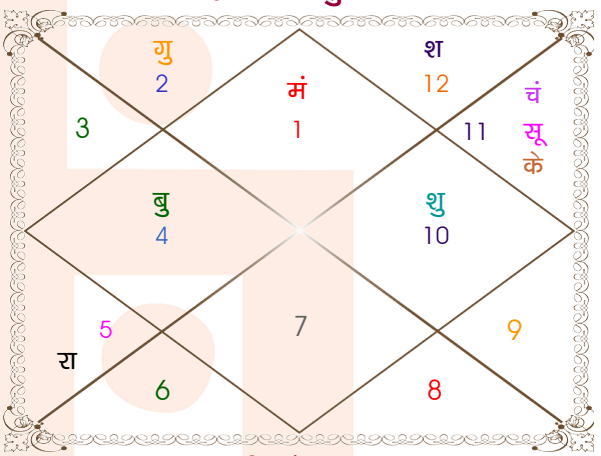

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

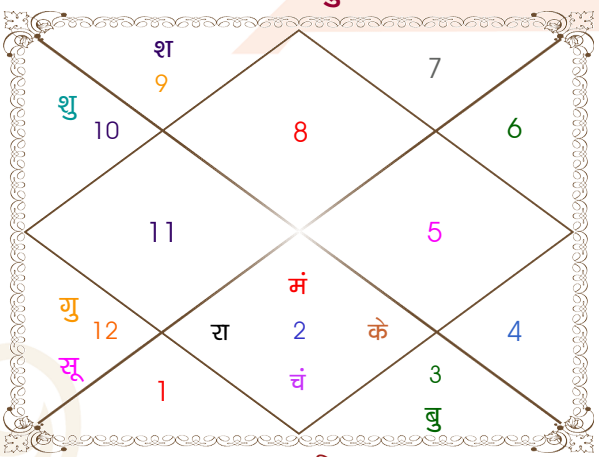

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

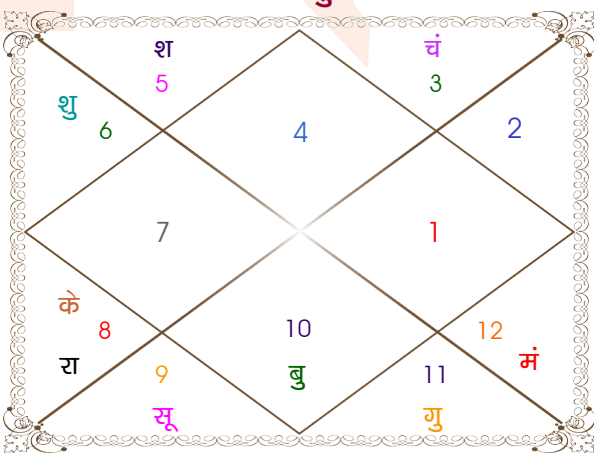

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

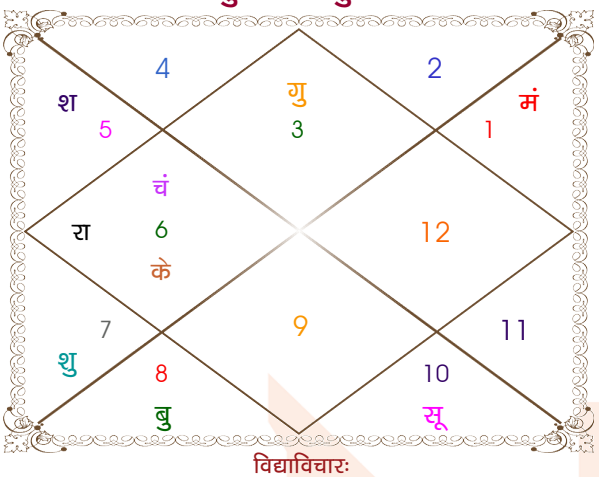

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

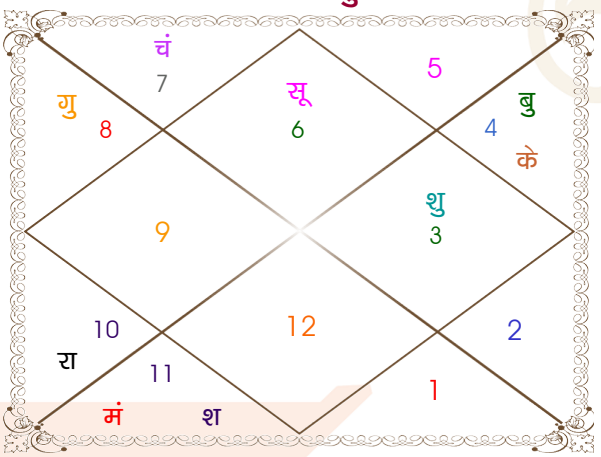

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

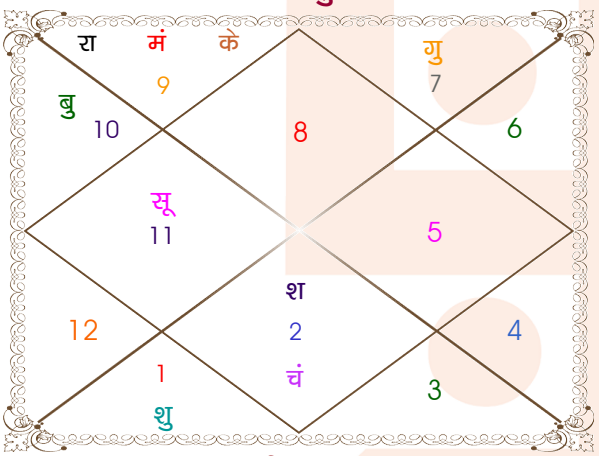

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

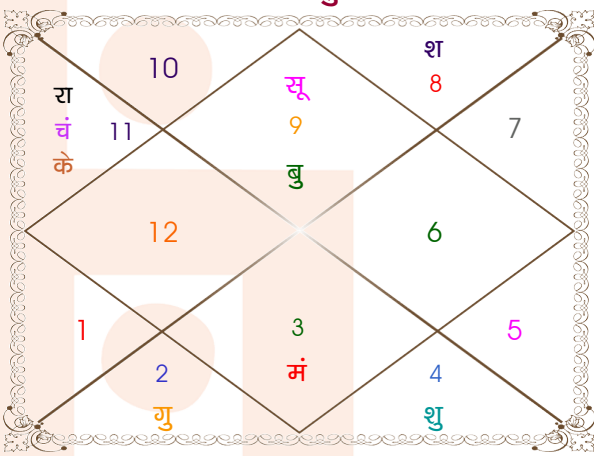

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

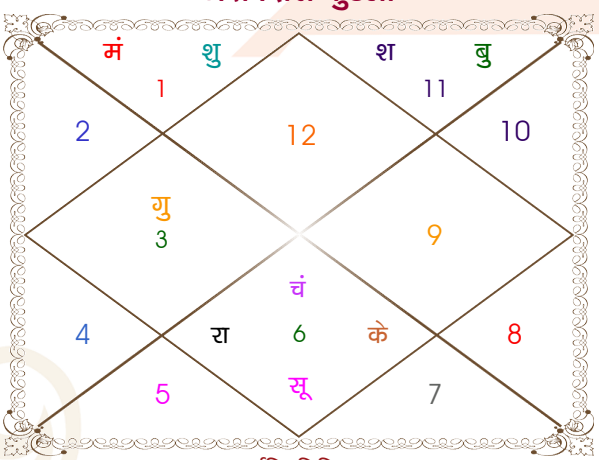

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

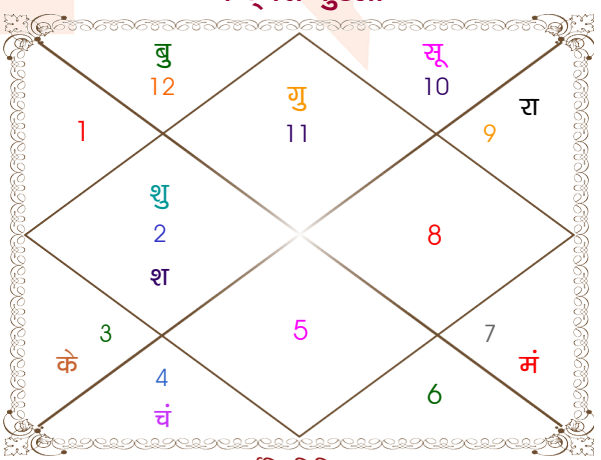

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	धनु	मक	धनु	वृश्चि	मिथु	धनु	मीन	कुंभ	सिंह
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मक	धनु	मक	मेष	कर्क	कुंभ	धनु	मीन	मिथु	धनु
चतुर्थांश	कुंभ	धनु	मक	मीन	वृष	मीन	धनु	मीन	सिंह	कुंभ
सप्तमांश	वृष	मक	कर्क	कुंभ	कन्या	धनु	धनु	कन्या	मिथु	धनु
नवमांश	कन्या	वृष	कुंभ	कर्क	मक	मिथु	मेष	कर्क	मीन	कन्या
दशमांश	तुला	कुंभ	तुला	मीन	मक	मीन	धनु	वृश्चि	कर्क	मक
द्वादशांश	मेष	कुंभ	कुंभ	मेष	कर्क	वृष	मक	मीन	सिंह	कुंभ
षोडशांश	वृश्चि	मीन	वृष	वृष	मिथु	मीन	मक	धनु	वृष	वृष
विंशांश	कर्क	धनु	मिथु	मीन	मक	कुंभ	कन्या	सिंह	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	मिथु	मक	कन्या	मेष	वृश्चि	मिथु	तुला	सिंह	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	कन्या	कन्या	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चि	मिथु	कुंभ	मक	कर्क
त्रिंशांश	वृश्चि	कुंभ	वृष	धनु	मक	तुला	मेष	वृष	धनु	धनु
खवेदांश	धनु	धनु	कुंभ	मिथु	धनु	वृष	कर्क	वृश्चि	कुंभ	कुंभ
अक्षवेदांश	मीन	कन्या	कन्या	मेष	कुंभ	मिथु	मेष	कुंभ	कन्या	कन्या
षष्ट्यंश	कुंभ	मक	कर्क	तुला	मीन	कुंभ	वृष	वृष	धनु	मिथु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
चन्द्र	2 किंसुक	3 व्यंजन	5 सिंहान	5 कन्दुक
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	0 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
गुरु	1 ---	2 किंसुक	4 गोपुर	5 कन्दुक
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	0 ---	0 ---	0 ---	2 भेदक
राहु	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
केतु	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	9.75	15.50	15.00	11.40	7.50	7.90	13.40	12.50	10.00
सप्तवर्ग	9.88	16.13	14.93	12.48	8.88	7.90	12.90	12.55	10.50
दशवर्ग	10.38	17.00	11.50	11.43	12.00	11.75	14.48	11.35	10.88
षोडशवर्ग	10.00	16.60	11.80	11.35	10.75	11.83	14.38	12.03	10.88

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	सम	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	अतिमित्र	---	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	सम	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	19	20	44	38	58	22	16
सप्तवर्गज बल	69	135	120	90	60	43	90
ओजयुग्मक बल	15	15	15	0	30	0	0
केन्द्र बल	30	15	30	60	30	30	30
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	148	185	209	188	178	95	136
कुल दिग्बल	38	13	39	3	50	23	29
नतोन्नत बल	37	23	23	60	37	37	23
पक्ष बल	51	102	51	9	9	9	51
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	0	57	0	59	58	0	32
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	88	226	104	128	239	46	166
कुल चेष्टाबल	0	0	3	18	54	2	30
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-10	16	-7	4	-23	-12	13
कुल षट्बल	324	492	365	367	532	197	383
रूप षट्बल	5.4	8.2	6.1	6.1	8.9	3.3	6.4
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.1	1.4	1.2	0.9	1.4	0.6	1.3
संबंधित पद	5	1	4	6	2	7	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	2.33	13.42	11.41	25.90	56.02	6.39	21.89
कष्ट फल	49.55	45.10	29.84	30.38	3.56	47.00	36.49

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	197	367	492	324	367	197	365	532	383	383	532	365
भावदिग्बल	30	50	50	0	20	10	60	40	10	30	10	40
भावदृष्टि बल	26	11	0	2	14	23	-3	40	64	71	59	-8
कुल भाव बल	253	427	542	327	401	230	423	612	456	484	601	398
रूप भाव बल	4.2	7.1	9.0	5.4	6.7	3.8	7.0	10.2	7.6	8.1	10.0	6.6
संबंधित पद	11	6	3	10	8	12	7	1	5	4	2	9

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

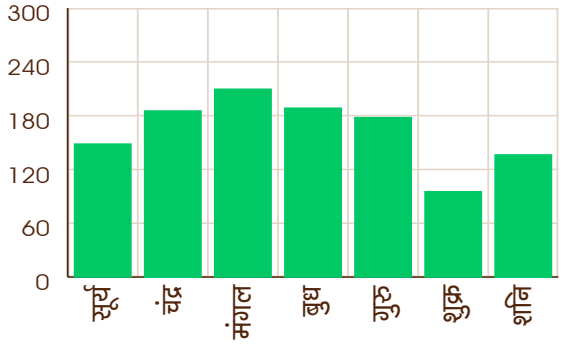

दिग्बल

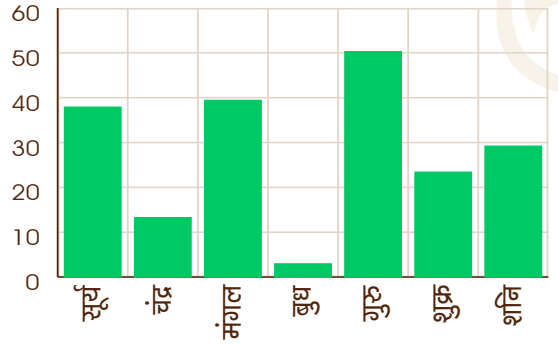

कालबल

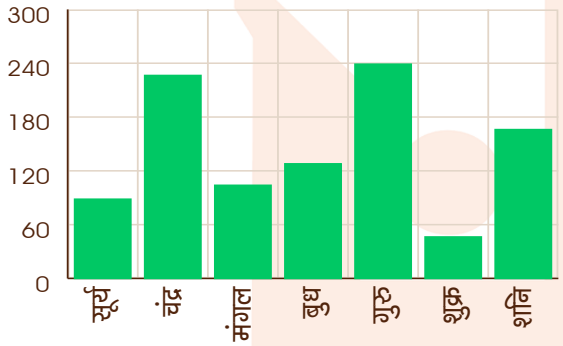

चेष्टाबल

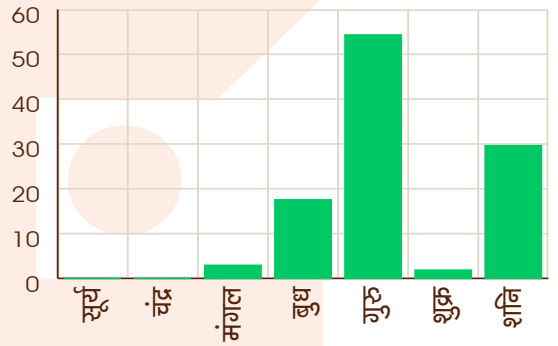

नैसर्गिक बल

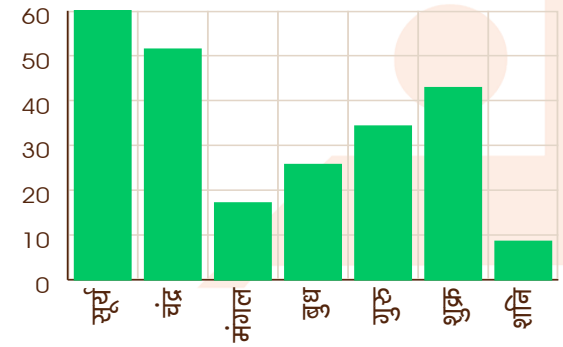

दृग्बल

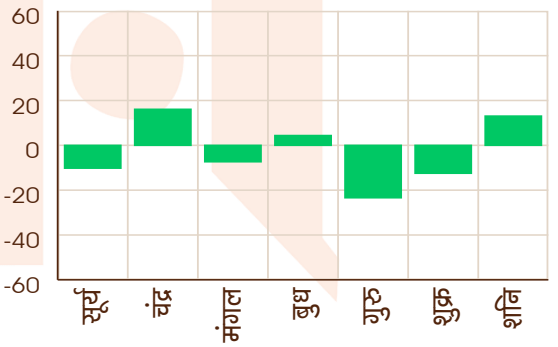

रूप षट्बल

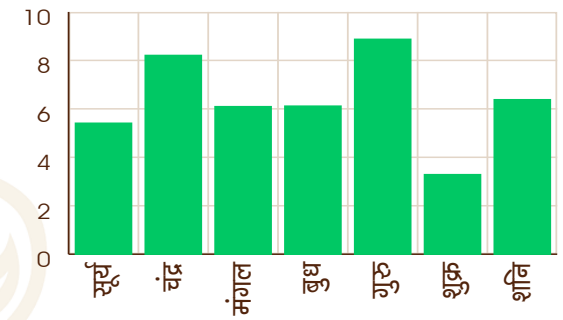

न्यूनतम षट्बल

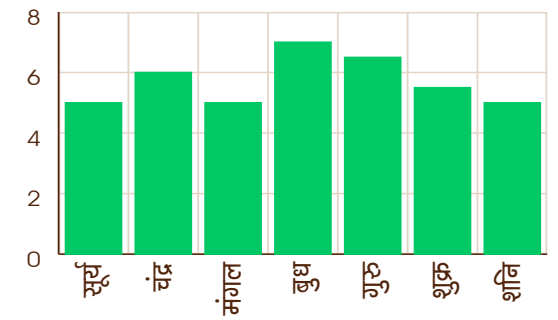

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

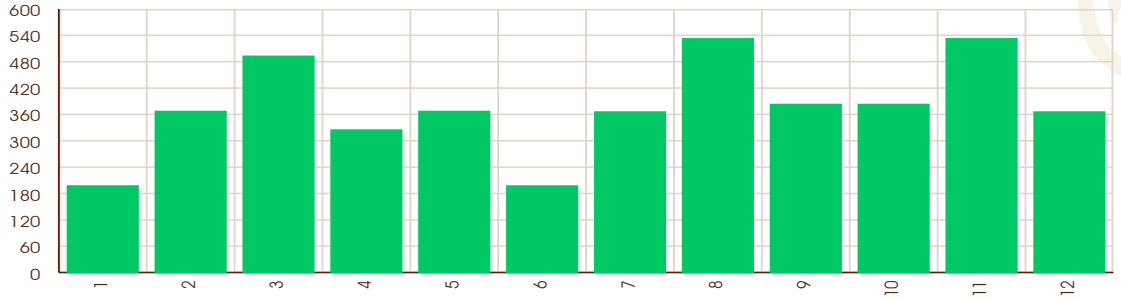

भावदिग्बल

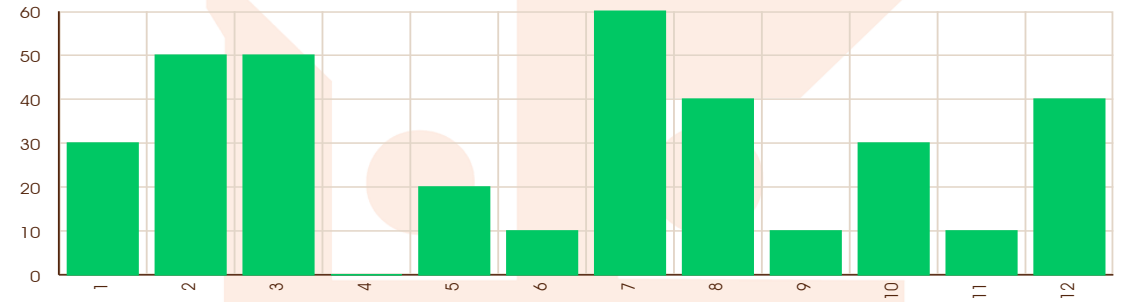

भावदृष्टि बल

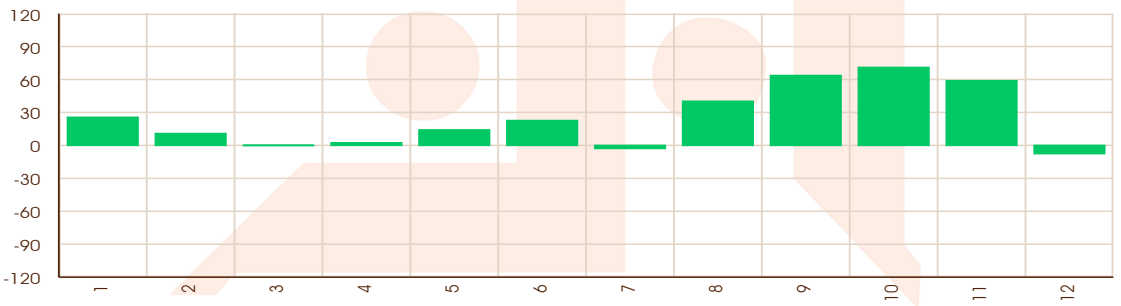

भाव बल

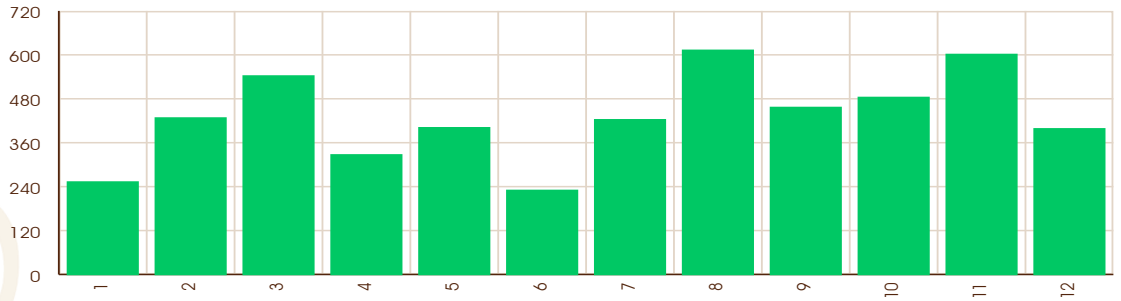

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

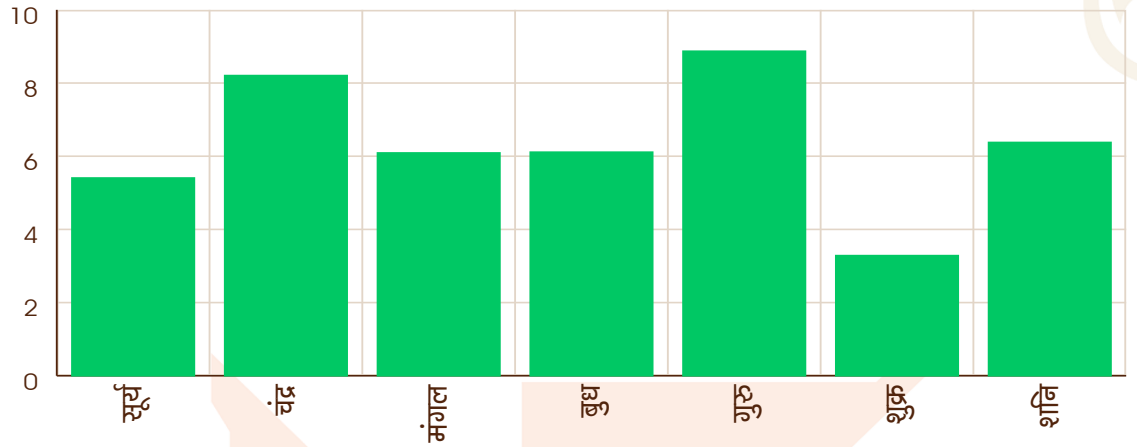

इष्ट - कष्ट फल

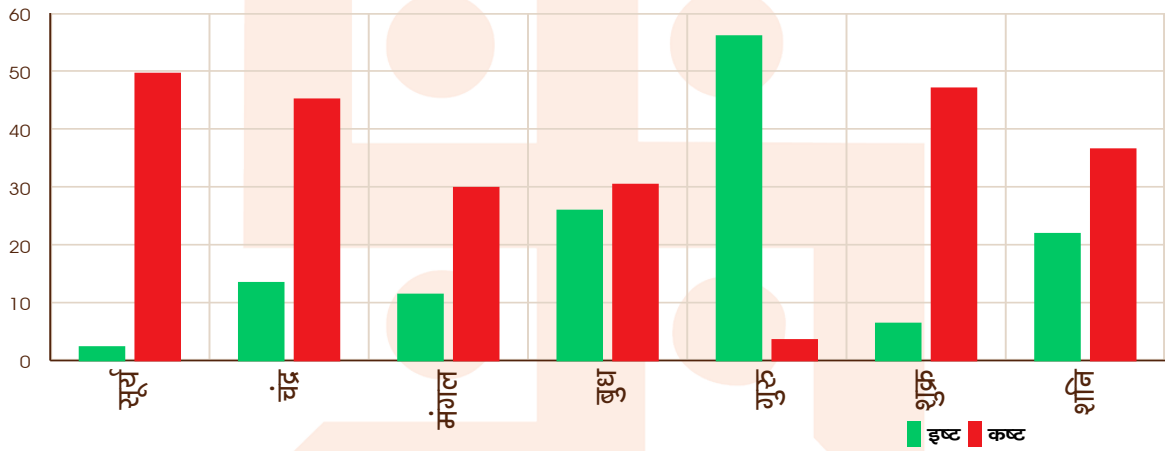

रूप भाव बल

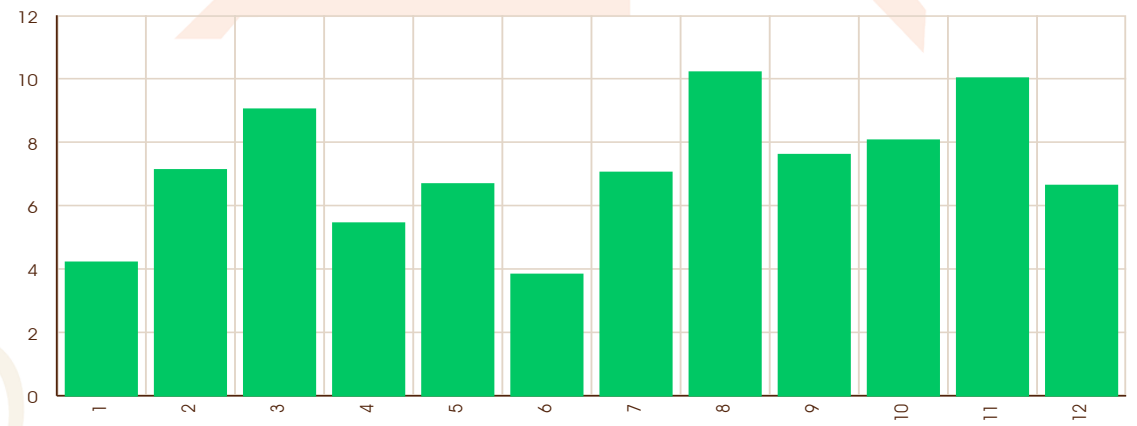

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	28:57:31	--	--	मृगशिरा	2	5
गुलिक	गु	मेष	28:29:17	--	--	कृतिका	1	3
काल	का	वृष	19:23:40	--	--	रोहिणी	3	4
मृत्यु	मृ	मक	15:09:49	--	--	श्रवण	2	22
यमघंटक	यम	मीन	07:14:30	--	--	उ०भाद्रपद	2	26
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कुंभ	10:01:47	--	--	शतभिषा	2	24
धूम	धू	मेष	19:58:28	--	--	भरणी	2	2
व्यतिपात	व्य	मीन	10:01:32	--	--	उ०भाद्रपद	3	26
परिवेश	परि	कन्या	10:01:32	--	--	हस्त	1	13
इन्द्रचाप	इ	तुला	19:58:28	--	--	स्वाति	4	15
उपकेतु	उप	वृश्चि	06:38:28	--	--	अनुराधा	1	17

प्राणपद	:	वृष	04:16:36	कारकाँश लग्न	:	मिथु	14:55:43
भाव लग्न	:	तुला	24:20:26	होरा लग्न	:	मीन	19:43:20
घटी लग्न	:	धनु	13:33:00	वर्णद लग्न	:	कुंभ	11:19:09

उपग्रह कुंडली

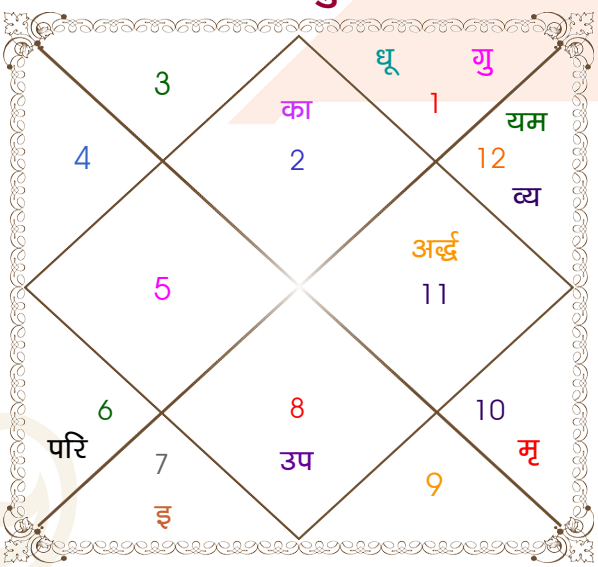

आरूढ़ कुंडली

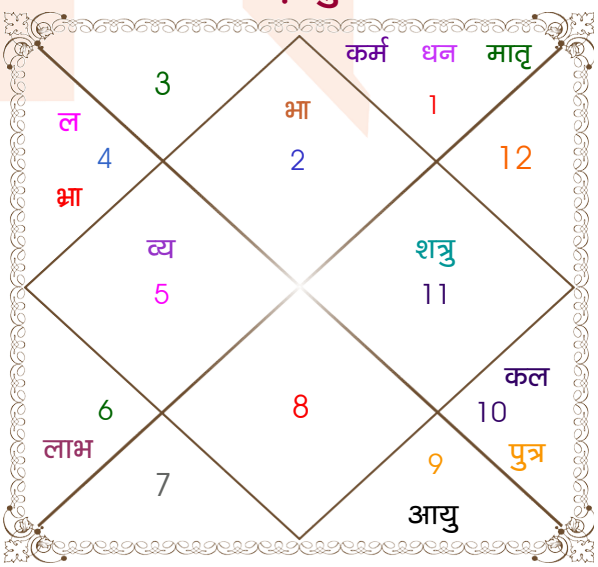

षन्नाडी चक्र

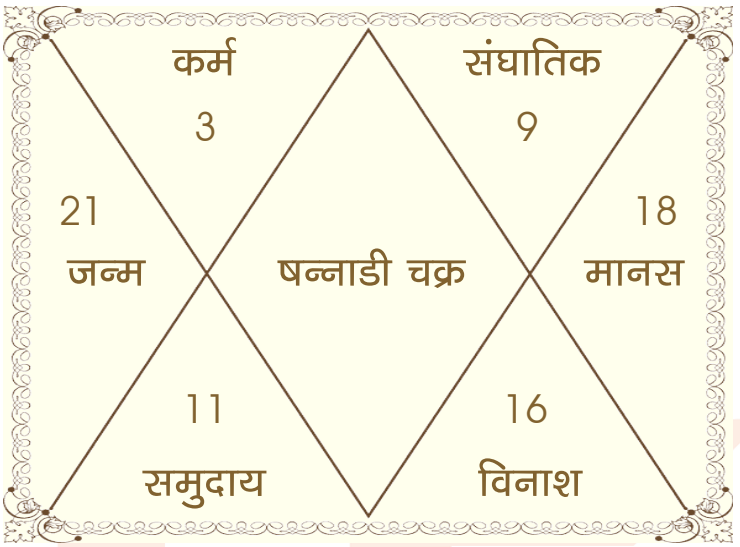

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	3	4	2	6	4	1	5	4	4	4	7	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	6
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
कुल	5	5	5	3	4	5	5	3	6	5	2	1	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
कुल	2	3	2	6	3	4	3	3	0	4	5	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
कुल	5	4	5	3	5	6	3	4	3	6	3	7	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
शुक्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	6
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
कुल	4	6	6	7	4	3	4	5	5	5	3	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
कुल	4	6	4	6	4	4	2	5	4	4	5	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	6
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	3	3	5	3	4	3	3	6	4	1	2	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	3	3	4	5	4	6	2	6	6	3	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	5	3	4	3	3	6	4	1	2	2	3	39
गुरु	3	4	4	6	6	7	4	3	4	5	5	5	56
मंगल	3	4	3	3	0	4	5	4	2	3	2	6	39
सूर्य	4	1	5	4	4	4	7	4	3	4	2	6	48
शुक्र	4	4	2	5	4	4	5	4	4	6	4	6	52
बुध	6	3	4	3	6	3	7	5	4	5	3	5	54
चंद्र	3	4	5	5	3	6	5	2	1	5	5	5	49
बिन्दु	26	25	26	30	26	31	39	26	19	30	23	36	337
रेखा	30	31	30	26	30	25	17	30	37	26	33	20	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	1	1	2	1	4	1	0	0	0	0	15
गुरु	0	0	0	3	3	3	0	0	1	1	1	2	14
मंगल	3	1	1	0	0	1	3	1	2	0	0	3	15
सूर्य	1	0	3	0	1	3	5	0	0	3	0	2	18
शुक्र	0	0	0	1	0	0	3	0	0	2	2	2	10
बुध	2	0	1	0	2	0	4	2	0	2	0	2	15
चंद्र	2	0	0	3	2	2	0	0	0	1	0	3	13
रेखा	10	4	6	8	10	10	19	4	3	9	3	14	100

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	3	1	1	2	0	1	1	0	0	0	0	10
गुरु	0	0	0	3	3	3	0	0	1	1	0	2	13
मंगल	2	1	1	0	0	0	2	1	2	0	0	3	12
सूर्य	1	0	3	0	1	0	5	0	0	3	0	2	15
शुक्र	0	0	0	1	0	0	3	0	0	2	0	2	8
बुध	0	0	1	0	2	0	4	2	0	2	0	2	13
चंद्र	2	0	0	3	2	2	0	0	0	1	0	3	13
रेखा	6	4	6	8	10	5	15	4	3	9	0	14	84

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	115	97	108	106	95	59	84
ग्रह पिंड	55	20	70	40	35	20	15
शोध्य पिंड	170	117	178	146	130	79	99

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

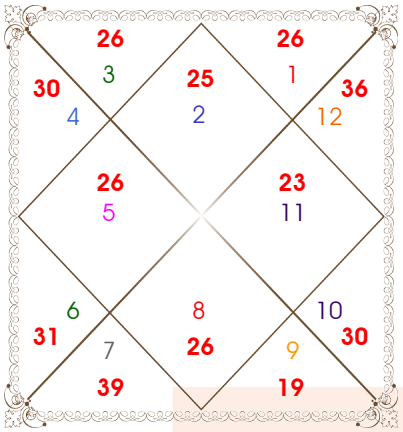

सूर्य का अष्टकवर्ग

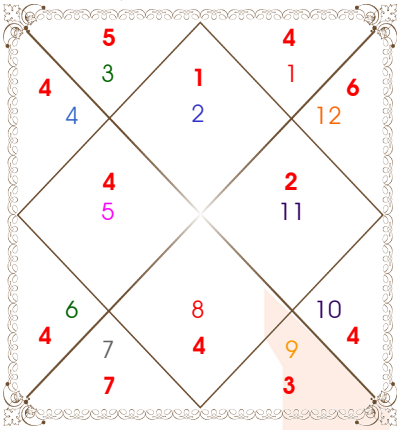

चंद्र का अष्टकवर्ग

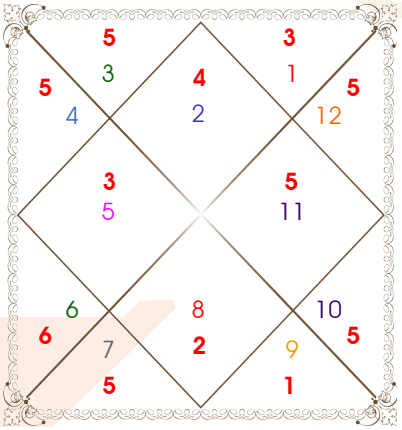

मंगल का अष्टकवर्ग

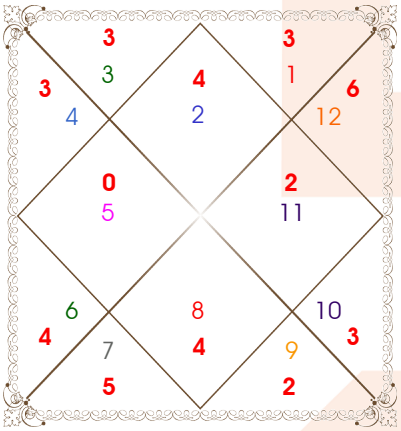

बुध का अष्टकवर्ग

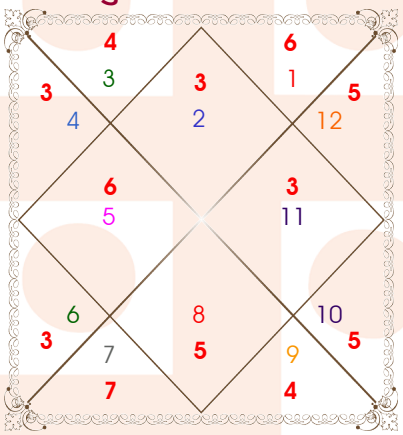

गुरू का अष्टकवर्ग

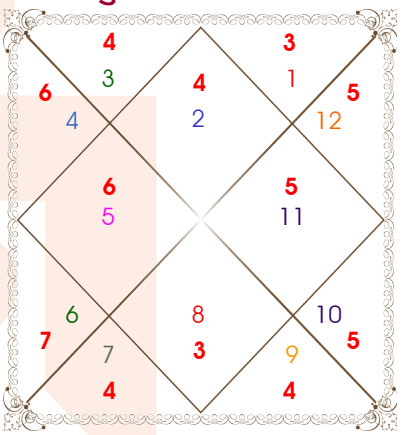

शुक्र का अष्टकवर्ग

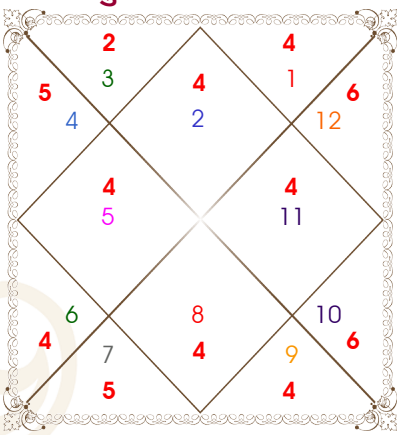

शनि का अष्टकवर्ग

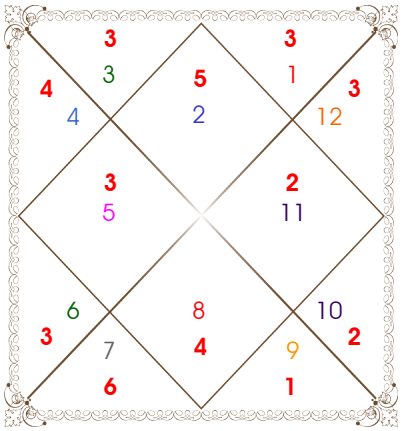

लग्न का अष्टकवर्ग

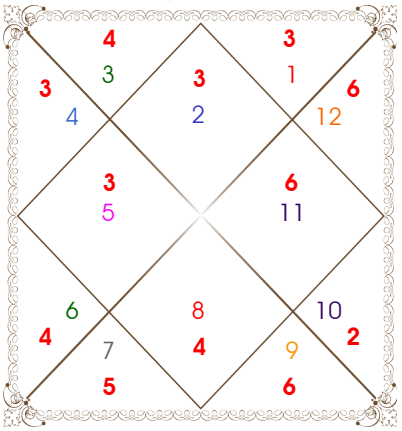

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

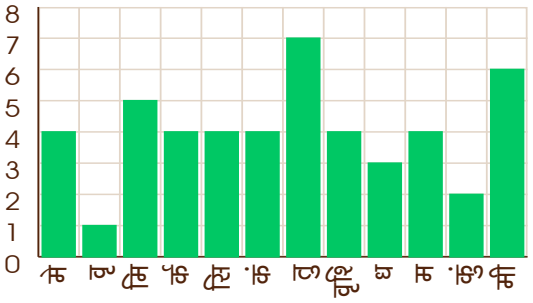

चन्द्र

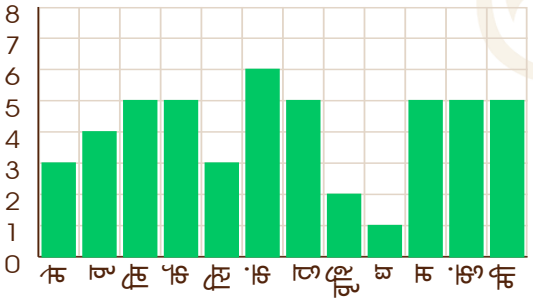

मंगल

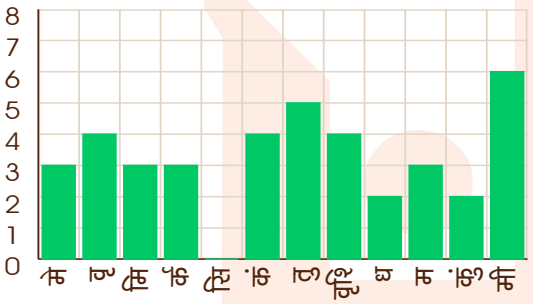

बुध

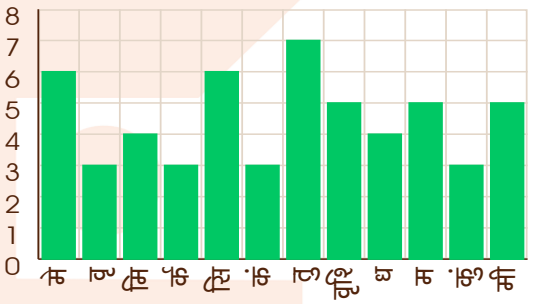

गुरु

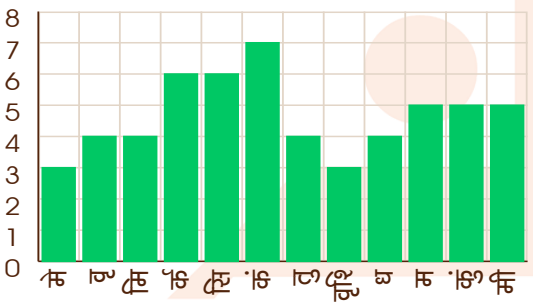

शुक्र

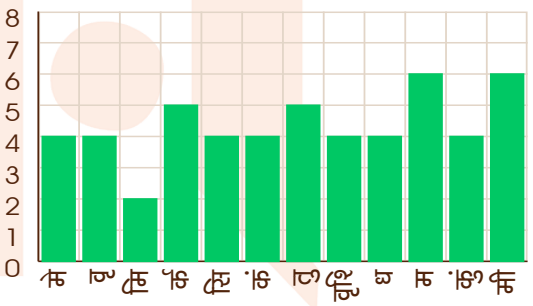

शनि

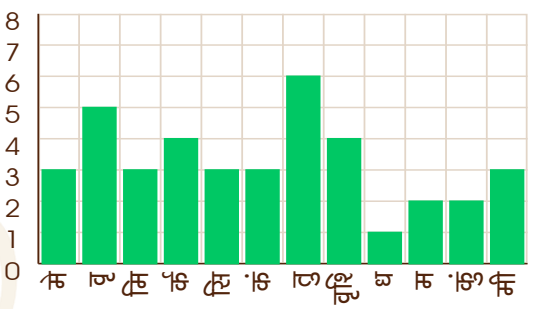

लग्न

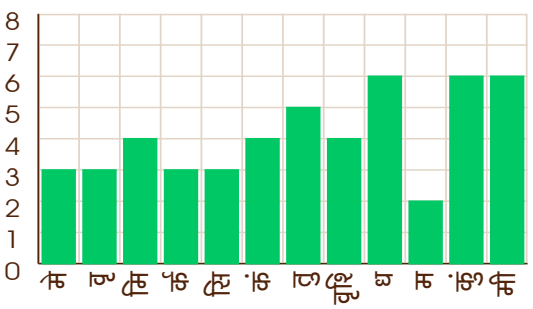

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

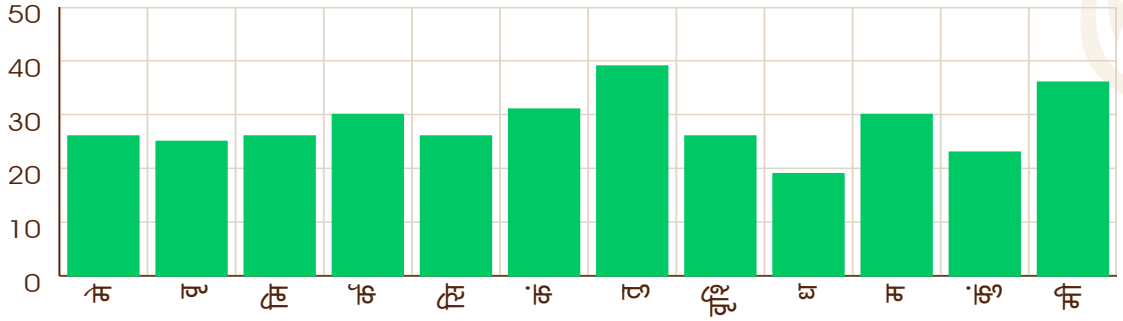

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

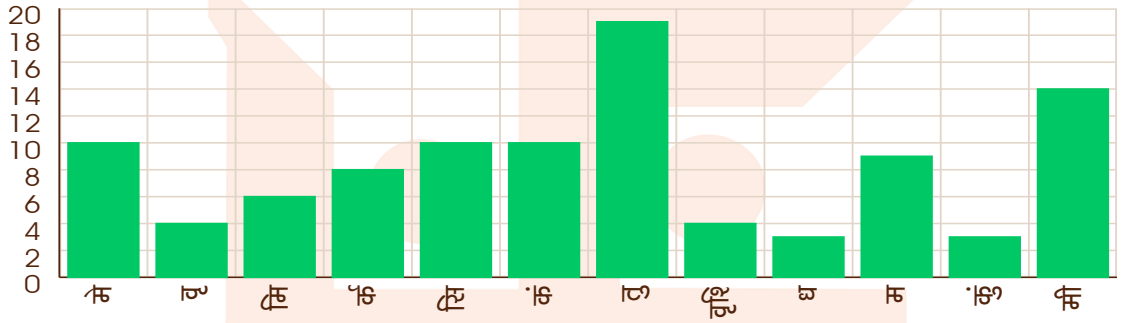

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

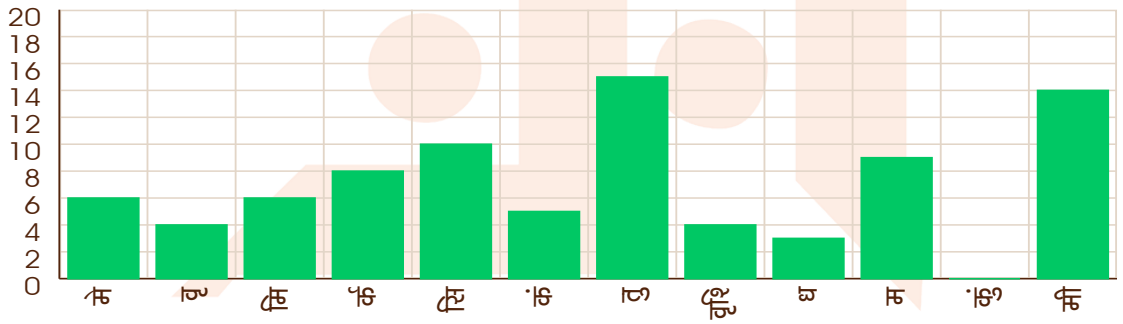

शोध्य पिंड

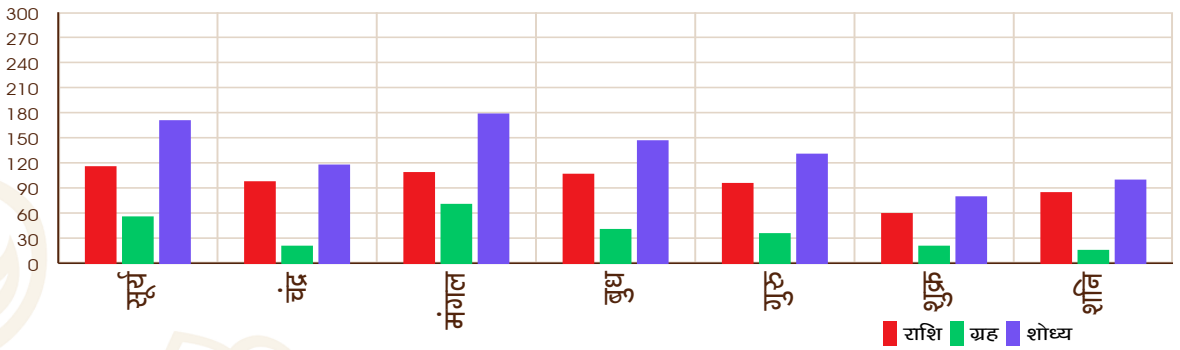

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 11 मास 8 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
22/12/2025		30/11/2028		01/12/2038		30/11/2045		01/12/2063	
30/11/2028		01/12/2038		30/11/2045		01/12/2063		01/12/2079	
	00/00/0000	चंद्र	30/09/2029	मंगल	29/04/2039	राहु	12/08/2048	गुरु	18/01/2066
	00/00/0000	मंगल	01/05/2030	राहु	16/05/2040	गुरु	06/01/2051	शनि	31/07/2068
	00/00/0000	राहु	31/10/2031	गुरु	22/04/2041	शनि	12/11/2053	बुध	06/11/2070
	00/00/0000	गुरु	01/03/2033	शनि	01/06/2042	बुध	31/05/2056	केतु	13/10/2071
	22/12/2025	शनि	01/10/2034	बुध	29/05/2043	केतु	19/06/2057	शुक्र	13/06/2074
शनि	18/09/2026	बुध	01/03/2036	केतु	25/10/2043	शुक्र	19/06/2060	सूर्य	01/04/2075
बुध	26/07/2027	केतु	30/09/2036	शुक्र	24/12/2044	सूर्य	13/05/2061	चंद्र	31/07/2076
केतु	01/12/2027	शुक्र	01/06/2038	सूर्य	01/05/2045	चंद्र	12/11/2062	मंगल	07/07/2077
शुक्र	30/11/2028	सूर्य	01/12/2038	चंद्र	30/11/2045	मंगल	01/12/2063	राहु	01/12/2079

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
01/12/2079		01/12/2098		02/12/2115		02/12/2122		02/12/2142	
01/12/2098		02/12/2115		02/12/2122		02/12/2142		00/00/0000	
शनि	04/12/2082	बुध	29/04/2101	केतु	29/04/2116	शुक्र	02/04/2126	सूर्य	21/03/2143
बुध	13/08/2085	केतु	26/04/2102	शुक्र	29/06/2117	सूर्य	02/04/2127	चंद्र	20/09/2143
केतु	22/09/2086	शुक्र	24/02/2105	सूर्य	04/11/2117	चंद्र	01/12/2128	मंगल	26/01/2144
शुक्र	21/11/2089	सूर्य	01/01/2106	चंद्र	05/06/2118	मंगल	31/01/2130	राहु	19/12/2144
सूर्य	03/11/2090	चंद्र	02/06/2107	मंगल	01/11/2118	राहु	31/01/2133	गुरु	08/10/2145
चंद्र	03/06/2092	मंगल	29/05/2108	राहु	20/11/2119	गुरु	02/10/2135	शनि	23/12/2145
मंगल	13/07/2093	राहु	17/12/2110	गुरु	26/10/2120	शनि	02/12/2138		00/00/0000
राहु	19/05/2096	गुरु	24/03/2113	शनि	04/12/2121	बुध	01/10/2141		00/00/0000
गुरु	01/12/2098	शनि	02/12/2115	बुध	02/12/2122	केतु	02/12/2142		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 2 वर्ष 11 मा 5 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
22/12/2025		18/09/2026		26/07/2027		01/12/2027		30/11/2028	
18/09/2026		26/07/2027		01/12/2027		30/11/2028		30/09/2029	
	22/12/2025	बुध	01/11/2026	केतु	02/08/2027	शुक्र	31/01/2028	चंद्र	25/12/2028
बुध	19/01/2026	केतु	20/11/2026	शुक्र	24/08/2027	सूर्य	18/02/2028	मंगल	12/01/2029
केतु	08/02/2026	शुक्र	10/01/2027	सूर्य	30/08/2027	चंद्र	19/03/2028	राहु	27/02/2029
शुक्र	07/04/2026	सूर्य	26/01/2027	चंद्र	10/09/2027	मंगल	10/04/2028	गुरु	08/04/2029
सूर्य	24/04/2026	चंद्र	21/02/2027	मंगल	17/09/2027	राहु	03/06/2028	शनि	27/05/2029
चंद्र	23/05/2026	मंगल	11/03/2027	राहु	06/10/2027	गुरु	22/07/2028	बुध	09/07/2029
मंगल	12/06/2026	राहु	26/04/2027	गुरु	23/10/2027	शनि	18/09/2028	केतु	26/07/2029
राहु	03/08/2026	गुरु	07/06/2027	शनि	13/11/2027	बुध	09/11/2028	शुक्र	15/09/2029
गुरु	18/09/2026	शनि	26/07/2027	बुध	01/12/2027	केतु	30/11/2028	सूर्य	30/09/2029

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
30/09/2029		01/05/2030		31/10/2031		01/03/2033		01/10/2034	
01/05/2030		31/10/2031		01/03/2033		01/10/2034		01/03/2036	
मंगल	13/10/2029	राहु	23/07/2030	गुरु	04/01/2032	शनि	01/06/2033	बुध	13/12/2034
राहु	14/11/2029	गुरु	04/10/2030	शनि	21/03/2032	बुध	22/08/2033	केतु	12/01/2035
गुरु	12/12/2029	शनि	29/12/2030	बुध	29/05/2032	केतु	25/09/2033	शुक्र	08/04/2035
शनि	15/01/2030	बुध	17/03/2031	केतु	27/06/2032	शुक्र	30/12/2033	सूर्य	04/05/2035
बुध	14/02/2030	केतु	18/04/2031	शुक्र	16/09/2032	सूर्य	28/01/2034	चंद्र	16/06/2035
केतु	27/02/2030	शुक्र	18/07/2031	सूर्य	10/10/2032	चंद्र	17/03/2034	मंगल	17/07/2035
शुक्र	03/04/2030	सूर्य	15/08/2031	चंद्र	20/11/2032	मंगल	20/04/2034	राहु	02/10/2035
सूर्य	14/04/2030	चंद्र	29/09/2031	मंगल	18/12/2032	राहु	16/07/2034	गुरु	10/12/2035
चंद्र	01/05/2030	मंगल	31/10/2031	राहु	01/03/2033	गुरु	01/10/2034	शनि	01/03/2036

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
01/03/2036		30/09/2036		01/06/2038		01/12/2038		29/04/2039	
30/09/2036		01/06/2038		01/12/2038		29/04/2039		16/05/2040	
केतु	14/03/2036	शुक्र	10/01/2037	सूर्य	10/06/2038	मंगल	09/12/2038	राहु	25/06/2039
शुक्र	18/04/2036	सूर्य	09/02/2037	चंद्र	25/06/2038	राहु	01/01/2039	गुरु	15/08/2039
सूर्य	29/04/2036	चंद्र	01/04/2037	मंगल	06/07/2038	गुरु	20/01/2039	शनि	15/10/2039
चंद्र	16/05/2036	मंगल	06/05/2037	राहु	02/08/2038	शनि	13/02/2039	बुध	08/12/2039
मंगल	29/05/2036	राहु	06/08/2037	गुरु	27/08/2038	बुध	06/03/2039	केतु	31/12/2039
राहु	30/06/2036	गुरु	26/10/2037	शनि	25/09/2038	केतु	15/03/2039	शुक्र	04/03/2040
गुरु	28/07/2036	शनि	30/01/2038	बुध	20/10/2038	शुक्र	09/04/2039	सूर्य	23/03/2040
शनि	31/08/2036	बुध	26/04/2038	केतु	31/10/2038	सूर्य	16/04/2039	चंद्र	24/04/2040
बुध	30/09/2036	केतु	01/06/2038	शुक्र	01/12/2038	चंद्र	29/04/2039	मंगल	16/05/2040

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
16/05/2040		22/04/2041		01/06/2042		29/05/2043		25/10/2043	
22/04/2041		01/06/2042		29/05/2043		25/10/2043		24/12/2044	
गुरु	01/07/2040	शनि	25/06/2041	बुध	22/07/2042	केतु	07/06/2043	शुक्र	04/01/2044
शनि	24/08/2040	बुध	22/08/2041	केतु	12/08/2042	शुक्र	02/07/2043	सूर्य	26/01/2044
बुध	11/10/2040	केतु	14/09/2041	शुक्र	12/10/2042	सूर्य	09/07/2043	चंद्र	01/03/2044
केतु	31/10/2040	शुक्र	21/11/2041	सूर्य	30/10/2042	चंद्र	22/07/2043	मंगल	26/03/2044
शुक्र	27/12/2040	सूर्य	11/12/2041	चंद्र	29/11/2042	मंगल	30/07/2043	राहु	29/05/2044
सूर्य	13/01/2041	चंद्र	14/01/2042	मंगल	20/12/2042	राहु	22/08/2043	गुरु	25/07/2044
चंद्र	10/02/2041	मंगल	06/02/2042	राहु	12/02/2043	गुरु	11/09/2043	शनि	30/09/2044
मंगल	02/03/2041	राहु	08/04/2042	गुरु	02/04/2043	शनि	04/10/2043	बुध	30/11/2044
राहु	22/04/2041	गुरु	01/06/2042	शनि	29/05/2043	बुध	25/10/2043	केतु	24/12/2044

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
24/12/2044		01/05/2045		30/11/2045		12/08/2048		06/01/2051	
01/05/2045		30/11/2045		12/08/2048		06/01/2051		12/11/2053	
सूर्य	31/12/2044	चंद्र	19/05/2045	राहु	27/04/2046	गुरु	07/12/2048	शनि	20/06/2051
चंद्र	10/01/2045	मंगल	31/05/2045	गुरु	06/09/2046	शनि	25/04/2049	बुध	14/11/2051
मंगल	18/01/2045	राहु	02/07/2045	शनि	09/02/2047	बुध	27/08/2049	केतु	14/01/2052
राहु	06/02/2045	गुरु	31/07/2045	बुध	29/06/2047	केतु	17/10/2049	शुक्र	06/07/2052
गुरु	23/02/2045	शनि	03/09/2045	केतु	25/08/2047	शुक्र	13/03/2050	सूर्य	27/08/2052
शनि	15/03/2045	बुध	03/10/2045	शुक्र	05/02/2048	सूर्य	25/04/2050	चंद्र	21/11/2052
बुध	02/04/2045	केतु	15/10/2045	सूर्य	26/03/2048	चंद्र	07/07/2050	मंगल	21/01/2053
केतु	10/04/2045	शुक्र	20/11/2045	चंद्र	16/06/2048	मंगल	28/08/2050	राहु	26/06/2053
शुक्र	01/05/2045	सूर्य	30/11/2045	मंगल	12/08/2048	राहु	06/01/2051	गुरु	12/11/2053

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
12/11/2053		31/05/2056		19/06/2057		19/06/2060		13/05/2061	
31/05/2056		19/06/2057		19/06/2060		13/05/2061		12/11/2062	
बुध	24/03/2054	केतु	23/06/2056	शुक्र	19/12/2057	सूर्य	05/07/2060	चंद्र	28/06/2061
केतु	17/05/2054	शुक्र	26/08/2056	सूर्य	11/02/2058	चंद्र	02/08/2060	मंगल	30/07/2061
शुक्र	20/10/2054	सूर्य	14/09/2056	चंद्र	14/05/2058	मंगल	21/08/2060	राहु	20/10/2061
सूर्य	05/12/2054	चंद्र	16/10/2056	मंगल	17/07/2058	राहु	09/10/2060	गुरु	01/01/2062
चंद्र	21/02/2055	मंगल	07/11/2056	राहु	28/12/2058	गुरु	22/11/2060	शनि	29/03/2062
मंगल	16/04/2055	राहु	04/01/2057	गुरु	23/05/2059	शनि	13/01/2061	बुध	15/06/2062
राहु	03/09/2055	गुरु	24/02/2057	शनि	13/11/2059	बुध	28/02/2061	केतु	17/07/2062
गुरु	05/01/2056	शनि	26/04/2057	बुध	16/04/2060	केतु	20/03/2061	शुक्र	16/10/2062
शनि	31/05/2056	बुध	19/06/2057	केतु	19/06/2060	शुक्र	13/05/2061	सूर्य	12/11/2062

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
12/11/2062		01/12/2063		18/01/2066		31/07/2068		06/11/2070	
01/12/2063		18/01/2066		31/07/2068		06/11/2070		13/10/2071	
मंगल	05/12/2062	गुरु	14/03/2064	शनि	13/06/2066	बुध	26/11/2068	केतु	26/11/2070
राहु	31/01/2063	शनि	15/07/2064	बुध	23/10/2066	केतु	13/01/2069	शुक्र	22/01/2071
गुरु	23/03/2063	बुध	02/11/2064	केतु	16/12/2066	शुक्र	31/05/2069	सूर्य	08/02/2071
शनि	23/05/2063	केतु	18/12/2064	शुक्र	19/05/2067	सूर्य	11/07/2069	चंद्र	08/03/2071
बुध	16/07/2063	शुक्र	27/04/2065	सूर्य	04/07/2067	चंद्र	18/09/2069	मंगल	28/03/2071
केतु	08/08/2063	सूर्य	05/06/2065	चंद्र	19/09/2067	मंगल	06/11/2069	राहु	18/05/2071
शुक्र	11/10/2063	चंद्र	09/08/2065	मंगल	12/11/2067	राहु	10/03/2070	गुरु	03/07/2071
सूर्य	30/10/2063	मंगल	23/09/2065	राहु	30/03/2068	गुरु	28/06/2070	शनि	26/08/2071
चंद्र	01/12/2063	राहु	18/01/2066	गुरु	31/07/2068	शनि	06/11/2070	बुध	13/10/2071

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
13/10/2071		13/06/2074		01/04/2075		31/07/2076		07/07/2077	
13/06/2074		01/04/2075		31/07/2076		07/07/2077		01/12/2079	
शुक्र	23/03/2072	सूर्य	28/06/2074	चंद्र	12/05/2075	मंगल	20/08/2076	राहु	16/11/2077
सूर्य	11/05/2072	चंद्र	22/07/2074	मंगल	09/06/2075	राहु	10/10/2076	गुरु	13/03/2078
चंद्र	31/07/2072	मंगल	08/08/2074	राहु	21/08/2075	गुरु	25/11/2076	शनि	29/07/2078
मंगल	26/09/2072	राहु	21/09/2074	गुरु	25/10/2075	शनि	18/01/2077	बुध	01/12/2078
राहु	19/02/2073	गुरु	30/10/2074	शनि	10/01/2076	बुध	07/03/2077	केतु	21/01/2079
गुरु	29/06/2073	शनि	15/12/2074	बुध	19/03/2076	केतु	27/03/2077	शुक्र	16/06/2079
शनि	30/11/2073	बुध	26/01/2075	केतु	17/04/2076	शुक्र	23/05/2077	सूर्य	30/07/2079
बुध	17/04/2074	केतु	12/02/2075	शुक्र	07/07/2076	सूर्य	09/06/2077	चंद्र	11/10/2079
केतु	13/06/2074	शुक्र	01/04/2075	सूर्य	31/07/2076	चंद्र	07/07/2077	मंगल	01/12/2079

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
01/12/2079		04/12/2082		13/08/2085		22/09/2086		21/11/2089	
04/12/2082		13/08/2085		22/09/2086		21/11/2089		03/11/2090	
शनि	23/05/2080	बुध	22/04/2083	केतु	05/09/2085	शुक्र	02/04/2087	सूर्य	09/12/2089
बुध	25/10/2080	केतु	18/06/2083	शुक्र	12/11/2085	सूर्य	30/05/2087	चंद्र	06/01/2090
केतु	29/12/2080	शुक्र	29/11/2083	सूर्य	02/12/2085	चंद्र	04/09/2087	मंगल	27/01/2090
शुक्र	30/06/2081	सूर्य	17/01/2084	चंद्र	05/01/2086	मंगल	10/11/2087	राहु	20/03/2090
सूर्य	24/08/2081	चंद्र	08/04/2084	मंगल	28/01/2086	राहु	01/05/2088	गुरु	05/05/2090
चंद्र	23/11/2081	मंगल	05/06/2084	राहु	30/03/2086	गुरु	03/10/2088	शनि	29/06/2090
मंगल	26/01/2082	राहु	30/10/2084	गुरु	23/05/2086	शनि	04/04/2089	बुध	17/08/2090
राहु	10/07/2082	गुरु	10/03/2085	शनि	26/07/2086	बुध	15/09/2089	केतु	06/09/2090
गुरु	04/12/2082	शनि	13/08/2085	बुध	22/09/2086	केतु	21/11/2089	शुक्र	03/11/2090

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र	
03/11/2090	
03/06/2092	
चंद्र	21/12/2090
मंगल	24/01/2091
राहु	21/04/2091
गुरु	07/07/2091
शनि	06/10/2091
बुध	27/12/2091
केतु	30/01/2092
शुक्र	06/05/2092
सूर्य	03/06/2092

शनि - मंगल	
03/06/2092	
13/07/2093	
मंगल	27/06/2092
राहु	27/08/2092
गुरु	20/10/2092
शनि	23/12/2092
बुध	18/02/2093
केतु	14/03/2093
शुक्र	20/05/2093
सूर्य	10/06/2093
चंद्र	13/07/2093

शनि - राहु	
13/07/2093	
19/05/2096	
राहु	16/12/2093
गुरु	04/05/2094
शनि	16/10/2094
बुध	13/03/2095
केतु	12/05/2095
शुक्र	02/11/2095
सूर्य	24/12/2095
चंद्र	20/03/2096
मंगल	19/05/2096

शनि - गुरु	
19/05/2096	
01/12/2098	
गुरु	20/09/2096
शनि	13/02/2097
बुध	24/06/2097
केतु	17/08/2097
शुक्र	18/01/2098
सूर्य	06/03/2098
चंद्र	22/05/2098
मंगल	15/07/2098
राहु	01/12/2098

बुध - बुध	
01/12/2098	
29/04/2101	
बुध	04/04/2099
केतु	25/05/2099
शुक्र	19/10/2099
सूर्य	02/12/2099
चंद्र	13/02/2100
मंगल	06/04/2100
राहु	16/08/2100
गुरु	11/12/2100
शनि	29/04/2101

बुध - केतु	
29/04/2101	
26/04/2102	
केतु	20/05/2101
शुक्र	20/07/2101
सूर्य	07/08/2101
चंद्र	06/09/2101
मंगल	27/09/2101
राहु	20/11/2101
गुरु	08/01/2102
शनि	06/03/2102
बुध	26/04/2102

बुध - शुक्र	
26/04/2102	
24/02/2105	
शुक्र	16/10/2102
सूर्य	07/12/2102
चंद्र	03/03/2103
मंगल	02/05/2103
राहु	04/10/2103
गुरु	19/02/2104
शनि	01/08/2104
बुध	26/12/2104
केतु	24/02/2105

बुध - सूर्य	
24/02/2105	
01/01/2106	
सूर्य	12/03/2105
चंद्र	07/04/2105
मंगल	25/04/2105
राहु	10/06/2105
गुरु	22/07/2105
शनि	09/09/2105
बुध	23/10/2105
केतु	10/11/2105
शुक्र	01/01/2106

बुध - चंद्र	
01/01/2106	
02/06/2107	
चंद्र	13/02/2106
मंगल	15/03/2106
राहु	01/06/2106
गुरु	09/08/2106
शनि	30/10/2106
बुध	11/01/2107
केतु	10/02/2107
शुक्र	07/05/2107
सूर्य	02/06/2107

बुध - मंगल	
02/06/2107	
29/05/2108	
मंगल	23/06/2107
राहु	17/08/2107
गुरु	04/10/2107
शनि	30/11/2107
बुध	21/01/2108
केतु	11/02/2108
शुक्र	11/04/2108
सूर्य	29/04/2108
चंद्र	29/05/2108

बुध - राहु	
29/05/2108	
17/12/2110	
राहु	16/10/2108
गुरु	17/02/2109
शनि	15/07/2109
बुध	24/11/2109
केतु	17/01/2110
शुक्र	21/06/2110
सूर्य	07/08/2110
चंद्र	23/10/2110
मंगल	17/12/2110

बुध - गुरु	
17/12/2110	
24/03/2113	
गुरु	06/04/2111
शनि	15/08/2111
बुध	11/12/2111
केतु	28/01/2112
शुक्र	14/06/2112
सूर्य	25/07/2112
चंद्र	02/10/2112
मंगल	19/11/2112
राहु	24/03/2113

बुध - शनि	
24/03/2113	
02/12/2115	
शनि	26/08/2113
बुध	13/01/2114
केतु	11/03/2114
शुक्र	22/08/2114
सूर्य	10/10/2114
चंद्र	31/12/2114
मंगल	26/02/2115
राहु	24/07/2115
गुरु	02/12/2115

केतु - केतु	
02/12/2115	
29/04/2116	
केतु	10/12/2115
शुक्र	04/01/2116
सूर्य	12/01/2116
चंद्र	24/01/2116
मंगल	02/02/2116
राहु	24/02/2116
गुरु	15/03/2116
शनि	08/04/2116
बुध	29/04/2116

केतु - शुक्र	
29/04/2116	
29/06/2117	
शुक्र	09/07/2116
सूर्य	30/07/2116
चंद्र	04/09/2116
मंगल	29/09/2116
राहु	02/12/2116
गुरु	27/01/2117
शनि	05/04/2117
बुध	04/06/2117
केतु	29/06/2117

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - सूर्य	
29/06/2117	
04/11/2117	
सूर्य	05/07/2117
चंद्र	16/07/2117
मंगल	24/07/2117
राहु	12/08/2117
गुरु	29/08/2117
शनि	18/09/2117
बुध	06/10/2117
केतु	14/10/2117
शुक्र	04/11/2117

केतु - चंद्र	
04/11/2117	
05/06/2118	
चंद्र	22/11/2117
मंगल	04/12/2117
राहु	05/01/2118
गुरु	02/02/2118
शनि	08/03/2118
बुध	07/04/2118
केतु	20/04/2118
शुक्र	25/05/2118
सूर्य	05/06/2118

केतु - मंगल	
05/06/2118	
01/11/2118	
मंगल	14/06/2118
राहु	06/07/2118
गुरु	26/07/2118
शनि	19/08/2118
बुध	09/09/2118
केतु	17/09/2118
शुक्र	12/10/2118
सूर्य	20/10/2118
चंद्र	01/11/2118

केतु - राहु	
01/11/2118	
20/11/2119	
राहु	29/12/2118
गुरु	18/02/2119
शनि	19/04/2119
बुध	13/06/2119
केतु	05/07/2119
शुक्र	07/09/2119
सूर्य	26/09/2119
चंद्र	28/10/2119
मंगल	20/11/2119

केतु - गुरु	
20/11/2119	
26/10/2120	
गुरु	04/01/2120
शनि	27/02/2120
बुध	15/04/2120
केतु	05/05/2120
शुक्र	01/07/2120
सूर्य	18/07/2120
चंद्र	15/08/2120
मंगल	04/09/2120
राहु	26/10/2120

केतु - शनि	
26/10/2120	
04/12/2121	
शनि	29/12/2120
बुध	24/02/2121
केतु	20/03/2121
शुक्र	26/05/2121
सूर्य	15/06/2121
चंद्र	19/07/2121
मंगल	12/08/2121
राहु	11/10/2121
गुरु	04/12/2121

केतु - बुध	
04/12/2121	
02/12/2122	
बुध	25/01/2122
केतु	15/02/2122
शुक्र	16/04/2122
सूर्य	04/05/2122
चंद्र	03/06/2122
मंगल	25/06/2122
राहु	18/08/2122
गुरु	05/10/2122
शनि	02/12/2122

शुक्र - शुक्र	
02/12/2122	
02/04/2126	
शुक्र	22/06/2123
सूर्य	22/08/2123
चंद्र	02/12/2123
मंगल	11/02/2124
राहु	11/08/2124
गुरु	21/01/2125
शनि	02/08/2125
बुध	21/01/2126
केतु	02/04/2126

शुक्र - सूर्य	
02/04/2126	
02/04/2127	
सूर्य	20/04/2126
चंद्र	21/05/2126
मंगल	11/06/2126
राहु	05/08/2126
गुरु	23/09/2126
शनि	19/11/2126
बुध	10/01/2127
केतु	31/01/2127
शुक्र	02/04/2127

शुक्र - चंद्र	
02/04/2127	
01/12/2128	
चंद्र	23/05/2127
मंगल	28/06/2127
राहु	27/09/2127
गुरु	17/12/2127
शनि	22/03/2128
बुध	17/06/2128
केतु	22/07/2128
शुक्र	01/11/2128
सूर्य	01/12/2128

शुक्र - मंगल	
01/12/2128	
31/01/2130	
मंगल	26/12/2128
राहु	28/02/2129
गुरु	26/04/2129
शनि	02/07/2129
बुध	31/08/2129
केतु	25/09/2129
शुक्र	05/12/2129
सूर्य	27/12/2129
चंद्र	31/01/2130

शुक्र - राहु	
31/01/2130	
31/01/2133	
राहु	15/07/2130
गुरु	08/12/2130
शनि	30/05/2131
बुध	01/11/2131
केतु	04/01/2132
शुक्र	05/07/2132
सूर्य	29/08/2132
चंद्र	28/11/2132
मंगल	31/01/2133

शुक्र - गुरु	
31/01/2133	
02/10/2135	
गुरु	10/06/2133
शनि	11/11/2133
बुध	29/03/2134
केतु	25/05/2134
शुक्र	03/11/2134
सूर्य	22/12/2134
चंद्र	13/03/2135
मंगल	09/05/2135
राहु	02/10/2135

शुक्र - शनि	
02/10/2135	
02/12/2138	
शनि	02/04/2136
बुध	13/09/2136
केतु	19/11/2136
शुक्र	31/05/2137
सूर्य	28/07/2137
चंद्र	01/11/2137
मंगल	08/01/2138
राहु	30/06/2138
गुरु	02/12/2138

शुक्र - बुध	
02/12/2138	
01/10/2141	
बुध	27/04/2139
केतु	27/06/2139
शुक्र	16/12/2139
सूर्य	06/02/2140
चंद्र	02/05/2140
मंगल	01/07/2140
राहु	04/12/2140
गुरु	21/04/2141
शनि	01/10/2141

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - शनि - बुध		सूर्य - शनि - केतु		सूर्य - शनि - शुक्र		सूर्य - शनि - सूर्य	
22/12/2025 16:52		19/01/2026 02:25		08/02/2026 08:12		07/04/2026 04:09	
19/01/2026 02:25		08/02/2026 08:12		07/04/2026 04:09		24/04/2026 12:32	
	00/00/0000 00:00	केतु	20/01/2026 06:45	शुक्र	17/02/2026 23:31	सूर्य	08/04/2026 00:58
	00/00/0000 00:00	शुक्र	23/01/2026 15:43	सूर्य	20/02/2026 20:55	चंद्र	09/04/2026 11:40
	00/00/0000 00:00	सूर्य	24/01/2026 16:00	चंद्र	25/02/2026 16:35	मंगल	10/04/2026 11:57
	22/12/2025 16:52	चंद्र	26/01/2026 08:29	मंगल	01/03/2026 01:33	राहु	13/04/2026 02:25
चंद्र	25/12/2025 12:32	मंगल	27/01/2026 12:50	राहु	09/03/2026 17:44	गुरु	15/04/2026 09:56
मंगल	28/12/2025 09:21	राहु	30/01/2026 13:42	गुरु	17/03/2026 10:48	शनि	18/04/2026 03:52
राहु	04/01/2026 18:19	गुरु	02/02/2026 06:28	शनि	26/03/2026 14:34	बुध	20/04/2026 14:51
गुरु	11/01/2026 07:37	शनि	05/02/2026 11:23	बुध	03/04/2026 19:11	केतु	21/04/2026 15:08
शनि	19/01/2026 02:25	बुध	08/02/2026 08:12	केतु	07/04/2026 04:09	शुक्र	24/04/2026 12:32

सूर्य - शनि - चंद्र		सूर्य - शनि - मंगल		सूर्य - शनि - राहु		सूर्य - शनि - गुरु	
24/04/2026 12:32		23/05/2026 10:31		12/06/2026 16:17		03/08/2026 17:27	
23/05/2026 10:31		12/06/2026 16:17		03/08/2026 17:27		18/09/2026 23:48	
चंद्र	26/04/2026 22:22	मंगल	24/05/2026 14:51	राहु	20/06/2026 11:40	गुरु	09/08/2026 21:30
मंगल	28/04/2026 14:51	राहु	27/05/2026 15:43	गुरु	27/06/2026 10:13	शनि	17/08/2026 05:18
राहु	02/05/2026 22:57	गुरु	30/05/2026 08:29	शनि	05/07/2026 16:00	बुध	23/08/2026 18:36
गुरु	06/05/2026 19:28	शनि	02/06/2026 13:24	बुध	13/07/2026 00:58	केतु	26/08/2026 11:22
शनि	11/05/2026 09:21	बुध	05/06/2026 10:13	केतु	16/07/2026 01:50	शुक्र	03/09/2026 04:26
बुध	15/05/2026 11:40	केतु	06/06/2026 14:33	शुक्र	24/07/2026 18:01	सूर्य	05/09/2026 11:57
केतु	17/05/2026 04:09	शुक्र	09/06/2026 23:31	सूर्य	27/07/2026 08:29	चंद्र	09/09/2026 08:29
शुक्र	21/05/2026 23:49	सूर्य	10/06/2026 23:49	चंद्र	31/07/2026 16:35	मंगल	12/09/2026 01:15
सूर्य	23/05/2026 10:31	चंद्र	12/06/2026 16:17	मंगल	03/08/2026 17:27	राहु	18/09/2026 23:48

सूर्य - बुध - बुध		सूर्य - बुध - केतु		सूर्य - बुध - शुक्र		सूर्य - बुध - सूर्य	
18/09/2026 23:48		01/11/2026 23:23		20/11/2026 02:02		10/01/2027 19:53	
01/11/2026 23:23		20/11/2026 02:02		10/01/2027 19:53		26/01/2027 08:26	
बुध	25/09/2026 05:21	केतु	03/11/2026 00:44	शुक्र	28/11/2026 17:00	सूर्य	11/01/2027 14:30
केतु	27/09/2026 18:55	शुक्र	06/11/2026 01:10	सूर्य	01/12/2026 07:06	चंद्र	12/01/2027 21:33
शुक्र	05/10/2026 02:51	सूर्य	06/11/2026 22:54	चंद्र	05/12/2026 14:35	मंगल	13/01/2027 19:17
सूर्य	07/10/2026 07:38	चंद्र	08/11/2026 11:08	मंगल	08/12/2026 15:01	राहु	16/01/2027 03:10
चंद्र	10/10/2026 23:36	मंगल	09/11/2026 12:29	राहु	16/12/2026 09:18	गुरु	18/01/2027 04:50
मंगल	13/10/2026 13:10	राहु	12/11/2026 05:41	गुरु	23/12/2026 06:53	शनि	20/01/2027 15:50
राहु	20/10/2026 03:30	गुरु	14/11/2026 15:38	शनि	31/12/2026 11:30	बुध	22/01/2027 20:36
गुरु	26/10/2026 00:15	शनि	17/11/2026 12:27	बुध	07/01/2027 19:26	केतु	23/01/2027 18:20
शनि	01/11/2026 23:23	बुध	20/11/2026 02:02	केतु	10/01/2027 19:53	शुक्र	26/01/2027 08:26

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - बुध - चंद्र	
26/01/2027 08:26	
21/02/2027 05:21	
चंद्र	28/01/2027 12:10
मंगल	30/01/2027 00:24
राहु	02/02/2027 21:32
गुरु	06/02/2027 08:19
शनि	10/02/2027 10:38
बुध	14/02/2027 02:36
केतु	15/02/2027 14:49
शुक्र	19/02/2027 22:19
सूर्य	21/02/2027 05:21

सूर्य - बुध - मंगल	
21/02/2027 05:21	
11/03/2027 08:00	
मंगल	22/02/2027 06:43
राहु	24/02/2027 23:54
गुरु	27/02/2027 09:52
शनि	02/03/2027 06:41
बुध	04/03/2027 20:15
केतु	05/03/2027 21:37
शुक्र	08/03/2027 22:03
सूर्य	09/03/2027 19:47
चंद्र	11/03/2027 08:00

सूर्य - बुध - राहु	
11/03/2027 08:00	
26/04/2027 21:40	
राहु	18/03/2027 07:39
गुरु	24/03/2027 12:41
शनि	31/03/2027 21:38
बुध	07/04/2027 11:58
केतु	10/04/2027 05:10
शुक्र	17/04/2027 23:27
सूर्य	20/04/2027 07:20
चंद्र	24/04/2027 04:28
मंगल	26/04/2027 21:40

सूर्य - बुध - गुरु	
26/04/2027 21:40	
07/06/2027 07:09	
गुरु	02/05/2027 10:08
शनि	08/05/2027 23:26
बुध	14/05/2027 20:11
केतु	17/05/2027 06:08
शुक्र	24/05/2027 03:43
सूर्य	26/05/2027 05:23
चंद्र	29/05/2027 16:10
मंगल	01/06/2027 02:08
राहु	07/06/2027 07:09

सूर्य - बुध - शनि	
07/06/2027 07:09	
26/07/2027 10:54	
शनि	15/06/2027 01:57
बुध	22/06/2027 01:05
केतु	24/06/2027 21:54
शुक्र	03/07/2027 02:31
सूर्य	05/07/2027 13:31
चंद्र	09/07/2027 15:49
मंगल	12/07/2027 12:38
राहु	19/07/2027 21:36
गुरु	26/07/2027 10:54

सूर्य - केतु - केतु	
26/07/2027 10:54	
02/08/2027 21:53	
केतु	26/07/2027 21:21
शुक्र	28/07/2027 03:10
सूर्य	28/07/2027 12:07
चंद्र	29/07/2027 03:02
मंगल	29/07/2027 13:29
राहु	30/07/2027 16:19
गुरु	31/07/2027 16:11
शनि	01/08/2027 20:31
बुध	02/08/2027 21:53

सूर्य - केतु - शुक्र	
02/08/2027 21:53	
24/08/2027 05:14	
शुक्र	06/08/2027 11:06
सूर्य	07/08/2027 12:40
चंद्र	09/08/2027 07:17
मंगल	10/08/2027 13:07
राहु	13/08/2027 17:49
गुरु	16/08/2027 14:00
शनि	19/08/2027 22:58
बुध	22/08/2027 23:24
केतु	24/08/2027 05:14

सूर्य - केतु - सूर्य	
24/08/2027 05:14	
30/08/2027 14:38	
सूर्य	24/08/2027 12:54
चंद्र	25/08/2027 01:41
मंगल	25/08/2027 10:38
राहु	26/08/2027 09:39
गुरु	27/08/2027 06:06
शनि	28/08/2027 06:23
बुध	29/08/2027 04:07
केतु	29/08/2027 13:04
शुक्र	30/08/2027 14:38

सूर्य - केतु - चंद्र	
30/08/2027 14:38	
10/09/2027 06:19	
चंद्र	31/08/2027 11:56
मंगल	01/09/2027 02:51
राहु	02/09/2027 17:12
गुरु	04/09/2027 03:18
शनि	05/09/2027 19:47
बुध	07/09/2027 08:00
केतु	07/09/2027 22:55
शुक्र	09/09/2027 17:31
सूर्य	10/09/2027 06:19

सूर्य - केतु - मंगल	
10/09/2027 06:19	
17/09/2027 17:17	
मंगल	10/09/2027 16:45
राहु	11/09/2027 19:36
गुरु	12/09/2027 19:27
शनि	13/09/2027 23:48
बुध	15/09/2027 01:09
केतु	15/09/2027 11:35
शुक्र	16/09/2027 17:25
सूर्य	17/09/2027 02:22
चंद्र	17/09/2027 17:17

सूर्य - केतु - राहु	
17/09/2027 17:17	
06/10/2027 21:30	
राहु	20/09/2027 14:19
गुरु	23/09/2027 03:41
शनि	26/09/2027 04:33
बुध	28/09/2027 21:44
केतु	30/09/2027 00:35
शुक्र	03/10/2027 05:17
सूर्य	04/10/2027 04:18
चंद्र	05/10/2027 18:39
मंगल	06/10/2027 21:30

सूर्य - केतु - गुरु	
06/10/2027 21:30	
23/10/2027 22:35	
गुरु	09/10/2027 04:02
शनि	11/10/2027 20:49
बुध	14/10/2027 06:46
केतु	15/10/2027 06:38
शुक्र	18/10/2027 02:48
सूर्य	18/10/2027 23:16
चंद्र	20/10/2027 09:21
मंगल	21/10/2027 09:13
राहु	23/10/2027 22:35

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - केतु - शनि	
23/10/2027 22:35	
13/11/2027 04:22	
शनि	27/10/2027 03:29
बुध	30/10/2027 00:19
केतु	31/10/2027 04:39
शुक्र	03/11/2027 13:37
सूर्य	04/11/2027 13:54
चंद्र	06/11/2027 06:23
मंगल	07/11/2027 10:43
राहु	10/11/2027 11:35
गुरु	13/11/2027 04:22

सूर्य - केतु - बुध	
13/11/2027 04:22	
01/12/2027 07:00	
बुध	15/11/2027 17:56
केतु	16/11/2027 19:17
शुक्र	19/11/2027 19:44
सूर्य	20/11/2027 17:28
चंद्र	22/11/2027 05:41
मंगल	23/11/2027 07:02
राहु	26/11/2027 00:14
गुरु	28/11/2027 10:11
शनि	01/12/2027 07:00

सूर्य - शुक्र - शुक्र	
01/12/2027 07:00	
31/01/2028 04:00	
शुक्र	11/12/2027 10:30
सूर्य	14/12/2027 11:33
चंद्र	19/12/2027 13:18
मंगल	23/12/2027 02:32
राहु	01/01/2028 05:41
गुरु	09/01/2028 08:29
शनि	18/01/2028 23:48
बुध	27/01/2028 14:47
केतु	31/01/2028 04:00

सूर्य - शुक्र - सूर्य	
31/01/2028 04:00	
18/02/2028 10:18	
सूर्य	01/02/2028 01:55
चंद्र	02/02/2028 14:27
मंगल	03/02/2028 16:01
राहु	06/02/2028 09:46
गुरु	08/02/2028 20:12
शनि	11/02/2028 17:36
बुध	14/02/2028 07:41
केतु	15/02/2028 09:15
शुक्र	18/02/2028 10:18

सूर्य - शुक्र - चंद्र	
18/02/2028 10:18	
19/03/2028 20:48	
चंद्र	20/02/2028 23:11
मंगल	22/02/2028 17:48
राहु	27/02/2028 07:22
गुरु	02/03/2028 08:46
शनि	07/03/2028 04:26
बुध	11/03/2028 11:55
केतु	13/03/2028 06:32
शुक्र	18/03/2028 08:17
सूर्य	19/03/2028 20:48

सूर्य - शुक्र - मंगल	
19/03/2028 20:48	
10/04/2028 04:09	
मंगल	21/03/2028 02:38
राहु	24/03/2028 07:20
गुरु	27/03/2028 03:31
शनि	30/03/2028 12:29
बुध	02/04/2028 12:55
केतु	03/04/2028 18:45
शुक्र	07/04/2028 07:59
सूर्य	08/04/2028 09:33
चंद्र	10/04/2028 04:09

सूर्य - शुक्र - राहु	
10/04/2028 04:09	
03/06/2028 23:03	
राहु	18/04/2028 09:23
गुरु	25/04/2028 16:43
शनि	04/05/2028 08:54
बुध	12/05/2028 03:11
केतु	15/05/2028 07:53
शुक्र	24/05/2028 11:02
सूर्य	27/05/2028 04:47
चंद्र	31/05/2028 18:21
मंगल	03/06/2028 23:03

सूर्य - शुक्र - गुरु	
03/06/2028 23:03	
22/07/2028 15:51	
गुरु	10/06/2028 10:54
शनि	18/06/2028 03:57
बुध	25/06/2028 01:32
केतु	27/06/2028 21:43
शुक्र	06/07/2028 00:31
सूर्य	08/07/2028 10:57
चंद्र	12/07/2028 12:21
मंगल	15/07/2028 08:32
राहु	22/07/2028 15:51

सूर्य - शुक्र - शनि	
22/07/2028 15:51	
18/09/2028 11:48	
शनि	31/07/2028 19:37
बुध	09/08/2028 00:14
केतु	12/08/2028 09:12
शुक्र	22/08/2028 00:32
सूर्य	24/08/2028 21:56
चंद्र	29/08/2028 17:35
मंगल	02/09/2028 02:33
राहु	10/09/2028 18:45
गुरु	18/09/2028 11:48

सूर्य - शुक्र - बुध	
18/09/2028 11:48	
09/11/2028 05:39	
बुध	25/09/2028 19:44
केतु	28/09/2028 20:11
शुक्र	07/10/2028 11:09
सूर्य	10/10/2028 01:15
चंद्र	14/10/2028 08:44
मंगल	17/10/2028 09:10
राहु	25/10/2028 03:27
गुरु	01/11/2028 01:02
शनि	09/11/2028 05:39

सूर्य - शुक्र - केतु	
09/11/2028 05:39	
30/11/2028 13:00	
केतु	10/11/2028 11:29
शुक्र	14/11/2028 00:43
सूर्य	15/11/2028 02:17
चंद्र	16/11/2028 20:53
मंगल	18/11/2028 02:43
राहु	21/11/2028 07:25
गुरु	24/11/2028 03:36
शनि	27/11/2028 12:34
बुध	30/11/2028 13:00

चंद्र - चंद्र - चंद्र	
30/11/2028 13:00	
25/12/2028 21:45	
चंद्र	02/12/2028 15:44
मंगल	04/12/2028 03:15
राहु	07/12/2028 22:33
गुरु	11/12/2028 07:43
शनि	15/12/2028 08:07
बुध	18/12/2028 22:21
केतु	20/12/2028 09:52
शुक्र	24/12/2028 15:19
सूर्य	25/12/2028 21:45

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - चंद्र - मंगल		चंद्र - चंद्र - राहु		चंद्र - चंद्र - गुरु		चंद्र - चंद्र - शनि	
25/12/2028 21:45		12/01/2029 15:53		27/02/2029 07:38		08/04/2029 21:38	
12/01/2029 15:53		27/02/2029 07:38		08/04/2029 21:38		27/05/2029 02:15	
मंगल	26/12/2028 22:37	राहु	19/01/2029 12:15	गुरु	04/03/2029 17:30	शनि	16/04/2029 12:46
राहु	29/12/2028 14:32	गुरु	25/01/2029 14:21	शनि	11/03/2029 03:43	बुध	23/04/2029 08:37
गुरु	31/12/2028 23:21	शनि	01/02/2029 19:50	बुध	16/03/2029 21:42	केतु	26/04/2029 04:05
शनि	03/01/2029 18:49	बुध	08/02/2029 07:04	केतु	19/03/2029 06:31	शुक्र	04/05/2029 04:52
बुध	06/01/2029 07:11	केतु	10/02/2029 22:59	शुक्र	26/03/2029 00:51	सूर्य	06/05/2029 14:41
केतु	07/01/2029 08:03	शुक्र	18/02/2029 13:37	सूर्य	28/03/2029 01:33	चंद्र	10/05/2029 15:05
शुक्र	10/01/2029 07:04	सूर्य	20/02/2029 20:24	चंद्र	31/03/2029 10:43	मंगल	13/05/2029 10:33
सूर्य	11/01/2029 04:22	चंद्र	24/02/2029 15:43	मंगल	02/04/2029 19:32	राहु	20/05/2029 16:02
चंद्र	12/01/2029 15:53	मंगल	27/02/2029 07:38	राहु	08/04/2029 21:38	गुरु	27/05/2029 02:15

चंद्र - चंद्र - बुध		चंद्र - चंद्र - केतु		चंद्र - चंद्र - शुक्र		चंद्र - चंद्र - सूर्य	
27/05/2029 02:15		09/07/2029 05:08		26/07/2029 23:15		15/09/2029 16:45	
09/07/2029 05:08		26/07/2029 23:15		15/09/2029 16:45		30/09/2029 22:00	
बुध	02/06/2029 04:52	केतु	10/07/2029 05:59	शुक्र	04/08/2029 10:10	सूर्य	16/09/2029 11:01
केतु	04/06/2029 17:14	शुक्र	13/07/2029 05:01	सूर्य	06/08/2029 23:03	चंद्र	17/09/2029 17:27
शुक्र	11/06/2029 21:43	सूर्य	14/07/2029 02:19	चंद्र	11/08/2029 04:30	मंगल	18/09/2029 14:46
सूर्य	14/06/2029 01:27	चंद्र	15/07/2029 13:50	मंगल	14/08/2029 03:32	राहु	20/09/2029 21:33
चंद्र	17/06/2029 15:42	मंगल	16/07/2029 14:41	राहु	21/08/2029 18:09	गुरु	22/09/2029 22:15
मंगल	20/06/2029 04:04	राहु	19/07/2029 06:36	गुरु	28/08/2029 12:29	शनि	25/09/2029 08:05
राहु	26/06/2029 15:18	गुरु	21/07/2029 15:25	शनि	05/09/2029 13:15	बुध	27/09/2029 11:49
गुरु	02/07/2029 09:17	शनि	24/07/2029 10:53	बुध	12/09/2029 17:44	केतु	28/09/2029 09:08
शनि	09/07/2029 05:08	बुध	26/07/2029 23:15	केतु	15/09/2029 16:45	शुक्र	30/09/2029 22:00

चंद्र - मंगल - मंगल		चंद्र - मंगल - राहु		चंद्र - मंगल - गुरु		चंद्र - मंगल - शनि	
30/09/2029 22:00		13/10/2029 08:18		14/11/2029 07:19		12/12/2029 17:07	
13/10/2029 08:18		14/11/2029 07:19		12/12/2029 17:07		15/01/2030 10:45	
मंगल	01/10/2029 15:24	राहु	18/10/2029 03:21	गुरु	18/11/2029 02:14	शनि	18/12/2029 01:19
राहु	03/10/2029 12:09	गुरु	22/10/2029 09:37	शनि	22/11/2029 14:11	बुध	22/12/2029 20:01
गुरु	05/10/2029 03:55	शनि	27/10/2029 11:04	बुध	26/11/2029 14:46	केतु	24/12/2029 19:14
शनि	07/10/2029 03:09	बुध	31/10/2029 23:43	केतु	28/11/2029 06:32	शुक्र	30/12/2029 10:11
बुध	08/10/2029 21:24	केतु	02/11/2029 20:28	शुक्र	03/12/2029 00:10	सूर्य	01/01/2030 02:40
केतु	09/10/2029 14:48	शुक्र	08/11/2029 04:18	सूर्य	04/12/2029 10:16	चंद्र	03/01/2030 22:08
शुक्र	11/10/2029 16:31	सूर्य	09/11/2029 18:39	चंद्र	06/12/2029 19:05	मंगल	05/01/2030 21:22
सूर्य	12/10/2029 07:26	चंद्र	12/11/2029 10:35	मंगल	08/12/2029 10:51	राहु	10/01/2030 22:48
चंद्र	13/10/2029 08:18	मंगल	14/11/2029 07:19	राहु	12/12/2029 17:07	गुरु	15/01/2030 10:45

विंशोत्तरी दशा - प्राण

सूर्य - शनि - बुध - चंद्र		सूर्य - शनि - बुध - मंगल		सूर्य - शनि - बुध - राहु		सूर्य - शनि - बुध - गुरु	
22/12/2025 16:52		25/12/2025 12:32		28/12/2025 09:21		04/01/2026 18:19	
25/12/2025 12:32		28/12/2025 09:21		04/01/2026 18:19		11/01/2026 07:37	
	00/00/0000 00:00	मंगल	25/12/2025 16:33	राहु	29/12/2025 11:54	गुरु	05/01/2026 15:18
	00/00/0000 00:00	राहु	26/12/2025 02:52	गुरु	30/12/2025 11:30	शनि	06/01/2026 16:12
	22/12/2025 16:52	गुरु	26/12/2025 12:03	शनि	31/12/2025 15:31	बुध	07/01/2026 14:29
गुरु	23/12/2025 04:00	शनि	26/12/2025 22:57	बुध	01/01/2026 16:35	केतु	07/01/2026 23:40
शनि	23/12/2025 19:34	बुध	27/12/2025 08:42	केतु	02/01/2026 02:54	शुक्र	09/01/2026 01:53
बुध	24/12/2025 09:30	केतु	27/12/2025 12:43	शुक्र	03/01/2026 08:24	सूर्य	09/01/2026 09:45
केतु	24/12/2025 15:14	शुक्र	28/12/2025 00:11	सूर्य	03/01/2026 17:15	चंद्र	09/01/2026 22:51
शुक्र	25/12/2025 07:37	सूर्य	28/12/2025 03:37	चंद्र	04/01/2026 08:00	मंगल	10/01/2026 08:02
सूर्य	25/12/2025 12:32	चंद्र	28/12/2025 09:21	मंगल	04/01/2026 18:19	राहु	11/01/2026 07:37

सूर्य - शनि - बुध - शनि		सूर्य - शनि - केतु - केतु		सूर्य - शनि - केतु - शुक्र		सूर्य - शनि - केतु - सूर्य	
11/01/2026 07:37		19/01/2026 02:25		20/01/2026 06:45		23/01/2026 15:43	
19/01/2026 02:25		20/01/2026 06:45		23/01/2026 15:43		24/01/2026 16:00	
शनि	12/01/2026 13:12	केतु	19/01/2026 04:04	शुक्र	20/01/2026 20:15	सूर्य	23/01/2026 16:56
बुध	13/01/2026 15:40	शुक्र	19/01/2026 08:48	सूर्य	21/01/2026 00:18	चंद्र	23/01/2026 18:57
केतु	14/01/2026 02:33	सूर्य	19/01/2026 10:13	चंद्र	21/01/2026 07:03	मंगल	23/01/2026 20:22
शुक्र	15/01/2026 09:41	चंद्र	19/01/2026 12:34	मंगल	21/01/2026 11:46	राहु	24/01/2026 00:01
सूर्य	15/01/2026 19:02	मंगल	19/01/2026 14:13	राहु	21/01/2026 23:55	गुरु	24/01/2026 03:15
चंद्र	16/01/2026 10:36	राहु	19/01/2026 18:28	गुरु	22/01/2026 10:42	शनि	24/01/2026 07:06
मंगल	16/01/2026 21:29	गुरु	19/01/2026 22:15	शनि	22/01/2026 23:31	बुध	24/01/2026 10:32
राहु	18/01/2026 01:31	शनि	20/01/2026 02:44	बुध	23/01/2026 11:00	केतु	24/01/2026 11:57
गुरु	19/01/2026 02:25	बुध	20/01/2026 06:45	केतु	23/01/2026 15:43	शुक्र	24/01/2026 16:00

सूर्य - शनि - केतु - चंद्र		सूर्य - शनि - केतु - मंगल		सूर्य - शनि - केतु - राहु		सूर्य - शनि - केतु - गुरु	
24/01/2026 16:00		26/01/2026 08:29		27/01/2026 12:50		30/01/2026 13:42	
26/01/2026 08:29		27/01/2026 12:50		30/01/2026 13:42		02/02/2026 06:28	
चंद्र	24/01/2026 19:23	मंगल	26/01/2026 10:08	राहु	27/01/2026 23:45	गुरु	30/01/2026 22:20
मंगल	24/01/2026 21:44	राहु	26/01/2026 14:24	गुरु	28/01/2026 09:28	शनि	31/01/2026 08:35
राहु	25/01/2026 03:49	गुरु	26/01/2026 18:10	शनि	28/01/2026 21:01	बुध	31/01/2026 17:46
गुरु	25/01/2026 09:13	शनि	26/01/2026 22:39	बुध	29/01/2026 07:20	केतु	31/01/2026 21:32
शनि	25/01/2026 15:37	बुध	27/01/2026 02:40	केतु	29/01/2026 11:35	शुक्र	01/02/2026 08:20
बुध	25/01/2026 21:21	केतु	27/01/2026 04:19	शुक्र	29/01/2026 23:44	सूर्य	01/02/2026 11:34
केतु	25/01/2026 23:43	शुक्र	27/01/2026 09:03	सूर्य	30/01/2026 03:22	चंद्र	01/02/2026 16:58
शुक्र	26/01/2026 06:28	सूर्य	27/01/2026 10:28	चंद्र	30/01/2026 09:27	मंगल	01/02/2026 20:45
सूर्य	26/01/2026 08:29	चंद्र	27/01/2026 12:50	मंगल	30/01/2026 13:42	राहु	02/02/2026 06:28

विंशोत्तरी दशा - प्राण

सूर्य - शनि - केतु - शनि	
02/02/2026 06:28	
05/02/2026 11:23	
शनि	02/02/2026 18:39
बुध	03/02/2026 05:32
केतु	03/02/2026 10:02
शुक्र	03/02/2026 22:51
सूर्य	04/02/2026 02:41
चंद्र	04/02/2026 09:06
मंगल	04/02/2026 13:35
राहु	05/02/2026 01:07
गुरु	05/02/2026 11:23

सूर्य - शनि - केतु - बुध	
05/02/2026 11:23	
08/02/2026 08:12	
बुध	05/02/2026 21:08
केतु	06/02/2026 01:09
शुक्र	06/02/2026 12:37
सूर्य	06/02/2026 16:03
चंद्र	06/02/2026 21:47
मंगल	07/02/2026 01:48
राहु	07/02/2026 12:08
गुरु	07/02/2026 21:18
शनि	08/02/2026 08:12

सूर्य - शनि - शुक्र - शुक्र	
08/02/2026 08:12	
17/02/2026 23:31	
शुक्र	09/02/2026 22:45
सूर्य	10/02/2026 10:19
चंद्र	11/02/2026 05:36
मंगल	11/02/2026 19:05
राहु	13/02/2026 05:47
गुरु	14/02/2026 12:38
शनि	16/02/2026 01:16
बुध	17/02/2026 10:02
केतु	17/02/2026 23:31

सूर्य - शनि - शुक्र - सूर्य	
17/02/2026 23:31	
20/02/2026 20:55	
सूर्य	18/02/2026 03:00
चंद्र	18/02/2026 08:47
मंगल	18/02/2026 12:49
राहु	18/02/2026 23:14
गुरु	19/02/2026 08:29
शनि	19/02/2026 19:29
बुध	20/02/2026 05:18
केतु	20/02/2026 09:21
शुक्र	20/02/2026 20:55

सूर्य - शनि - शुक्र - चंद्र	
20/02/2026 20:55	
25/02/2026 16:35	
चंद्र	21/02/2026 06:34
मंगल	21/02/2026 13:18
राहु	22/02/2026 06:39
गुरु	22/02/2026 22:05
शनि	23/02/2026 16:23
बुध	24/02/2026 08:47
केतु	24/02/2026 15:31
शुक्र	25/02/2026 10:48
सूर्य	25/02/2026 16:35

सूर्य - शनि - शुक्र - मंगल	
25/02/2026 16:35	
01/03/2026 01:33	
मंगल	25/02/2026 21:18
राहु	26/02/2026 09:27
गुरु	26/02/2026 20:15
शनि	27/02/2026 09:04
बुध	27/02/2026 20:32
केतु	28/02/2026 01:15
शुक्र	28/02/2026 14:45
सूर्य	28/02/2026 18:48
चंद्र	01/03/2026 01:33

सूर्य - शनि - शुक्र - राहु	
01/03/2026 01:33	
09/03/2026 17:44	
राहु	02/03/2026 08:47
गुरु	03/03/2026 12:32
शनि	04/03/2026 21:30
बुध	06/03/2026 03:00
केतु	06/03/2026 15:08
शुक्र	08/03/2026 01:50
सूर्य	08/03/2026 12:15
चंद्र	09/03/2026 05:36
मंगल	09/03/2026 17:44

सूर्य - शनि - शुक्र - गुरु	
09/03/2026 17:44	
17/03/2026 10:48	
गुरु	10/03/2026 18:25
शनि	11/03/2026 23:43
बुध	13/03/2026 01:56
केतु	13/03/2026 12:44
शुक्र	14/03/2026 19:34
सूर्य	15/03/2026 04:49
चंद्र	15/03/2026 20:15
मंगल	16/03/2026 07:02
राहु	17/03/2026 10:48

सूर्य - शनि - शुक्र - शनि	
17/03/2026 10:48	
26/03/2026 14:34	
शनि	18/03/2026 21:36
बुध	20/03/2026 04:44
केतु	20/03/2026 17:33
शुक्र	22/03/2026 06:10
सूर्य	22/03/2026 17:10
चंद्र	23/03/2026 11:28
मंगल	24/03/2026 00:18
राहु	25/03/2026 09:15
गुरु	26/03/2026 14:34

सूर्य - शनि - शुक्र - बुध	
26/03/2026 14:34	
03/04/2026 19:11	
बुध	27/03/2026 18:25
केतु	28/03/2026 05:53
शुक्र	29/03/2026 14:39
सूर्य	30/03/2026 00:29
चंद्र	30/03/2026 16:52
मंगल	31/03/2026 04:20
राहु	01/04/2026 09:50
गुरु	02/04/2026 12:03
शनि	03/04/2026 19:11

सूर्य - शनि - शुक्र - केतु	
03/04/2026 19:11	
07/04/2026 04:09	
केतु	03/04/2026 23:54
शुक्र	04/04/2026 13:24
सूर्य	04/04/2026 17:27
चंद्र	05/04/2026 00:12
मंगल	05/04/2026 04:55
राहु	05/04/2026 17:04
गुरु	06/04/2026 03:52
शनि	06/04/2026 16:41
बुध	07/04/2026 04:09

सूर्य - शनि - सूर्य - सूर्य	
07/04/2026 04:09	
08/04/2026 00:58	
सूर्य	07/04/2026 05:11
चंद्र	07/04/2026 06:55
मंगल	07/04/2026 08:08
राहु	07/04/2026 11:16
गुरु	07/04/2026 14:02
शनि	07/04/2026 17:20
बुध	07/04/2026 20:17
केतु	07/04/2026 21:30
शुक्र	08/04/2026 00:58

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 7 वर्ष 10 मास 2 दिन

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष	
22/12/2025		25/10/2033		25/10/2050		25/10/2068		25/10/2079	
25/10/2033		25/10/2050		25/10/2068		25/10/2079		25/10/2091	
	00/00/0000	बुध	22/04/2036	शुक्र	10/08/2053	सूर्य	10/11/2069	मंगल	21/01/2081
	00/00/0000	शुक्र	11/12/2038	सूर्य	26/04/2055	मंगल	30/12/2070	गुरु	27/05/2082
	22/12/2025	सूर्य	22/07/2040	मंगल	06/03/2057	गुरु	24/03/2072	शनि	07/11/2083
सूर्य	14/05/2026	मंगल	25/04/2042	गुरु	13/03/2059	शनि	22/07/2073	केतु	27/05/2085
मंगल	09/01/2028	गुरु	21/03/2044	शनि	14/05/2061	केतु	24/12/2074	चंद्र	21/01/2087
गुरु	25/10/2029	शनि	10/04/2046	केतु	11/09/2063	चंद्र	30/06/2076	बुध	25/10/2088
शनि	30/09/2031	केतु	21/06/2048	चंद्र	06/03/2066	बुध	09/02/2078	शुक्र	05/09/2090
केतु	25/10/2033	चंद्र	25/10/2050	बुध	25/10/2068	शुक्र	25/10/2079	सूर्य	25/10/2091

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष	
25/10/2091		26/10/2104		26/10/2118		26/10/2133	
26/10/2104		26/10/2118		26/10/2133		00/00/0000	
गुरु	09/04/2093	शनि	05/07/2106	केतु	03/10/2120	चंद्र	10/01/2136
शनि	03/11/2094	केतु	26/04/2108	चंद्र	29/10/2122	बुध	15/05/2138
केतु	09/07/2096	चंद्र	01/04/2110	बुध	09/01/2125	शुक्र	07/11/2140
चंद्र	25/04/2098	बुध	20/04/2112	शुक्र	09/05/2127	सूर्य	23/12/2141
बुध	22/03/2100	शुक्र	22/06/2114	सूर्य	10/10/2128		00/00/0000
शुक्र	29/03/2102	सूर्य	20/10/2115	मंगल	30/04/2130		00/00/0000
सूर्य	22/06/2103	मंगल	01/04/2117	गुरु	04/01/2132		00/00/0000
मंगल	26/10/2104	गुरु	26/10/2118	शनि	26/10/2133		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु	
22/12/2025		14/05/2026		09/01/2028		25/10/2029		30/09/2031	
14/05/2026		09/01/2028		25/10/2029		30/09/2031		25/10/2033	
	00/00/0000	मंगल	16/07/2026	गुरु	22/03/2028	शनि	18/01/2030	केतु	06/01/2032
	00/00/0000	गुरु	22/09/2026	शनि	09/06/2028	केतु	19/04/2030	चंद्र	19/04/2032
	00/00/0000	शनि	04/12/2026	केतु	02/09/2028	चंद्र	25/07/2030	बुध	08/08/2032
	00/00/0000	केतु	20/02/2027	चंद्र	01/12/2028	बुध	06/11/2030	शुक्र	03/12/2032
	00/00/0000	चंद्र	14/05/2027	बुध	07/03/2029	शुक्र	23/02/2031	सूर्य	13/02/2033
	22/12/2025	बुध	11/08/2027	शुक्र	17/06/2029	सूर्य	01/05/2031	मंगल	02/05/2033
बुध	17/02/2026	शुक्र	13/11/2027	सूर्य	18/08/2029	मंगल	13/07/2031	गुरु	26/07/2033
शुक्र	14/05/2026	सूर्य	09/01/2028	मंगल	25/10/2029	गुरु	30/09/2031	शनि	25/10/2033

बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु	
25/10/2033		22/04/2036		11/12/2038		22/07/2040		25/04/2042	
22/04/2036		11/12/2038		22/07/2040		25/04/2042		21/03/2044	
बुध	07/03/2034	शुक्र	18/09/2036	सूर्य	05/02/2039	मंगल	27/09/2040	गुरु	12/07/2042
शुक्र	26/07/2034	सूर्य	19/12/2036	मंगल	07/04/2039	गुरु	07/12/2040	शनि	04/10/2042
सूर्य	21/10/2034	मंगल	28/03/2037	गुरु	12/06/2039	शनि	23/02/2041	केतु	02/01/2043
मंगल	23/01/2035	गुरु	14/07/2037	शनि	22/08/2039	केतु	17/05/2041	चंद्र	08/04/2043
गुरु	05/05/2035	शनि	08/11/2037	केतु	06/11/2039	चंद्र	14/08/2041	बुध	19/07/2043
शनि	23/08/2035	केतु	12/03/2038	चंद्र	26/01/2040	बुध	16/11/2041	शुक्र	04/11/2043
केतु	18/12/2035	चंद्र	23/07/2038	बुध	22/04/2040	शुक्र	23/02/2042	सूर्य	09/01/2044
चंद्र	22/04/2036	बुध	11/12/2038	शुक्र	22/07/2040	सूर्य	25/04/2042	मंगल	21/03/2044

बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
21/03/2044		10/04/2046		21/06/2048		25/10/2050		10/08/2053	
10/04/2046		21/06/2048		25/10/2050		10/08/2053		26/04/2055	
शनि	20/06/2044	केतु	22/07/2046	चंद्र	17/10/2048	शुक्र	01/04/2051	सूर्य	08/10/2053
केतु	25/09/2044	चंद्र	10/11/2046	बुध	19/02/2049	सूर्य	07/07/2051	मंगल	12/12/2053
चंद्र	06/01/2045	बुध	08/03/2047	शुक्र	02/07/2049	मंगल	21/10/2051	गुरु	20/02/2054
बुध	26/04/2045	शुक्र	10/07/2047	सूर्य	21/09/2049	गुरु	12/02/2052	शनि	06/05/2054
शुक्र	20/08/2045	सूर्य	25/09/2047	मंगल	19/12/2049	शनि	14/06/2052	केतु	26/07/2054
सूर्य	30/10/2045	मंगल	17/12/2047	गुरु	25/03/2050	केतु	24/10/2052	चंद्र	20/10/2054
मंगल	16/01/2046	गुरु	16/03/2048	शनि	06/07/2050	चंद्र	14/03/2053	बुध	19/01/2055
गुरु	10/04/2046	शनि	21/06/2048	केतु	25/10/2050	बुध	10/08/2053	शुक्र	26/04/2055

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र	
26/04/2055		06/03/2057		13/03/2059		14/05/2061		11/09/2063	
06/03/2057		13/03/2059		14/05/2061		11/09/2063		06/03/2066	
मंगल	05/07/2055	गुरु	27/05/2057	शनि	16/06/2059	केतु	01/09/2061	चंद्र	14/01/2064
गुरु	19/09/2055	शनि	24/08/2057	केतु	27/09/2059	चंद्र	27/12/2061	बुध	26/05/2064
शनि	10/12/2055	केतु	28/11/2057	चंद्र	14/01/2060	बुध	01/05/2062	शुक्र	14/10/2064
केतु	07/03/2056	चंद्र	09/03/2058	बुध	10/05/2060	शुक्र	10/09/2062	सूर्य	08/01/2065
चंद्र	09/06/2056	बुध	25/06/2058	शुक्र	10/09/2060	सूर्य	29/11/2062	मंगल	12/04/2065
बुध	17/09/2056	शुक्र	17/10/2058	सूर्य	24/11/2060	मंगल	25/02/2063	गुरु	22/07/2065
शुक्र	31/12/2056	सूर्य	26/12/2058	मंगल	14/02/2061	गुरु	01/06/2063	शनि	09/11/2065
सूर्य	06/03/2057	मंगल	13/03/2059	गुरु	14/05/2061	शनि	11/09/2063	केतु	06/03/2066

शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
06/03/2066		25/10/2068		10/11/2069		30/12/2070		24/03/2072	
25/10/2068		10/11/2069		30/12/2070		24/03/2072		22/07/2073	
बुध	25/07/2066	सूर्य	30/11/2068	मंगल	23/12/2069	गुरु	19/02/2071	शनि	22/05/2072
शुक्र	22/12/2066	मंगल	08/01/2069	गुरु	07/02/2070	शनि	14/04/2071	केतु	24/07/2072
सूर्य	23/03/2067	गुरु	20/02/2069	शनि	29/03/2070	केतु	11/06/2071	चंद्र	29/09/2072
मंगल	01/07/2067	शनि	07/04/2069	केतु	22/05/2070	चंद्र	12/08/2071	बुध	09/12/2072
गुरु	17/10/2067	केतु	26/05/2069	चंद्र	18/07/2070	बुध	17/10/2071	शुक्र	22/02/2073
शनि	10/02/2068	चंद्र	18/07/2069	बुध	17/09/2070	शुक्र	26/12/2071	सूर्य	09/04/2073
केतु	14/06/2068	बुध	11/09/2069	शुक्र	21/11/2070	सूर्य	07/02/2072	मंगल	29/05/2073
चंद्र	25/10/2068	शुक्र	10/11/2069	सूर्य	30/12/2070	मंगल	24/03/2072	गुरु	22/07/2073

सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल	
22/07/2073		24/12/2074		30/06/2076		09/02/2078		25/10/2079	
24/12/2074		30/06/2076		09/02/2078		25/10/2079		21/01/2081	
केतु	27/09/2073	चंद्र	10/03/2075	बुध	24/09/2076	शुक्र	17/05/2078	मंगल	11/12/2079
चंद्र	08/12/2073	बुध	31/05/2075	शुक्र	25/12/2076	सूर्य	15/07/2078	गुरु	31/01/2080
बुध	22/02/2074	शुक्र	24/08/2075	सूर्य	19/02/2077	मंगल	17/09/2078	शनि	26/03/2080
शुक्र	14/05/2074	सूर्य	16/10/2075	मंगल	20/04/2077	गुरु	26/11/2078	केतु	23/05/2080
सूर्य	02/07/2074	मंगल	12/12/2075	गुरु	25/06/2077	शनि	09/02/2079	चंद्र	25/07/2080
मंगल	25/08/2074	गुरु	12/02/2076	शनि	04/09/2077	केतु	01/05/2079	बुध	29/09/2080
गुरु	22/10/2074	शनि	19/04/2076	केतु	20/11/2077	चंद्र	26/07/2079	शुक्र	09/12/2080
शनि	24/12/2074	केतु	30/06/2076	चंद्र	09/02/2078	बुध	25/10/2079	सूर्य	21/01/2081

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध	
21/01/2081		27/05/2082		07/11/2083		27/05/2085		21/01/2087	
27/05/2082		07/11/2083		27/05/2085		21/01/2087		25/10/2088	
गुरु	17/03/2081	शनि	30/07/2082	केतु	19/01/2084	चंद्र	18/08/2085	बुध	25/04/2087
शनि	15/05/2081	केतु	06/10/2082	चंद्र	06/04/2084	बुध	15/11/2085	शुक्र	03/08/2087
केतु	18/07/2081	चंद्र	18/12/2082	बुध	28/06/2084	शुक्र	16/02/2086	सूर्य	03/10/2087
चंद्र	23/09/2081	बुध	06/03/2083	शुक्र	24/09/2084	सूर्य	15/04/2086	मंगल	08/12/2087
बुध	04/12/2081	शुक्र	27/05/2083	सूर्य	17/11/2084	मंगल	16/06/2086	गुरु	18/02/2088
शुक्र	18/02/2082	सूर्य	16/07/2083	मंगल	15/01/2085	गुरु	23/08/2086	शनि	06/05/2088
सूर्य	06/04/2082	मंगल	09/09/2083	गुरु	19/03/2085	शनि	04/11/2086	केतु	28/07/2088
मंगल	27/05/2082	गुरु	07/11/2083	शनि	27/05/2085	केतु	21/01/2087	चंद्र	25/10/2088

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु	
25/10/2088		05/09/2090		25/10/2091		09/04/2093		03/11/2094	
05/09/2090		25/10/2091		09/04/2093		03/11/2094		09/07/2096	
शुक्र	07/02/2089	सूर्य	14/10/2090	गुरु	24/12/2091	शनि	18/06/2093	केतु	22/01/2095
सूर्य	13/04/2089	मंगल	26/11/2090	शनि	26/02/2092	केतु	31/08/2093	चंद्र	17/04/2095
मंगल	22/06/2089	गुरु	12/01/2091	केतु	05/05/2092	चंद्र	18/11/2093	बुध	16/07/2095
गुरु	06/09/2089	शनि	03/03/2091	चंद्र	17/07/2092	बुध	10/02/2094	शुक्र	19/10/2095
शनि	27/11/2089	केतु	26/04/2091	बुध	03/10/2092	शुक्र	10/05/2094	सूर्य	16/12/2095
केतु	23/02/2090	चंद्र	22/06/2091	शुक्र	25/12/2092	सूर्य	03/07/2094	मंगल	18/02/2096
चंद्र	28/05/2090	बुध	22/08/2091	सूर्य	13/02/2093	मंगल	31/08/2094	गुरु	26/04/2096
बुध	05/09/2090	शुक्र	25/10/2091	मंगल	09/04/2093	गुरु	03/11/2094	शनि	09/07/2096

गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल	
09/07/2096		25/04/2098		22/03/2100		29/03/2102		22/06/2103	
25/04/2098		22/03/2100		29/03/2102		22/06/2103		26/10/2104	
चंद्र	08/10/2096	बुध	05/08/2098	शुक्र	15/07/2100	सूर्य	11/05/2102	मंगल	12/08/2103
बुध	12/01/2097	शुक्र	21/11/2098	सूर्य	22/09/2100	मंगल	26/06/2102	गुरु	06/10/2103
शुक्र	23/04/2097	सूर्य	26/01/2099	मंगल	08/12/2100	गुरु	16/08/2102	शनि	04/12/2103
सूर्य	25/06/2097	मंगल	08/04/2099	गुरु	28/02/2101	शनि	09/10/2102	केतु	06/02/2104
मंगल	31/08/2097	गुरु	25/06/2099	शनि	28/05/2101	केतु	06/12/2102	चंद्र	14/04/2104
गुरु	13/11/2097	शनि	17/09/2099	केतु	31/08/2101	चंद्र	06/02/2103	बुध	25/06/2104
शनि	31/01/2098	केतु	16/12/2099	चंद्र	11/12/2101	बुध	13/04/2103	शुक्र	09/09/2104
केतु	25/04/2098	चंद्र	22/03/2100	बुध	29/03/2102	शुक्र	22/06/2103	सूर्य	26/10/2104

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र	
26/10/2104		05/07/2106		26/04/2108		01/04/2110		20/04/2112	
05/07/2106		26/04/2108		01/04/2110		20/04/2112		22/06/2114	
शनि	08/01/2105	केतु	28/09/2106	चंद्र	01/08/2108	बुध	20/07/2110	शुक्र	21/08/2112
केतु	29/03/2105	चंद्र	28/12/2106	बुध	13/11/2108	शुक्र	13/11/2110	सूर्य	04/11/2112
चंद्र	22/06/2105	बुध	04/04/2107	शुक्र	02/03/2109	सूर्य	23/01/2111	मंगल	25/01/2113
बुध	20/09/2105	शुक्र	16/07/2107	सूर्य	08/05/2109	मंगल	11/04/2111	गुरु	24/04/2113
शुक्र	25/12/2105	सूर्य	17/09/2107	मंगल	20/07/2109	गुरु	04/07/2111	शनि	29/07/2113
सूर्य	22/02/2106	मंगल	24/11/2107	गुरु	07/10/2109	शनि	02/10/2111	केतु	08/11/2113
मंगल	27/04/2106	गुरु	06/02/2108	शनि	31/12/2109	केतु	07/01/2112	चंद्र	26/02/2114
गुरु	05/07/2106	शनि	26/04/2108	केतु	01/04/2110	चंद्र	20/04/2112	बुध	22/06/2114

शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र	
22/06/2114		20/10/2115		01/04/2117		26/10/2118		03/10/2120	
20/10/2115		01/04/2117		26/10/2118		03/10/2120		29/10/2122	
सूर्य	07/08/2114	मंगल	14/12/2115	गुरु	04/06/2117	केतु	26/01/2119	चंद्र	16/01/2121
मंगल	26/09/2114	गुरु	11/02/2116	शनि	12/08/2117	चंद्र	03/05/2119	बुध	06/05/2121
गुरु	20/11/2114	शनि	15/04/2116	केतु	25/10/2117	बुध	15/08/2119	शुक्र	01/09/2121
शनि	17/01/2115	केतु	22/06/2116	चंद्र	12/01/2118	शुक्र	03/12/2119	सूर्य	11/11/2121
केतु	21/03/2115	चंद्र	03/09/2116	बुध	06/04/2118	सूर्य	08/02/2120	मंगल	29/01/2122
चंद्र	27/05/2115	बुध	20/11/2116	शुक्र	04/07/2118	मंगल	22/04/2120	गुरु	23/04/2122
बुध	06/08/2115	शुक्र	10/02/2117	सूर्य	28/08/2118	गुरु	10/07/2120	शनि	23/07/2122
शुक्र	20/10/2115	सूर्य	01/04/2117	मंगल	26/10/2118	शनि	03/10/2120	केतु	29/10/2122

केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु	
29/10/2122		09/01/2125		09/05/2127		10/10/2128		30/04/2130	
09/01/2125		09/05/2127		10/10/2128		30/04/2130		04/01/2132	
बुध	24/02/2123	शुक्र	21/05/2125	सूर्य	28/06/2127	मंगल	07/12/2128	गुरु	07/07/2130
शुक्र	28/06/2123	सूर्य	10/08/2125	मंगल	20/08/2127	गुरु	09/02/2129	शनि	19/09/2130
सूर्य	13/09/2123	मंगल	06/11/2125	गुरु	17/10/2127	शनि	18/04/2129	केतु	08/12/2130
मंगल	05/12/2123	गुरु	09/02/2126	शनि	19/12/2127	केतु	01/07/2129	चंद्र	03/03/2131
गुरु	04/03/2124	शनि	22/05/2126	केतु	24/02/2128	चंद्र	17/09/2129	बुध	01/06/2131
शनि	09/06/2124	केतु	09/09/2126	चंद्र	06/05/2128	बुध	09/12/2129	शुक्र	04/09/2131
केतु	20/09/2124	चंद्र	05/01/2127	बुध	21/07/2128	शुक्र	07/03/2130	सूर्य	01/11/2131
चंद्र	09/01/2125	बुध	09/05/2127	शुक्र	10/10/2128	सूर्य	30/04/2130	मंगल	04/01/2132

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 1 वर्ष 11 मास 15 दिन

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
22/12/2025		08/12/2027		08/08/2034		09/04/2039		09/04/2051	
08/12/2027		08/08/2034		09/04/2039		09/04/2051		08/12/2061	
	00/00/0000	चंद्र	28/06/2028	मंगल	16/11/2034	राहु	25/01/2041	गुरु	09/09/2052
	00/00/0000	मंगल	17/11/2028	राहु	29/07/2035	गुरु	01/09/2042	शनि	19/05/2054
	00/00/0000	राहु	17/11/2029	गुरु	12/03/2036	शनि	26/07/2044	बुध	22/11/2055
	00/00/0000	गुरु	08/10/2030	शनि	07/12/2036	बुध	08/04/2046	केतु	06/07/2056
	22/12/2025	शनि	29/10/2031	बुध	06/08/2037	केतु	20/12/2046	शुक्र	16/04/2058
शनि	20/06/2026	बुध	07/10/2032	केतु	13/11/2037	शुक्र	20/12/2048	सूर्य	28/10/2058
बुध	13/01/2027	केतु	27/02/2033	शुक्र	24/08/2038	सूर्य	27/07/2049	चंद्र	18/09/2059
केतु	09/04/2027	शुक्र	08/04/2034	सूर्य	18/11/2038	चंद्र	27/07/2050	मंगल	02/05/2060
शुक्र	08/12/2027	सूर्य	08/08/2034	चंद्र	09/04/2039	मंगल	09/04/2051	राहु	08/12/2061

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
08/12/2061		08/08/2074		08/12/2085		08/08/2090		09/12/2103	
08/08/2074		08/12/2085		08/08/2090		09/12/2103		00/00/0000	
शनि	10/12/2063	बुध	17/03/2076	केतु	17/03/2086	शुक्र	28/10/2092	सूर्य	20/02/2104
बुध	26/09/2065	केतु	13/11/2076	शुक्र	26/12/2086	सूर्य	28/06/2093	चंद्र	21/06/2104
केतु	22/06/2066	शुक्र	04/10/2078	सूर्य	21/03/2087	चंद्र	08/08/2094	मंगल	14/09/2104
शुक्र	02/08/2068	सूर्य	29/04/2079	चंद्र	10/08/2087	मंगल	19/05/2095	राहु	21/04/2105
सूर्य	21/03/2069	चंद्र	08/04/2080	मंगल	18/11/2087	राहु	19/05/2097	गुरु	02/11/2105
चंद्र	10/04/2070	मंगल	05/12/2080	राहु	30/07/2088	गुरु	27/02/2099	शनि	23/12/2105
मंगल	05/01/2071	राहु	18/08/2082	गुरु	15/03/2089	शनि	09/04/2101		00/00/0000
राहु	29/11/2072	गुरु	21/02/2084	शनि	10/12/2089	बुध	28/02/2103		00/00/0000
गुरु	08/08/2074	शनि	08/12/2085	बुध	08/08/2090	केतु	09/12/2103		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
22/12/2025		20/06/2026		13/01/2027		09/04/2027		08/12/2027	
20/06/2026		13/01/2027		09/04/2027		08/12/2027		28/06/2028	
	22/12/2025	बुध	20/07/2026	केतु	18/01/2027	शुक्र	19/05/2027	चंद्र	25/12/2027
बुध	09/01/2026	केतु	01/08/2026	शुक्र	02/02/2027	सूर्य	31/05/2027	मंगल	06/01/2028
केतु	23/01/2026	शुक्र	04/09/2026	सूर्य	06/02/2027	चंद्र	21/06/2027	राहु	05/02/2028
शुक्र	03/03/2026	सूर्य	15/09/2026	चंद्र	13/02/2027	मंगल	05/07/2027	गुरु	03/03/2028
सूर्य	14/03/2026	चंद्र	02/10/2026	मंगल	18/02/2027	राहु	10/08/2027	शनि	04/04/2028
चंद्र	02/04/2026	मंगल	14/10/2026	राहु	03/03/2027	गुरु	12/09/2027	बुध	03/05/2028
मंगल	16/04/2026	राहु	14/11/2026	गुरु	14/03/2027	शनि	20/10/2027	केतु	15/05/2028
राहु	21/05/2026	गुरु	12/12/2026	शनि	28/03/2027	बुध	24/11/2027	शुक्र	18/06/2028
गुरु	20/06/2026	शनि	13/01/2027	बुध	09/04/2027	केतु	08/12/2027	सूर्य	28/06/2028

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
28/06/2028		17/11/2028		17/11/2029		08/10/2030		29/10/2031	
17/11/2028		17/11/2029		08/10/2030		29/10/2031		07/10/2032	
मंगल	06/07/2028	राहु	11/01/2029	गुरु	31/12/2029	शनि	08/12/2030	बुध	16/12/2031
राहु	28/07/2028	गुरु	01/03/2029	शनि	20/02/2030	बुध	01/02/2031	केतु	06/01/2032
गुरु	16/08/2028	शनि	27/04/2029	बुध	07/04/2030	केतु	23/02/2031	शुक्र	03/03/2032
शनि	07/09/2028	बुध	18/06/2029	केतु	26/04/2030	शुक्र	28/04/2031	सूर्य	20/03/2032
बुध	27/09/2028	केतु	09/07/2029	शुक्र	19/06/2030	सूर्य	18/05/2031	चंद्र	18/04/2032
केतु	05/10/2028	शुक्र	08/09/2029	सूर्य	05/07/2030	चंद्र	19/06/2031	मंगल	08/05/2032
शुक्र	29/10/2028	सूर्य	27/09/2029	चंद्र	01/08/2030	मंगल	11/07/2031	राहु	29/06/2032
सूर्य	05/11/2028	चंद्र	27/10/2029	मंगल	20/08/2030	राहु	07/09/2031	गुरु	14/08/2032
चंद्र	17/11/2028	मंगल	17/11/2029	राहु	08/10/2030	गुरु	29/10/2031	शनि	07/10/2032

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
07/10/2032		27/02/2033		08/04/2034		08/08/2034		16/11/2034	
27/02/2033		08/04/2034		08/08/2034		16/11/2034		29/07/2035	
केतु	16/10/2032	शुक्र	05/05/2033	सूर्य	14/04/2034	मंगल	14/08/2034	राहु	24/12/2034
शुक्र	08/11/2032	सूर्य	25/05/2033	चंद्र	25/04/2034	राहु	29/08/2034	गुरु	27/01/2035
सूर्य	16/11/2032	चंद्र	28/06/2033	मंगल	02/05/2034	गुरु	11/09/2034	शनि	08/03/2035
चंद्र	27/11/2032	मंगल	22/07/2033	राहु	20/05/2034	शनि	27/09/2034	बुध	14/04/2035
मंगल	06/12/2032	राहु	21/09/2033	गुरु	05/06/2034	बुध	11/10/2034	केतु	29/04/2035
राहु	27/12/2032	गुरु	14/11/2033	शनि	24/06/2034	केतु	17/10/2034	शुक्र	10/06/2035
गुरु	15/01/2033	शनि	17/01/2034	बुध	12/07/2034	शुक्र	02/11/2034	सूर्य	23/06/2035
शनि	06/02/2033	बुध	16/03/2034	केतु	19/07/2034	सूर्य	07/11/2034	चंद्र	14/07/2035
बुध	27/02/2033	केतु	08/04/2034	शुक्र	08/08/2034	चंद्र	16/11/2034	मंगल	29/07/2035

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
29/07/2035		12/03/2036		07/12/2036		06/08/2037		13/11/2037	
12/03/2036		07/12/2036		06/08/2037		13/11/2037		24/08/2038	
गुरु	29/08/2035	शनि	24/04/2036	बुध	11/01/2037	केतु	12/08/2037	शुक्र	31/12/2037
शनि	03/10/2035	बुध	01/06/2036	केतु	25/01/2037	शुक्र	28/08/2037	सूर्य	14/01/2038
बुध	05/11/2035	केतु	17/06/2036	शुक्र	06/03/2037	सूर्य	02/09/2037	चंद्र	06/02/2038
केतु	18/11/2035	शुक्र	01/08/2036	सूर्य	18/03/2037	चंद्र	10/09/2037	मंगल	23/02/2038
शुक्र	26/12/2035	सूर्य	15/08/2036	चंद्र	07/04/2037	मंगल	16/09/2037	राहु	07/04/2038
सूर्य	06/01/2036	चंद्र	06/09/2036	मंगल	21/04/2037	राहु	01/10/2037	गुरु	15/05/2038
चंद्र	25/01/2036	मंगल	22/09/2036	राहु	27/05/2037	गुरु	14/10/2037	शनि	29/06/2038
मंगल	07/02/2036	राहु	01/11/2036	गुरु	29/06/2037	शनि	30/10/2037	बुध	08/08/2038
राहु	12/03/2036	गुरु	07/12/2036	शनि	06/08/2037	बुध	13/11/2037	केतु	24/08/2038

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
24/08/2038		18/11/2038		09/04/2039		25/01/2041		01/09/2042	
18/11/2038		09/04/2039		25/01/2041		01/09/2042		26/07/2044	
सूर्य	29/08/2038	चंद्र	29/11/2038	राहु	16/07/2039	गुरु	13/04/2041	शनि	20/12/2042
चंद्र	05/09/2038	मंगल	08/12/2038	गुरु	12/10/2039	शनि	14/07/2041	बुध	29/03/2043
मंगल	10/09/2038	राहु	29/12/2038	शनि	24/01/2040	बुध	05/10/2041	केतु	08/05/2043
राहु	22/09/2038	गुरु	17/01/2039	बुध	26/04/2040	केतु	08/11/2041	शुक्र	01/09/2043
गुरु	04/10/2038	शनि	08/02/2039	केतु	03/06/2040	शुक्र	14/02/2042	सूर्य	05/10/2043
शनि	17/10/2038	बुध	01/03/2039	शुक्र	21/09/2040	सूर्य	15/03/2042	चंद्र	02/12/2043
बुध	29/10/2038	केतु	09/03/2039	सूर्य	24/10/2040	चंद्र	03/05/2042	मंगल	12/01/2044
केतु	03/11/2038	शुक्र	01/04/2039	चंद्र	18/12/2040	मंगल	06/06/2042	राहु	25/04/2044
शुक्र	18/11/2038	सूर्य	09/04/2039	मंगल	25/01/2041	राहु	01/09/2042	गुरु	26/07/2044

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
26/07/2044		08/04/2046		20/12/2046		20/12/2048		27/07/2049	
08/04/2046		20/12/2046		20/12/2048		27/07/2049		27/07/2050	
बुध	22/10/2044	केतु	23/04/2046	शुक्र	21/04/2047	सूर्य	30/12/2048	चंद्र	26/08/2049
केतु	28/11/2044	शुक्र	05/06/2046	सूर्य	27/05/2047	चंद्र	18/01/2049	मंगल	16/09/2049
शुक्र	11/03/2045	सूर्य	18/06/2046	चंद्र	27/07/2047	मंगल	31/01/2049	राहु	10/11/2049
सूर्य	11/04/2045	चंद्र	09/07/2046	मंगल	08/09/2047	राहु	04/03/2049	गुरु	29/12/2049
चंद्र	02/06/2045	मंगल	24/07/2046	राहु	26/12/2047	गुरु	03/04/2049	शनि	25/02/2050
मंगल	08/07/2045	राहु	31/08/2046	गुरु	02/04/2048	शनि	07/05/2049	बुध	17/04/2050
राहु	09/10/2045	गुरु	04/10/2046	शनि	26/07/2048	बुध	07/06/2049	केतु	09/05/2050
गुरु	31/12/2045	शनि	14/11/2046	बुध	07/11/2048	केतु	20/06/2049	शुक्र	09/07/2050
शनि	08/04/2046	बुध	20/12/2046	केतु	20/12/2048	शुक्र	27/07/2049	सूर्य	27/07/2050

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
27/07/2050		09/04/2051		09/09/2052		19/05/2054		22/11/2055	
09/04/2051		09/09/2052		19/05/2054		22/11/2055		06/07/2056	
मंगल	11/08/2050	गुरु	17/06/2051	शनि	16/12/2052	बुध	05/08/2054	केतु	05/12/2055
राहु	18/09/2050	शनि	07/09/2051	बुध	13/03/2053	केतु	06/09/2054	शुक्र	12/01/2056
गुरु	22/10/2050	बुध	20/11/2051	केतु	18/04/2053	शुक्र	07/12/2054	सूर्य	23/01/2056
शनि	02/12/2050	केतु	20/12/2051	शुक्र	30/07/2053	सूर्य	04/01/2055	चंद्र	11/02/2056
बुध	07/01/2051	शुक्र	16/03/2052	सूर्य	30/08/2053	चंद्र	19/02/2055	मंगल	25/02/2056
केतु	22/01/2051	सूर्य	11/04/2052	चंद्र	20/10/2053	मंगल	23/03/2055	राहु	30/03/2056
शुक्र	06/03/2051	चंद्र	24/05/2052	मंगल	25/11/2053	राहु	14/06/2055	गुरु	29/04/2056
सूर्य	18/03/2051	मंगल	23/06/2052	राहु	26/02/2054	गुरु	26/08/2055	शनि	04/06/2056
चंद्र	09/04/2051	राहु	09/09/2052	गुरु	19/05/2054	शनि	22/11/2055	बुध	06/07/2056

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
06/07/2056		16/04/2058		28/10/2058		18/09/2059		02/05/2060	
16/04/2058		28/10/2058		18/09/2059		02/05/2060		08/12/2061	
शुक्र	22/10/2056	सूर्य	26/04/2058	चंद्र	24/11/2058	मंगल	01/10/2059	राहु	29/07/2060
सूर्य	24/11/2056	चंद्र	12/05/2058	मंगल	13/12/2058	राहु	04/11/2059	गुरु	15/10/2060
चंद्र	17/01/2057	मंगल	24/05/2058	राहु	31/01/2059	गुरु	05/12/2059	शनि	15/01/2061
मंगल	24/02/2057	राहु	22/06/2058	गुरु	15/03/2059	शनि	10/01/2060	बुध	08/04/2061
राहु	01/06/2057	गुरु	18/07/2058	शनि	06/05/2059	बुध	11/02/2060	केतु	12/05/2061
गुरु	27/08/2057	शनि	18/08/2058	बुध	21/06/2059	केतु	24/02/2060	शुक्र	18/08/2061
शनि	08/12/2057	बुध	14/09/2058	केतु	10/07/2059	शुक्र	02/04/2060	सूर्य	16/09/2061
बुध	10/03/2058	केतु	26/09/2058	शुक्र	02/09/2059	सूर्य	13/04/2060	चंद्र	04/11/2061
केतु	16/04/2058	शुक्र	28/10/2058	सूर्य	18/09/2059	चंद्र	02/05/2060	मंगल	08/12/2061

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
08/12/2061		10/12/2063		26/09/2065		22/06/2066		02/08/2068	
10/12/2063		26/09/2065		22/06/2066		02/08/2068		21/03/2069	
शनि	03/04/2062	बुध	12/03/2064	केतु	11/10/2065	शुक्र	29/10/2066	सूर्य	13/08/2068
बुध	15/07/2062	केतु	19/04/2064	शुक्र	25/11/2065	सूर्य	06/12/2066	चंद्र	01/09/2068
केतु	27/08/2062	शुक्र	06/08/2064	सूर्य	09/12/2065	चंद्र	09/02/2067	मंगल	15/09/2068
शुक्र	27/12/2062	सूर्य	08/09/2064	चंद्र	31/12/2065	मंगल	26/03/2067	राहु	20/10/2068
सूर्य	02/02/2063	चंद्र	02/11/2064	मंगल	16/01/2066	राहु	19/07/2067	गुरु	19/11/2068
चंद्र	04/04/2063	मंगल	10/12/2064	राहु	25/02/2066	गुरु	30/10/2067	शनि	26/12/2068
मंगल	17/05/2063	राहु	18/03/2065	गुरु	02/04/2066	शनि	29/02/2068	बुध	28/01/2069
राहु	03/09/2063	गुरु	14/06/2065	शनि	15/05/2066	बुध	18/06/2068	केतु	10/02/2069
गुरु	10/12/2063	शनि	26/09/2065	बुध	22/06/2066	केतु	02/08/2068	शुक्र	21/03/2069

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
21/03/2069		10/04/2070		05/01/2071		29/11/2072		08/08/2074	
10/04/2070		05/01/2071		29/11/2072		08/08/2074		17/03/2076	
चंद्र	22/04/2069	मंगल	26/04/2070	राहु	19/04/2071	गुरु	19/02/2073	बुध	30/10/2074
मंगल	14/05/2069	राहु	06/06/2070	गुरु	21/07/2071	शनि	28/05/2073	केतु	03/12/2074
राहु	11/07/2069	गुरु	12/07/2070	शनि	08/11/2071	बुध	24/08/2073	शुक्र	11/03/2075
गुरु	01/09/2069	शनि	23/08/2070	बुध	14/02/2072	केतु	29/09/2073	सूर्य	09/04/2075
शनि	01/11/2069	बुध	01/10/2070	केतु	26/03/2072	शुक्र	09/01/2074	चंद्र	28/05/2075
बुध	25/12/2069	केतु	16/10/2070	शुक्र	19/07/2072	सूर्य	09/02/2074	मंगल	02/07/2075
केतु	17/01/2070	शुक्र	30/11/2070	सूर्य	23/08/2072	चंद्र	02/04/2074	राहु	27/09/2075
शुक्र	22/03/2070	सूर्य	14/12/2070	चंद्र	20/10/2072	मंगल	08/05/2074	गुरु	15/12/2075
सूर्य	10/04/2070	चंद्र	05/01/2071	मंगल	29/11/2072	राहु	08/08/2074	शनि	17/03/2076

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
17/03/2076		13/11/2076		04/10/2078		29/04/2079		08/04/2080	
13/11/2076		04/10/2078		29/04/2079		08/04/2080		05/12/2080	
केतु	31/03/2076	शुक्र	08/03/2077	सूर्य	14/10/2078	चंद्र	28/05/2079	मंगल	22/04/2080
शुक्र	10/05/2076	सूर्य	11/04/2077	चंद्र	01/11/2078	मंगल	17/06/2079	राहु	28/05/2080
सूर्य	22/05/2076	चंद्र	08/06/2077	मंगल	13/11/2078	राहु	08/08/2079	गुरु	29/06/2080
चंद्र	11/06/2076	मंगल	18/07/2077	राहु	14/12/2078	गुरु	22/09/2079	शनि	07/08/2080
मंगल	25/06/2076	राहु	30/10/2077	गुरु	10/01/2079	शनि	16/11/2079	बुध	10/09/2080
राहु	31/07/2076	गुरु	30/01/2078	शनि	12/02/2079	बुध	04/01/2080	केतु	24/09/2080
गुरु	02/09/2076	शनि	19/05/2078	बुध	13/03/2079	केतु	24/01/2080	शुक्र	03/11/2080
शनि	10/10/2076	बुध	25/08/2078	केतु	25/03/2079	शुक्र	22/03/2080	सूर्य	15/11/2080
बुध	13/11/2076	केतु	04/10/2078	शुक्र	29/04/2079	सूर्य	08/04/2080	चंद्र	05/12/2080

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
05/12/2080		18/08/2082		21/02/2084		08/12/2085		17/03/2086	
18/08/2082		21/02/2084		08/12/2085		17/03/2086		26/12/2086	
राहु	08/03/2081	गुरु	31/10/2082	शनि	04/06/2084	केतु	13/12/2085	शुक्र	03/05/2086
गुरु	30/05/2081	शनि	26/01/2083	बुध	05/09/2084	शुक्र	30/12/2085	सूर्य	18/05/2086
शनि	06/09/2081	बुध	14/04/2083	केतु	13/10/2084	सूर्य	04/01/2086	चंद्र	10/06/2086
बुध	03/12/2081	केतु	17/05/2083	शुक्र	30/01/2085	चंद्र	12/01/2086	मंगल	27/06/2086
केतु	08/01/2082	शुक्र	17/08/2083	सूर्य	04/03/2085	मंगल	18/01/2086	राहु	08/08/2086
शुक्र	21/04/2082	सूर्य	13/09/2083	चंद्र	28/04/2085	राहु	02/02/2086	गुरु	15/09/2086
सूर्य	22/05/2082	चंद्र	29/10/2083	मंगल	05/06/2085	गुरु	15/02/2086	शनि	30/10/2086
चंद्र	13/07/2082	मंगल	30/11/2083	राहु	11/09/2085	शनि	03/03/2086	बुध	10/12/2086
मंगल	18/08/2082	राहु	21/02/2084	गुरु	08/12/2085	बुध	17/03/2086	केतु	26/12/2086

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
26/12/2086		21/03/2087		10/08/2087		18/11/2087		30/07/2088	
21/03/2087		10/08/2087		18/11/2087		30/07/2088		15/03/2089	
सूर्य	30/12/2086	चंद्र	02/04/2087	मंगल	16/08/2087	राहु	26/12/2087	गुरु	30/08/2088
चंद्र	06/01/2087	मंगल	10/04/2087	राहु	31/08/2087	गुरु	29/01/2088	शनि	05/10/2088
मंगल	11/01/2087	राहु	02/05/2087	गुरु	13/09/2087	शनि	10/03/2088	बुध	06/11/2088
राहु	24/01/2087	गुरु	21/05/2087	शनि	29/09/2087	बुध	15/04/2088	केतु	19/11/2088
गुरु	05/02/2087	शनि	12/06/2087	बुध	13/10/2087	केतु	30/04/2088	शुक्र	27/12/2088
शनि	18/02/2087	बुध	02/07/2087	केतु	19/10/2087	शुक्र	11/06/2088	सूर्य	07/01/2089
बुध	02/03/2087	केतु	11/07/2087	शुक्र	05/11/2087	सूर्य	24/06/2088	चंद्र	26/01/2089
केतु	07/03/2087	शुक्र	03/08/2087	सूर्य	10/11/2087	चंद्र	16/07/2088	मंगल	09/02/2089
शुक्र	21/03/2087	सूर्य	10/08/2087	चंद्र	18/11/2087	मंगल	30/07/2088	राहु	15/03/2089

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
15/03/2089		10/12/2089		08/08/2090		28/10/2092		28/06/2093	
10/12/2089		08/08/2090		28/10/2092		28/06/2093		08/08/2094	
शनि	26/04/2089	बुध	13/01/2090	शुक्र	21/12/2090	सूर्य	09/11/2092	चंद्र	01/08/2093
बुध	04/06/2089	केतु	27/01/2090	सूर्य	31/01/2091	चंद्र	29/11/2092	मंगल	25/08/2093
केतु	19/06/2089	शुक्र	08/03/2090	चंद्र	09/04/2091	मंगल	13/12/2092	राहु	25/10/2093
शुक्र	03/08/2089	सूर्य	20/03/2090	मंगल	26/05/2091	राहु	19/01/2093	गुरु	18/12/2093
सूर्य	17/08/2089	चंद्र	09/04/2090	राहु	25/09/2091	गुरु	20/02/2093	शनि	20/02/2094
चंद्र	08/09/2089	मंगल	23/04/2090	गुरु	11/01/2092	शनि	31/03/2093	बुध	18/04/2094
मंगल	24/09/2089	राहु	30/05/2090	शनि	18/05/2092	बुध	04/05/2093	केतु	12/05/2094
राहु	04/11/2089	गुरु	01/07/2090	बुध	10/09/2092	केतु	19/05/2093	शुक्र	19/07/2094
गुरु	10/12/2089	शनि	08/08/2090	केतु	28/10/2092	शुक्र	28/06/2093	सूर्य	08/08/2094

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
08/08/2094		19/05/2095		19/05/2097		27/02/2099		09/04/2101	
19/05/2095		19/05/2097		27/02/2099		09/04/2101		28/02/2103	
मंगल	25/08/2094	राहु	06/09/2095	गुरु	13/08/2097	शनि	29/06/2099	बुध	16/07/2101
राहु	06/10/2094	गुरु	12/12/2095	शनि	24/11/2097	बुध	16/10/2099	केतु	25/08/2101
गुरु	13/11/2094	शनि	06/04/2096	बुध	24/02/2098	केतु	30/11/2099	शुक्र	18/12/2101
शनि	28/12/2094	बुध	18/07/2096	केतु	03/04/2098	शुक्र	08/04/2100	सूर्य	22/01/2102
बुध	06/02/2095	केतु	30/08/2096	शुक्र	20/07/2098	सूर्य	16/05/2100	चंद्र	20/03/2102
केतु	23/02/2095	शुक्र	30/12/2096	सूर्य	22/08/2098	चंद्र	20/07/2100	मंगल	29/04/2102
शुक्र	11/04/2095	सूर्य	04/02/2097	चंद्र	15/10/2098	मंगल	03/09/2100	राहु	11/08/2102
सूर्य	26/04/2095	चंद्र	06/04/2097	मंगल	22/11/2098	राहु	27/12/2100	गुरु	11/11/2102
चंद्र	19/05/2095	मंगल	19/05/2097	राहु	27/02/2099	गुरु	09/04/2101	शनि	28/02/2103

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 9 वर्ष 5 मास 7 दिन

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
22/12/2025		31/05/2035		31/05/2047		30/05/2068		31/05/2074	
31/05/2035		31/05/2047		30/05/2068		31/05/2074		30/05/2089	
	00/00/0000	राहु	29/09/2036	शुक्र	30/06/2051	सूर्य	29/09/2068	चंद्र	30/06/2076
	00/00/0000	शुक्र	29/01/2039	सूर्य	30/08/2052	चंद्र	30/07/2069	मंगल	09/08/2077
	22/12/2025	सूर्य	30/09/2039	चंद्र	31/07/2055	मंगल	09/01/2070	बुध	20/12/2079
सूर्य	13/08/2026	चंद्र	30/05/2041	मंगल	18/02/2057	बुध	20/12/2070	शनि	10/05/2081
चंद्र	03/04/2029	मंगल	20/04/2042	बुध	09/06/2060	शनि	11/07/2071	गुरु	30/12/2083
मंगल	30/08/2030	बुध	10/03/2044	शनि	21/05/2062	गुरु	30/07/2072	राहु	30/08/2085
बुध	26/08/2033	शनि	20/04/2045	गुरु	29/01/2066	राहु	31/03/2073	शुक्र	30/07/2088
शनि	31/05/2035	गुरु	31/05/2047	राहु	30/05/2068	शुक्र	31/05/2074	सूर्य	30/05/2089

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
30/05/2089		30/05/2097		01/06/2114		31/05/2124	
30/05/2097		01/06/2114		31/05/2124		00/00/0000	
मंगल	02/01/2090	बुध	02/02/2100	शनि	05/05/2115	गुरु	04/10/2127
बुध	07/04/2091	शनि	31/08/2101	गुरु	05/02/2117	राहु	13/11/2129
शनि	02/01/2092	गुरु	27/08/2104	राहु	18/03/2118	शुक्र	25/07/2133
गुरु	30/05/2093	राहु	18/07/2106	शुक्र	27/02/2120	सूर्य	23/12/2133
राहु	20/04/2094	शुक्र	06/11/2109	सूर्य	16/09/2120		00/00/0000
शुक्र	09/11/2095	सूर्य	17/10/2110	चंद्र	06/02/2122		00/00/0000
सूर्य	20/04/2096	चंद्र	26/02/2113	मंगल	03/11/2122		00/00/0000
चंद्र	30/05/2097	मंगल	01/06/2114	बुध	31/05/2124		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि	
22/12/2025		13/08/2026		03/04/2029		30/08/2030		26/08/2033	
13/08/2026		03/04/2029		30/08/2030		26/08/2033		31/05/2035	
	00/00/0000	चंद्र	25/12/2026	मंगल	11/05/2029	बुध	18/02/2031	शनि	25/10/2033
	00/00/0000	मंगल	06/03/2027	बुध	31/07/2029	शनि	30/05/2031	गुरु	15/02/2034
	22/12/2025	बुध	05/08/2027	शनि	17/09/2029	गुरु	08/12/2031	राहु	27/04/2034
बुध	04/01/2026	शनि	02/11/2027	गुरु	16/12/2029	राहु	08/04/2032	शुक्र	30/08/2034
शनि	08/02/2026	गुरु	20/04/2028	राहु	11/02/2030	शुक्र	06/11/2032	सूर्य	05/10/2034
गुरु	17/04/2026	राहु	05/08/2028	शुक्र	22/05/2030	सूर्य	06/01/2033	चंद्र	02/01/2035
राहु	30/05/2026	शुक्र	08/02/2029	सूर्य	20/06/2030	चंद्र	06/06/2033	मंगल	19/02/2035
शुक्र	13/08/2026	सूर्य	03/04/2029	चंद्र	30/08/2030	मंगल	26/08/2033	बुध	31/05/2035

राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
31/05/2035		29/09/2036		29/01/2039		30/09/2039		30/05/2041	
29/09/2036		29/01/2039		30/09/2039		30/05/2041		20/04/2042	
राहु	24/07/2035	शुक्र	14/03/2037	सूर्य	12/02/2039	चंद्र	23/12/2039	मंगल	23/06/2041
शुक्र	27/10/2035	सूर्य	30/04/2037	चंद्र	18/03/2039	मंगल	06/02/2040	बुध	14/08/2041
सूर्य	23/11/2035	चंद्र	26/08/2037	मंगल	05/04/2039	बुध	12/05/2040	शनि	13/09/2041
चंद्र	29/01/2036	मंगल	29/10/2037	बुध	13/05/2039	शनि	08/07/2040	गुरु	09/11/2041
मंगल	06/03/2036	बुध	12/03/2038	शनि	04/06/2039	गुरु	23/10/2040	राहु	15/12/2041
बुध	21/05/2036	शनि	30/05/2038	गुरु	17/07/2039	राहु	29/12/2040	शुक्र	16/02/2042
शनि	05/07/2036	गुरु	27/10/2038	राहु	13/08/2039	शुक्र	27/04/2041	सूर्य	06/03/2042
गुरु	29/09/2036	राहु	29/01/2039	शुक्र	30/09/2039	सूर्य	30/05/2041	चंद्र	20/04/2042

राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
20/04/2042		10/03/2044		20/04/2045		31/05/2047		30/06/2051	
10/03/2044		20/04/2045		31/05/2047		30/06/2051		30/08/2052	
बुध	07/08/2042	शनि	17/04/2044	गुरु	03/09/2045	शुक्र	16/03/2048	सूर्य	24/07/2051
शनि	10/10/2042	गुरु	27/06/2044	राहु	27/11/2045	सूर्य	07/06/2048	चंद्र	21/09/2051
गुरु	08/02/2043	राहु	11/08/2044	शुक्र	26/04/2046	चंद्र	31/12/2048	मंगल	23/10/2051
राहु	26/04/2043	शुक्र	29/10/2044	सूर्य	08/06/2046	मंगल	20/04/2049	बुध	29/12/2051
शुक्र	07/09/2043	सूर्य	21/11/2044	चंद्र	23/09/2046	बुध	11/12/2049	शनि	06/02/2052
सूर्य	15/10/2043	चंद्र	16/01/2045	मंगल	19/11/2046	शनि	28/04/2050	गुरु	21/04/2052
चंद्र	19/01/2044	मंगल	15/02/2045	बुध	21/03/2047	गुरु	16/01/2051	राहु	08/06/2052
मंगल	10/03/2044	बुध	20/04/2045	शनि	31/05/2047	राहु	30/06/2051	शुक्र	30/08/2052

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु	
30/08/2052		31/07/2055		18/02/2057		09/06/2060		21/05/2062	
31/07/2055		18/02/2057		09/06/2060		21/05/2062		29/01/2066	
चंद्र	24/01/2053	मंगल	11/09/2055	बुध	27/08/2057	शनि	14/08/2060	गुरु	13/01/2063
मंगल	13/04/2053	बुध	09/12/2055	शनि	17/12/2057	गुरु	17/12/2060	राहु	12/06/2063
बुध	28/09/2053	शनि	31/01/2056	गुरु	17/07/2058	राहु	06/03/2061	शुक्र	29/02/2064
शनि	05/01/2054	गुरु	10/05/2056	राहु	28/11/2058	शुक्र	22/07/2061	सूर्य	14/05/2064
गुरु	11/07/2054	राहु	12/07/2056	शुक्र	21/07/2059	सूर्य	31/08/2061	चंद्र	18/11/2064
राहु	06/11/2054	शुक्र	31/10/2056	सूर्य	26/09/2059	चंद्र	07/12/2061	मंगल	26/02/2065
शुक्र	02/06/2055	सूर्य	01/12/2056	चंद्र	12/03/2060	मंगल	29/01/2062	बुध	26/09/2065
सूर्य	31/07/2055	चंद्र	18/02/2057	मंगल	09/06/2060	बुध	21/05/2062	शनि	29/01/2066

शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध	
29/01/2066		30/05/2068		29/09/2068		30/07/2069		09/01/2070	
30/05/2068		29/09/2068		30/07/2069		09/01/2070		20/12/2070	
राहु	04/05/2066	सूर्य	06/06/2068	चंद्र	10/11/2068	मंगल	11/08/2069	बुध	04/03/2070
शुक्र	16/10/2066	चंद्र	23/06/2068	मंगल	03/12/2068	बुध	06/09/2069	शनि	05/04/2070
सूर्य	03/12/2066	मंगल	02/07/2068	बुध	20/01/2069	शनि	21/09/2069	गुरु	05/06/2070
चंद्र	31/03/2067	बुध	21/07/2068	शनि	17/02/2069	गुरु	19/10/2069	राहु	13/07/2070
मंगल	02/06/2067	शनि	01/08/2068	गुरु	11/04/2069	राहु	07/11/2069	शुक्र	18/09/2070
बुध	14/10/2067	गुरु	23/08/2068	राहु	15/05/2069	शुक्र	08/12/2069	सूर्य	07/10/2070
शनि	01/01/2068	राहु	05/09/2068	शुक्र	13/07/2069	सूर्य	17/12/2069	चंद्र	24/11/2070
गुरु	30/05/2068	शुक्र	29/09/2068	सूर्य	30/07/2069	चंद्र	09/01/2070	मंगल	20/12/2070

सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
20/12/2070		11/07/2071		30/07/2072		31/03/2073		31/05/2074	
11/07/2071		30/07/2072		31/03/2073		31/05/2074		30/06/2076	
शनि	07/01/2071	गुरु	16/09/2071	राहु	26/08/2072	शुक्र	21/06/2073	चंद्र	13/09/2074
गुरु	12/02/2071	राहु	29/10/2071	शुक्र	12/10/2072	सूर्य	15/07/2073	मंगल	09/11/2074
राहु	07/03/2071	शुक्र	12/01/2072	सूर्य	26/10/2072	चंद्र	12/09/2073	बुध	09/03/2075
शुक्र	15/04/2071	सूर्य	03/02/2072	चंद्र	29/11/2072	मंगल	14/10/2073	शनि	18/05/2075
सूर्य	26/04/2071	चंद्र	27/03/2072	मंगल	17/12/2072	बुध	20/12/2073	गुरु	29/09/2075
चंद्र	25/05/2071	मंगल	25/04/2072	बुध	24/01/2073	शनि	28/01/2074	राहु	22/12/2075
मंगल	09/06/2071	बुध	24/06/2072	शनि	16/02/2073	गुरु	13/04/2074	शुक्र	18/05/2076
बुध	11/07/2071	शनि	30/07/2072	गुरु	31/03/2073	राहु	31/05/2074	सूर्य	30/06/2076

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु	
30/06/2076		09/08/2077		20/12/2079		10/05/2081		30/12/2083	
09/08/2077		20/12/2079		10/05/2081		30/12/2083		30/08/2085	
मंगल	30/07/2076	बुध	23/12/2077	शनि	05/02/2080	गुरु	27/10/2081	राहु	07/03/2084
बुध	02/10/2076	शनि	13/03/2078	गुरु	04/05/2080	राहु	11/02/2082	शुक्र	03/07/2084
शनि	08/11/2076	गुरु	12/08/2078	राहु	29/06/2080	शुक्र	17/08/2082	सूर्य	06/08/2084
गुरु	19/01/2077	राहु	16/11/2078	शुक्र	06/10/2080	सूर्य	10/10/2082	चंद्र	29/10/2084
राहु	05/03/2077	शुक्र	02/05/2079	सूर्य	03/11/2080	चंद्र	21/02/2083	मंगल	13/12/2084
शुक्र	23/05/2077	सूर्य	19/06/2079	चंद्र	13/01/2081	मंगल	03/05/2083	बुध	19/03/2085
सूर्य	14/06/2077	चंद्र	17/10/2079	मंगल	19/02/2081	बुध	02/10/2083	शनि	15/05/2085
चंद्र	09/08/2077	मंगल	20/12/2079	बुध	10/05/2081	शनि	30/12/2083	गुरु	30/08/2085

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
30/08/2085		30/07/2088		30/05/2089		02/01/2090		07/04/2091	
30/07/2088		30/05/2089		02/01/2090		07/04/2091		02/01/2092	
शुक्र	25/03/2086	सूर्य	16/08/2088	मंगल	15/06/2089	बुध	15/03/2090	शनि	02/05/2091
सूर्य	23/05/2086	चंद्र	27/09/2088	बुध	20/07/2089	शनि	27/04/2090	गुरु	18/06/2091
चंद्र	18/10/2086	मंगल	20/10/2088	शनि	09/08/2089	गुरु	17/07/2090	राहु	19/07/2091
मंगल	05/01/2087	बुध	07/12/2088	गुरु	16/09/2089	राहु	06/09/2090	शुक्र	09/09/2091
बुध	22/06/2087	शनि	04/01/2089	राहु	10/10/2089	शुक्र	04/12/2090	सूर्य	24/09/2091
शनि	28/09/2087	गुरु	26/02/2089	शुक्र	21/11/2089	सूर्य	30/12/2090	चंद्र	01/11/2091
गुरु	03/04/2088	राहु	01/04/2089	सूर्य	03/12/2089	चंद्र	04/03/2091	मंगल	21/11/2091
राहु	30/07/2088	शुक्र	30/05/2089	चंद्र	02/01/2090	मंगल	07/04/2091	बुध	02/01/2092

मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
02/01/2092		30/05/2093		20/04/2094		09/11/2095		20/04/2096	
30/05/2093		20/04/2094		09/11/2095		20/04/2096		30/05/2097	
गुरु	02/04/2092	राहु	06/07/2093	शुक्र	09/08/2094	सूर्य	18/11/2095	चंद्र	15/06/2096
राहु	29/05/2092	शुक्र	07/09/2093	सूर्य	09/09/2094	चंद्र	11/12/2095	मंगल	15/07/2096
शुक्र	06/09/2092	सूर्य	25/09/2093	चंद्र	27/11/2094	मंगल	23/12/2095	बुध	17/09/2096
सूर्य	04/10/2092	चंद्र	09/11/2093	मंगल	08/01/2095	बुध	17/01/2096	शनि	25/10/2096
चंद्र	15/12/2092	मंगल	03/12/2093	बुध	08/04/2095	शनि	01/02/2096	गुरु	04/01/2097
मंगल	22/01/2093	बुध	23/01/2094	शनि	30/05/2095	गुरु	01/03/2096	राहु	18/02/2097
बुध	13/04/2093	शनि	22/02/2094	गुरु	07/09/2095	राहु	19/03/2096	शुक्र	08/05/2097
शनि	30/05/2093	गुरु	20/04/2094	राहु	09/11/2095	शुक्र	20/04/2096	सूर्य	30/05/2097

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र	
30/05/2097		02/02/2100		31/08/2101		27/08/2104		18/07/2106	
02/02/2100		31/08/2101		27/08/2104		18/07/2106		06/11/2109	
बुध	31/10/2097	शनि	27/03/2100	गुरु	11/03/2102	राहु	12/11/2104	शुक्र	10/03/2107
शनि	30/01/2098	गुरु	06/07/2100	राहु	10/07/2102	शुक्र	26/03/2105	सूर्य	16/05/2107
गुरु	21/07/2098	राहु	08/09/2100	शुक्र	08/02/2103	सूर्य	03/05/2105	चंद्र	31/10/2107
राहु	06/11/2098	शुक्र	29/12/2100	सूर्य	09/04/2103	चंद्र	07/08/2105	मंगल	28/01/2108
शुक्र	15/05/2099	सूर्य	30/01/2101	चंद्र	08/09/2103	मंगल	27/09/2105	बुध	05/08/2108
सूर्य	09/07/2099	चंद्र	20/04/2101	मंगल	28/11/2103	बुध	14/01/2106	शनि	25/11/2108
चंद्र	21/11/2099	मंगल	01/06/2101	बुध	18/05/2104	शनि	19/03/2106	गुरु	25/06/2109
मंगल	02/02/2100	बुध	31/08/2101	शनि	27/08/2104	गुरु	18/07/2106	राहु	06/11/2109

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु	
06/11/2109		17/10/2110		26/02/2113		01/06/2114		05/05/2115	
17/10/2110		26/02/2113		01/06/2114		05/05/2115		05/02/2117	
सूर्य	26/11/2109	चंद्र	14/02/2111	मंगल	01/04/2113	शनि	02/07/2114	गुरु	26/08/2115
चंद्र	12/01/2110	मंगल	19/04/2111	बुध	12/06/2113	गुरु	31/08/2114	राहु	05/11/2115
मंगल	07/02/2110	बुध	02/09/2111	शनि	25/07/2113	राहु	07/10/2114	शुक्र	09/03/2116
बुध	02/04/2110	शनि	21/11/2111	गुरु	14/10/2113	शुक्र	12/12/2114	सूर्य	14/04/2116
शनि	04/05/2110	गुरु	20/04/2112	राहु	04/12/2113	सूर्य	31/12/2114	चंद्र	12/07/2116
गुरु	04/07/2110	राहु	25/07/2112	शुक्र	03/03/2114	चंद्र	16/02/2115	मंगल	29/08/2116
राहु	11/08/2110	शुक्र	09/01/2113	सूर्य	29/03/2114	मंगल	13/03/2115	बुध	08/12/2116
शुक्र	17/10/2110	सूर्य	26/02/2113	चंद्र	01/06/2114	बुध	05/05/2115	शनि	05/02/2117

शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
05/02/2117		18/03/2118		27/02/2120		16/09/2120		06/02/2122	
18/03/2118		27/02/2120		16/09/2120		06/02/2122		03/11/2122	
राहु	23/03/2117	शुक्र	03/08/2118	सूर्य	09/03/2120	चंद्र	26/11/2120	मंगल	26/02/2122
शुक्र	09/06/2117	सूर्य	12/09/2118	चंद्र	06/04/2120	मंगल	02/01/2121	बुध	09/04/2122
सूर्य	02/07/2117	चंद्र	19/12/2118	मंगल	21/04/2120	बुध	23/03/2121	शनि	04/05/2122
चंद्र	27/08/2117	मंगल	10/02/2119	बुध	23/05/2120	शनि	09/05/2121	गुरु	21/06/2122
मंगल	26/09/2117	बुध	02/06/2119	शनि	11/06/2120	गुरु	07/08/2121	राहु	21/07/2122
बुध	29/11/2117	शनि	07/08/2119	गुरु	16/07/2120	राहु	02/10/2121	शुक्र	12/09/2122
शनि	06/01/2118	गुरु	10/12/2119	राहु	08/08/2120	शुक्र	09/01/2122	सूर्य	27/09/2122
गुरु	18/03/2118	राहु	27/02/2120	शुक्र	16/09/2120	सूर्य	06/02/2122	चंद्र	03/11/2122

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : संकटा 3 वर्ष 11 मास 1 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
22/12/2025		23/11/2029		23/11/2030		23/11/2032		23/11/2035	
23/11/2029		23/11/2030		23/11/2032		23/11/2035		23/11/2039	
	00/00/0000	मंग	03/12/2029	पिंग	03/01/2031	धांय	22/02/2033	भ्राम	04/05/2036
	00/00/0000	पिंग	23/12/2029	धांय	05/03/2031	भ्राम	24/06/2033	भद्रि	23/11/2036
	00/00/0000	धांय	23/01/2030	भ्राम	25/05/2031	भद्रि	23/11/2033	उल्क	24/07/2037
	00/00/0000	भ्राम	04/03/2030	भद्रि	03/09/2031	उल्क	25/05/2034	सिद्ध	04/05/2038
	22/12/2025	भद्रि	24/04/2030	उल्क	03/01/2032	सिद्ध	24/12/2034	संक	25/03/2039
भद्रि	03/01/2027	उल्क	24/06/2030	सिद्ध	24/05/2032	संक	24/08/2035	मंग	05/05/2039
उल्क	04/05/2028	सिद्ध	03/09/2030	संक	02/11/2032	मंग	24/09/2035	पिंग	25/07/2039
सिद्ध	23/11/2029	संक	23/11/2030	मंग	23/11/2032	पिंग	23/11/2035	धांय	23/11/2039

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
23/11/2039		23/11/2044		23/11/2050		23/11/2057		23/11/2065	
23/11/2044		23/11/2050		23/11/2057		23/11/2065		23/11/2066	
भद्रि	03/08/2040	उल्क	23/11/2045	सिद्ध	03/04/2052	संक	03/09/2059	मंग	03/12/2065
उल्क	04/06/2041	सिद्ध	23/01/2047	संक	24/10/2053	मंग	23/11/2059	पिंग	23/12/2065
सिद्ध	25/05/2042	संक	24/05/2048	मंग	03/01/2054	पिंग	04/05/2060	धांय	23/01/2066
संक	04/07/2043	मंग	24/07/2048	पिंग	25/05/2054	धांय	02/01/2061	भ्राम	04/03/2066
मंग	24/08/2043	पिंग	23/11/2048	धांय	24/12/2054	भ्राम	23/11/2061	भद्रि	24/04/2066
पिंग	04/12/2043	धांय	24/05/2049	भ्राम	04/10/2055	भद्रि	03/01/2063	उल्क	24/06/2066
धांय	04/05/2044	भ्राम	23/01/2050	भद्रि	23/09/2056	उल्क	04/05/2064	सिद्ध	03/09/2066
भ्राम	23/11/2044	भद्रि	23/11/2050	उल्क	23/11/2057	सिद्ध	23/11/2065	संक	23/11/2066

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
23/11/2066		23/11/2068		23/11/2071		23/11/2075		23/11/2080	
23/11/2068		23/11/2071		23/11/2075		23/11/2080		23/11/2086	
पिंग	03/01/2067	धांय	22/02/2069	भ्राम	04/05/2072	भद्रि	03/08/2076	उल्क	23/11/2081
धांय	05/03/2067	भ्राम	24/06/2069	भद्रि	23/11/2072	उल्क	04/06/2077	सिद्ध	23/01/2083
भ्राम	25/05/2067	भद्रि	23/11/2069	उल्क	24/07/2073	सिद्ध	25/05/2078	संक	24/05/2084
भद्रि	03/09/2067	उल्क	25/05/2070	सिद्ध	04/05/2074	संक	04/07/2079	मंग	24/07/2084
उल्क	03/01/2068	सिद्ध	24/12/2070	संक	25/03/2075	मंग	24/08/2079	पिंग	23/11/2084
सिद्ध	24/05/2068	संक	24/08/2071	मंग	05/05/2075	पिंग	04/12/2079	धांय	24/05/2085
संक	02/11/2068	मंग	24/09/2071	पिंग	25/07/2075	धांय	04/05/2080	भ्राम	23/01/2086
मंग	23/11/2068	पिंग	23/11/2071	धांय	23/11/2075	भ्राम	23/11/2080	भद्रि	23/11/2086

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
23/11/2086		23/11/2093		24/11/2101		24/11/2102		24/11/2104	
23/11/2093		24/11/2101		24/11/2102		24/11/2104		24/11/2107	
सिद्ध	03/04/2088	संक	03/09/2095	मंग	04/12/2101	पिंग	04/01/2103	धांय	23/02/2105
संक	24/10/2089	मंग	23/11/2095	पिंग	24/12/2101	धांय	06/03/2103	भ्राम	25/06/2105
मंग	03/01/2090	पिंग	04/05/2096	धांय	24/01/2102	भ्राम	26/05/2103	भद्रि	24/11/2105
पिंग	25/05/2090	धांय	02/01/2097	भ्राम	05/03/2102	भद्रि	04/09/2103	उल्क	26/05/2106
धांय	24/12/2090	भ्राम	23/11/2097	भद्रि	25/04/2102	उल्क	04/01/2104	सिद्ध	25/12/2106
भ्राम	04/10/2091	भद्रि	03/01/2099	उल्क	25/06/2102	सिद्ध	25/05/2104	संक	25/08/2107
भद्रि	23/09/2092	उल्क	05/05/2100	सिद्ध	04/09/2102	संक	03/11/2104	मंग	25/09/2107
उल्क	23/11/2093	सिद्ध	24/11/2101	संक	24/11/2102	मंग	24/11/2104	पिंग	24/11/2107

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
24/11/2107		24/11/2111		24/11/2116		24/11/2122		24/11/2129	
24/11/2111		24/11/2116		24/11/2122		24/11/2129		00/00/0000	
भ्राम	05/05/2108	भद्रि	04/08/2112	उल्क	24/11/2117	सिद्ध	04/04/2124	संक	04/09/2131
भद्रि	24/11/2108	उल्क	05/06/2113	सिद्ध	24/01/2119	संक	25/10/2125	मंग	24/11/2131
उल्क	25/07/2109	सिद्ध	26/05/2114	संक	25/05/2120	मंग	04/01/2126	पिंग	05/05/2132
सिद्ध	05/05/2110	संक	05/07/2115	मंग	25/07/2120	पिंग	26/05/2126	धांय	03/01/2133
संक	26/03/2111	मंग	25/08/2115	पिंग	24/11/2120	धांय	25/12/2126	भ्राम	24/11/2133
मंग	06/05/2111	पिंग	05/12/2115	धांय	25/05/2121	भ्राम	05/10/2127	भद्रि	23/12/2133
पिंग	26/07/2111	धांय	05/05/2116	भ्राम	24/01/2122	भद्रि	24/09/2128		00/00/0000
धांय	24/11/2111	भ्राम	24/11/2116	भद्रि	24/11/2122	उल्क	24/11/2129		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग	
22/12/2025		03/01/2027		04/05/2028		23/11/2029		03/12/2029	
03/01/2027		04/05/2028		23/11/2029		03/12/2029		23/12/2029	
भद्रि	18/01/2026	उल्क	25/03/2027	सिद्ध	22/08/2028	मंग	23/11/2029	पिंग	04/12/2029
उल्क	27/03/2026	सिद्ध	28/06/2027	संक	27/12/2028	पिंग	24/11/2029	धांय	06/12/2029
सिद्ध	14/06/2026	संक	14/10/2027	मंग	11/01/2029	धांय	25/11/2029	भ्राम	08/12/2029
संक	12/09/2026	मंग	27/10/2027	पिंग	12/02/2029	भ्राम	26/11/2029	भद्रि	11/12/2029
मंग	23/09/2026	पिंग	23/11/2027	धांय	31/03/2029	भद्रि	27/11/2029	उल्क	14/12/2029
पिंग	16/10/2026	धांय	03/01/2028	भ्राम	02/06/2029	उल्क	29/11/2029	सिद्ध	18/12/2029
धांय	19/11/2026	भ्राम	26/02/2028	भद्रि	20/08/2029	सिद्ध	01/12/2029	संक	23/12/2029
भ्राम	03/01/2027	भद्रि	04/05/2028	उल्क	23/11/2029	संक	03/12/2029	मंग	23/12/2029

मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध	
23/12/2029		23/01/2030		04/03/2030		24/04/2030		24/06/2030	
23/01/2030		04/03/2030		24/04/2030		24/06/2030		03/09/2030	
धांय	26/12/2029	भ्राम	27/01/2030	भद्रि	11/03/2030	उल्क	04/05/2030	सिद्ध	08/07/2030
भ्राम	29/12/2029	भद्रि	02/02/2030	उल्क	20/03/2030	सिद्ध	16/05/2030	संक	24/07/2030
भद्रि	03/01/2030	उल्क	09/02/2030	सिद्ध	30/03/2030	संक	30/05/2030	मंग	26/07/2030
उल्क	08/01/2030	सिद्ध	17/02/2030	संक	10/04/2030	मंग	31/05/2030	पिंग	30/07/2030
सिद्ध	14/01/2030	संक	26/02/2030	मंग	11/04/2030	पिंग	04/06/2030	धांय	04/08/2030
संक	20/01/2030	मंग	27/02/2030	पिंग	14/04/2030	धांय	09/06/2030	भ्राम	12/08/2030
मंग	21/01/2030	पिंग	01/03/2030	धांय	19/04/2030	भ्राम	16/06/2030	भद्रि	22/08/2030
पिंग	23/01/2030	धांय	04/03/2030	भ्राम	24/04/2030	भद्रि	24/06/2030	उल्क	03/09/2030

मंग - संक		पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि	
03/09/2030		23/11/2030		03/01/2031		05/03/2031		25/05/2031	
23/11/2030		03/01/2031		05/03/2031		25/05/2031		03/09/2031	
संक	21/09/2030	पिंग	25/11/2030	धांय	08/01/2031	भ्राम	14/03/2031	भद्रि	08/06/2031
मंग	23/09/2030	धांय	29/11/2030	भ्राम	15/01/2031	भद्रि	25/03/2031	उल्क	25/06/2031
पिंग	28/09/2030	भ्राम	03/12/2030	भद्रि	23/01/2031	उल्क	08/04/2031	सिद्ध	15/07/2031
धांय	05/10/2030	भद्रि	09/12/2030	उल्क	02/02/2031	सिद्ध	23/04/2031	संक	06/08/2031
भ्राम	14/10/2030	उल्क	16/12/2030	सिद्ध	14/02/2031	संक	11/05/2031	मंग	09/08/2031
भद्रि	25/10/2030	सिद्ध	24/12/2030	संक	28/02/2031	मंग	14/05/2031	पिंग	15/08/2031
उल्क	07/11/2030	संक	02/01/2031	मंग	01/03/2031	पिंग	18/05/2031	धांय	23/08/2031
सिद्ध	23/11/2030	मंग	03/01/2031	पिंग	05/03/2031	धांय	25/05/2031	भ्राम	03/09/2031

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय	
03/09/2031		03/01/2032		24/05/2032		02/11/2032		23/11/2032	
03/01/2032		24/05/2032		02/11/2032		23/11/2032		22/02/2033	
उल्क	24/09/2031	सिद्ध	31/01/2032	संक	29/06/2032	मंग	03/11/2032	धांय	30/11/2032
सिद्ध	17/10/2031	संक	02/03/2032	मंग	04/07/2032	पिंग	04/11/2032	भ्राम	10/12/2032
संक	13/11/2031	मंग	06/03/2032	पिंग	13/07/2032	धांय	06/11/2032	भद्रि	23/12/2032
मंग	17/11/2031	पिंग	14/03/2032	धांय	26/07/2032	भ्राम	08/11/2032	उल्क	07/01/2033
पिंग	23/11/2031	धांय	26/03/2032	भ्राम	13/08/2032	भद्रि	11/11/2032	सिद्ध	25/01/2033
धांय	04/12/2031	भ्राम	11/04/2032	भद्रि	05/09/2032	उल्क	14/11/2032	संक	14/02/2033
भ्राम	17/12/2031	भद्रि	30/04/2032	उल्क	02/10/2032	सिद्ध	18/11/2032	मंग	17/02/2033
भद्रि	03/01/2032	उल्क	24/05/2032	सिद्ध	02/11/2032	संक	23/11/2032	पिंग	22/02/2033

धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक	
22/02/2033		24/06/2033		23/11/2033		25/05/2034		24/12/2034	
24/06/2033		23/11/2033		25/05/2034		24/12/2034		24/08/2035	
भ्राम	08/03/2033	भद्रि	15/07/2033	उल्क	23/12/2033	सिद्ध	05/07/2034	संक	16/02/2035
भद्रि	24/03/2033	उल्क	09/08/2033	सिद्ध	28/01/2034	संक	21/08/2034	मंग	23/02/2035
उल्क	14/04/2033	सिद्ध	08/09/2033	संक	10/03/2034	मंग	27/08/2034	पिंग	08/03/2035
सिद्ध	07/05/2033	संक	12/10/2033	मंग	15/03/2034	पिंग	08/09/2034	धांय	28/03/2035
संक	04/06/2033	मंग	16/10/2033	पिंग	25/03/2034	धांय	26/09/2034	भ्राम	24/04/2035
मंग	07/06/2033	पिंग	24/10/2033	धांय	09/04/2034	भ्राम	20/10/2034	भद्रि	28/05/2035
पिंग	14/06/2033	धांय	06/11/2033	भ्राम	29/04/2034	भद्रि	18/11/2034	उल्क	08/07/2035
धांय	24/06/2033	भ्राम	23/11/2033	भद्रि	25/05/2034	उल्क	24/12/2034	सिद्ध	24/08/2035

धांय - मंग		धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क	
24/08/2035		24/09/2035		23/11/2035		04/05/2036		23/11/2036	
24/09/2035		23/11/2035		04/05/2036		23/11/2036		24/07/2037	
मंग	25/08/2035	पिंग	27/09/2035	भ्राम	12/12/2035	भद्रि	01/06/2036	उल्क	02/01/2037
पिंग	27/08/2035	धांय	02/10/2035	भद्रि	03/01/2036	उल्क	05/07/2036	सिद्ध	19/02/2037
धांय	29/08/2035	भ्राम	09/10/2035	उल्क	30/01/2036	सिद्ध	13/08/2036	संक	14/04/2037
भ्राम	02/09/2035	भद्रि	17/10/2035	सिद्ध	02/03/2036	संक	27/09/2036	मंग	21/04/2037
भद्रि	06/09/2035	उल्क	27/10/2035	संक	07/04/2036	मंग	03/10/2036	पिंग	04/05/2037
उल्क	11/09/2035	सिद्ध	08/11/2035	मंग	11/04/2036	पिंग	14/10/2036	धांय	24/05/2037
सिद्ध	17/09/2035	संक	22/11/2035	पिंग	20/04/2036	धांय	31/10/2036	भ्राम	20/06/2037
संक	24/09/2035	मंग	23/11/2035	धांय	04/05/2036	भ्राम	23/11/2036	भद्रि	24/07/2037

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृष 12 वर्ष 8 मास 5 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : उत्तराषाढ़ा - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष	
22/12/2025		28/08/2038		28/08/2045		28/08/2055		28/08/2059	
28/08/2038		28/08/2045		28/08/2055		28/08/2059		28/08/2063	
	22/12/2025	मेष	31/03/2039	मीन	11/11/2046	कुंभ	06/11/2055	मक	06/11/2059
मेष	02/02/2027	मीन	02/02/2040	कुंभ	06/05/2047	मक	16/01/2056	धनु	30/04/2060
मीन	06/01/2029	कुंभ	05/06/2040	मक	29/10/2047	धनु	10/07/2056	मेष	01/09/2060
कुंभ	15/10/2029	मक	06/10/2040	धनु	11/01/2049	मेष	10/11/2056	वृष	09/06/2061
मक	24/07/2030	धनु	10/08/2041	मेष	15/11/2049	वृष	19/08/2057	मिथु	15/11/2061
धनु	27/06/2032	मेष	14/03/2042	वृष	20/10/2051	मिथु	24/01/2058	वृष	23/08/2062
मेष	02/11/2033	वृष	19/07/2043	मिथु	19/11/2052	वृष	02/11/2058	मेष	25/12/2062
वृष	02/12/2036	मिथु	22/04/2044	वृष	24/10/2054	मेष	05/03/2059	मीन	19/06/2063
मिथु	28/08/2038	वृष	28/08/2045	मेष	28/08/2055	मीन	28/08/2059	कुंभ	28/08/2063

धनु 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष	
28/08/2063		28/08/2073		27/08/2080		27/08/2096		29/08/2105	
28/08/2073		27/08/2080		27/08/2096		29/08/2105		00/00/0000	
धनु	10/11/2064	मेष	31/03/2074	वृष	28/09/2083	मिथु	19/08/2097	वृष	28/09/2108
मेष	14/09/2065	वृष	06/08/2075	मिथु	23/06/2085	वृष	14/05/2099	मेष	23/12/2108
वृष	19/08/2067	मिथु	09/05/2076	वृष	23/07/2088	मेष	16/02/2100		00/00/0000
मिथु	18/09/2068	वृष	14/09/2077	मेष	28/11/2089	मीन	19/03/2101		00/00/0000
वृष	23/08/2070	मेष	18/04/2078	मीन	02/11/2091	कुंभ	24/08/2101		00/00/0000
मेष	27/06/2071	मीन	20/02/2079	कुंभ	10/08/2092	मक	30/01/2102		00/00/0000
मीन	10/09/2072	कुंभ	23/06/2079	मक	18/05/2093	धनु	02/03/2103		00/00/0000
कुंभ	05/03/2073	मक	24/10/2079	धनु	22/04/2095	मेष	04/12/2103		00/00/0000
मक	28/08/2073	धनु	27/08/2080	मेष	27/08/2096	वृष	29/08/2105		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मेष		वृष - मीन		वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु	
22/12/2025		02/02/2027		06/01/2029		15/10/2029		24/07/2030	
02/02/2027		06/01/2029		15/10/2029		24/07/2030		27/06/2032	
	22/12/2025	मीन	28/04/2027	कुंभ	20/01/2029	मक	29/10/2029	धनु	16/10/2030
मीन	06/01/2026	कुंभ	01/06/2027	मक	02/02/2029	धनु	01/12/2029	मेष	15/12/2030
कुंभ	30/01/2026	मक	05/07/2027	धनु	08/03/2029	मेष	25/12/2029	वृष	30/04/2031
मक	23/02/2026	धनु	28/09/2027	मेष	01/04/2029	वृष	18/02/2030	मिथु	15/07/2031
धनु	23/04/2026	मेष	26/11/2027	वृष	25/05/2029	मिथु	20/03/2030	वृष	28/11/2031
मेष	04/06/2026	वृष	10/04/2028	मिथु	25/06/2029	वृष	13/05/2030	मेष	26/01/2032
वृष	07/09/2026	मिथु	25/06/2028	वृष	18/08/2029	मेष	06/06/2030	मीन	20/04/2032
मिथु	30/10/2026	वृष	08/11/2028	मेष	11/09/2029	मीन	10/07/2030	कुंभ	24/05/2032
वृष	02/02/2027	मेष	06/01/2029	मीन	15/10/2029	कुंभ	24/07/2030	मक	27/06/2032

वृष - मेष		वृष - वृष		वृष - मिथु		मेष - मेष		मेष - मीन	
27/06/2032		02/11/2033		02/12/2036		28/08/2038		31/03/2039	
02/11/2033		02/12/2036		28/08/2038		31/03/2039		02/02/2040	
मेष	07/08/2032	वृष	07/06/2034	मिथु	09/02/2037	मेष	15/09/2038	मीन	08/05/2039
वृष	10/11/2032	मिथु	07/10/2034	वृष	11/06/2037	मीन	11/10/2038	कुंभ	22/05/2039
मिथु	03/01/2033	वृष	12/05/2035	मेष	03/08/2037	कुंभ	21/10/2038	मक	06/06/2039
वृष	08/04/2033	मेष	15/08/2035	मीन	19/10/2037	मक	01/11/2038	धनु	13/07/2039
मेष	19/05/2033	मीन	29/12/2035	कुंभ	18/11/2037	धनु	27/11/2038	मेष	08/08/2039
मीन	18/07/2033	कुंभ	21/02/2036	मक	19/12/2037	मेष	15/12/2038	वृष	07/10/2039
कुंभ	10/08/2033	मक	15/04/2036	धनु	05/03/2038	वृष	25/01/2039	मिथु	09/11/2039
मक	03/09/2033	धनु	29/08/2036	मेष	28/04/2038	मिथु	18/02/2039	वृष	07/01/2040
धनु	02/11/2033	मेष	02/12/2036	वृष	28/08/2038	वृष	31/03/2039	मेष	02/02/2040

मेष - कुंभ		मेष - मक		मेष - धनु		मेष - मेष		मेष - वृष	
02/02/2040		05/06/2040		06/10/2040		10/08/2041		14/03/2042	
05/06/2040		06/10/2040		10/08/2041		14/03/2042		19/07/2043	
कुंभ	08/02/2040	मक	11/06/2040	धनु	12/11/2040	मेष	28/08/2041	वृष	17/06/2042
मक	14/02/2040	धनु	25/06/2040	मेष	08/12/2040	वृष	09/10/2041	मिथु	09/08/2042
धनु	29/02/2040	मेष	06/07/2040	वृष	05/02/2041	मिथु	01/11/2041	वृष	12/11/2042
मेष	11/03/2040	वृष	30/07/2040	मिथु	11/03/2041	वृष	13/12/2041	मेष	24/12/2042
वृष	03/04/2040	मिथु	12/08/2040	वृष	09/05/2041	मेष	31/12/2041	मीन	21/02/2043
मिथु	17/04/2040	वृष	05/09/2040	मेष	04/06/2041	मीन	26/01/2042	कुंभ	17/03/2043
वृष	10/05/2040	मेष	15/09/2040	मीन	11/07/2041	कुंभ	05/02/2042	मक	09/04/2043
मेष	21/05/2040	मीन	30/09/2040	कुंभ	26/07/2041	मक	16/02/2042	धनु	08/06/2043
मीन	05/06/2040	कुंभ	06/10/2040	मक	10/08/2041	धनु	14/03/2042	मेष	19/07/2043

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - मिथु		मेष - वृष		मीन - मीन		मीन - कुंभ		मीन - मक	
19/07/2043		22/04/2044		28/08/2045		11/11/2046		06/05/2047	
22/04/2044		28/08/2045		11/11/2046		06/05/2047		29/10/2047	
मिथु	19/08/2043	वृष	26/07/2044	मीन	20/10/2045	कुंभ	19/11/2046	मक	14/05/2047
वृष	11/10/2043	मेष	05/09/2044	कुंभ	10/11/2045	मक	28/11/2046	धनु	04/06/2047
मेष	03/11/2043	मीन	04/11/2044	मक	01/12/2045	धनु	19/12/2046	मेष	19/06/2047
मीन	07/12/2043	कुंभ	27/11/2044	धनु	23/01/2046	मेष	03/01/2047	वृष	23/07/2047
कुंभ	20/12/2043	मक	21/12/2044	मेष	01/03/2046	वृष	06/02/2047	मिथु	11/08/2047
मक	02/01/2044	धनु	19/02/2045	वृष	25/05/2046	मिथु	25/02/2047	वृष	14/09/2047
धनु	05/02/2044	मेष	01/04/2045	मिथु	12/07/2046	वृष	31/03/2047	मेष	29/09/2047
मेष	28/02/2044	वृष	05/07/2045	वृष	04/10/2046	मेष	14/04/2047	मीन	20/10/2047
वृष	22/04/2044	मिथु	28/08/2045	मेष	11/11/2046	मीन	06/05/2047	कुंभ	29/10/2047

मीन - धनु		मीन - मेष		मीन - वृष		मीन - मिथु		मीन - वृष	
29/10/2047		11/01/2049		15/11/2049		20/10/2051		19/11/2052	
11/01/2049		15/11/2049		20/10/2051		19/11/2052		24/10/2054	
धनु	21/12/2047	मेष	06/02/2049	वृष	30/03/2050	मिथु	02/12/2051	वृष	04/04/2053
मेष	27/01/2048	वृष	06/04/2049	मिथु	15/06/2050	वृष	16/02/2052	मेष	02/06/2053
वृष	21/04/2048	मिथु	09/05/2049	वृष	29/10/2050	मेष	21/03/2052	मीन	26/08/2053
मिथु	07/06/2048	वृष	08/07/2049	मेष	27/12/2050	मीन	07/05/2052	कुंभ	29/09/2053
वृष	31/08/2048	मेष	03/08/2049	मीन	22/03/2051	कुंभ	26/05/2052	मक	02/11/2053
मेष	07/10/2048	मीन	09/09/2049	कुंभ	25/04/2051	मक	14/06/2052	धनु	26/01/2054
मीन	29/11/2048	कुंभ	24/09/2049	मक	29/05/2051	धनु	01/08/2052	मेष	26/03/2054
कुंभ	21/12/2048	मक	09/10/2049	धनु	21/08/2051	मेष	04/09/2052	वृष	09/08/2054
मक	11/01/2049	धनु	15/11/2049	मेष	20/10/2051	वृष	19/11/2052	मिथु	24/10/2054

मीन - मेष		कुंभ - कुंभ		कुंभ - मक		कुंभ - धनु		कुंभ - मेष	
24/10/2054		28/08/2055		06/11/2055		16/01/2056		10/07/2056	
28/08/2055		06/11/2055		16/01/2056		10/07/2056		10/11/2056	
मेष	19/11/2054	कुंभ	31/08/2055	मक	10/11/2055	धनु	06/02/2056	मेष	20/07/2056
मीन	26/12/2054	मक	04/09/2055	धनु	18/11/2055	मेष	21/02/2056	वृष	13/08/2056
कुंभ	10/01/2055	धनु	12/09/2055	मेष	24/11/2055	वृष	26/03/2056	मिथु	26/08/2056
मक	25/01/2055	मेष	18/09/2055	वृष	08/12/2055	मिथु	14/04/2056	वृष	19/09/2056
धनु	03/03/2055	वृष	02/10/2055	मिथु	15/12/2055	वृष	18/05/2056	मेष	30/09/2056
मेष	29/03/2055	मिथु	09/10/2055	वृष	29/12/2055	मेष	02/06/2056	मीन	14/10/2056
वृष	27/05/2055	वृष	23/10/2055	मेष	04/01/2056	मीन	23/06/2056	कुंभ	20/10/2056
मिथु	30/06/2055	मेष	29/10/2055	मीन	12/01/2056	कुंभ	01/07/2056	मक	26/10/2056
वृष	28/08/2055	मीन	06/11/2055	कुंभ	16/01/2056	मक	10/07/2056	धनु	10/11/2056

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 7 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 7 वर्ष	
22/12/2025	
22/12/2032	
मेष	23/07/2026
मीन	21/02/2027
कुंभ	22/09/2027
मक	22/04/2028
धनु	22/11/2028
वृश्चि	23/06/2029
तुला	22/01/2030
कन्या	23/08/2030
सिंह	24/03/2031
कर्क	23/10/2031
मिथु	23/05/2032
वृष	22/12/2032

मेष 8 वर्ष	
22/12/2032	
22/12/2040	
वृष	22/08/2033
मिथु	23/04/2034
कर्क	22/12/2034
सिंह	23/08/2035
कन्या	22/04/2036
तुला	22/12/2036
वृश्चि	22/08/2037
धनु	23/04/2038
मक	22/12/2038
कुंभ	23/08/2039
मीन	22/04/2040
मेष	22/12/2040

मीन 9 वर्ष	
22/12/2040	
22/12/2049	
मेष	22/09/2041
वृष	23/06/2042
मिथु	24/03/2043
कर्क	23/12/2043
सिंह	22/09/2044
कन्या	23/06/2045
तुला	24/03/2046
वृश्चि	22/12/2046
धनु	22/09/2047
मक	22/06/2048
कुंभ	23/03/2049
मीन	22/12/2049

कुम्भ 11 वर्ष	
22/12/2049	
22/12/2060	
मीन	22/11/2050
मेष	23/10/2051
वृष	22/09/2052
मिथु	22/08/2053
कर्क	23/07/2054
सिंह	23/06/2055
कन्या	23/05/2056
तुला	23/04/2057
वृश्चि	24/03/2058
धनु	21/02/2059
मक	22/01/2060
कुंभ	22/12/2060

मकर 10 वर्ष	
22/12/2060	
22/12/2070	
धनु	22/10/2061
वृश्चि	23/08/2062
तुला	23/06/2063
कन्या	22/04/2064
सिंह	21/02/2065
कर्क	22/12/2065
मिथु	23/10/2066
वृष	23/08/2067
मेष	22/06/2068
मीन	23/04/2069
कुंभ	21/02/2070
मक	22/12/2070

धनु 6 वर्ष	
22/12/2070	
22/12/2076	
वृश्चि	23/06/2071
तुला	23/12/2071
कन्या	22/06/2072
सिंह	22/12/2072
कर्क	23/06/2073
मिथु	22/12/2073
वृष	23/06/2074
मेष	22/12/2074
मीन	23/06/2075
कुंभ	23/12/2075
मक	22/06/2076
धनु	22/12/2076

वृश्चिक 1 वर्ष	
22/12/2076	
22/12/2077	
तुला	21/01/2077
कन्या	21/02/2077
सिंह	23/03/2077
कर्क	23/04/2077
मिथु	23/05/2077
वृष	23/06/2077
मेष	23/07/2077
मीन	22/08/2077
कुंभ	22/09/2077
मक	22/10/2077
धनु	22/11/2077
वृश्चि	22/12/2077

तुला 2 वर्ष	
22/12/2077	
23/12/2079	
वृश्चि	21/02/2078
धनु	23/04/2078
मक	23/06/2078
कुंभ	23/08/2078
मीन	23/10/2078
मेष	22/12/2078
वृष	21/02/2079
मिथु	23/04/2079
कर्क	23/06/2079
सिंह	23/08/2079
कन्या	23/10/2079
तुला	23/12/2079

कन्या 10 वर्ष	
23/12/2079	
22/12/2089	
तुला	22/10/2080
वृश्चि	22/08/2081
धनु	23/06/2082
मक	23/04/2083
कुंभ	22/02/2084
मीन	22/12/2084
मेष	22/10/2085
वृष	23/08/2086
मिथु	23/06/2087
कर्क	22/04/2088
सिंह	21/02/2089
कन्या	22/12/2089

सिंह 8 वर्ष	
22/12/2089	
22/12/2097	
कन्या	23/08/2090
तुला	23/04/2091
वृश्चि	23/12/2091
धनु	22/08/2092
मक	23/04/2093
कुंभ	22/12/2093
मीन	23/08/2094
मेष	23/04/2095
वृष	23/12/2095
मिथु	22/08/2096
कर्क	23/04/2097
सिंह	22/12/2097

कर्क 6 वर्ष	
22/12/2097	
24/12/2103	
मिथु	23/06/2098
वृष	22/12/2098
मेष	23/06/2099
मीन	23/12/2099
कुंभ	23/06/2100
मक	23/12/2100
धनु	24/06/2101
वृश्चि	23/12/2101
तुला	24/06/2102
कन्या	23/12/2102
सिंह	24/06/2103
कर्क	24/12/2103

मिथुन 5 वर्ष	
24/12/2103	
23/12/2108	
वृष	24/05/2104
मेष	23/10/2104
मीन	24/03/2105
कुंभ	23/08/2105
मक	23/01/2106
धनु	24/06/2106
वृश्चि	23/11/2106
तुला	24/04/2107
कन्या	23/09/2107
सिंह	23/02/2108
कर्क	24/07/2108
मिथु	23/12/2108

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मेष		वृष - मीन		वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु	
22/12/2025		23/07/2026		21/02/2027		22/09/2027		22/04/2028	
23/07/2026		21/02/2027		22/09/2027		22/04/2028		22/11/2028	
वृष	09/01/2026	मेष	10/08/2026	मीन	11/03/2027	धनु	10/10/2027	वृश्चि	10/05/2028
मिथु	27/01/2026	वृष	28/08/2026	मेष	29/03/2027	वृश्चि	28/10/2027	तुला	28/05/2028
कर्क	13/02/2026	मिथु	15/09/2026	वृष	16/04/2027	तुला	15/11/2027	कन्या	15/06/2028
सिंह	03/03/2026	कर्क	02/10/2026	मिथु	03/05/2027	कन्या	02/12/2027	सिंह	02/07/2028
कन्या	21/03/2026	सिंह	20/10/2026	कर्क	21/05/2027	सिंह	20/12/2027	कर्क	20/07/2028
तुला	08/04/2026	कन्या	07/11/2026	सिंह	08/06/2027	कर्क	07/01/2028	मिथु	07/08/2028
वृश्चि	25/04/2026	तुला	25/11/2026	कन्या	26/06/2027	मिथु	25/01/2028	वृष	25/08/2028
धनु	13/05/2026	वृश्चि	12/12/2026	तुला	13/07/2027	वृष	11/02/2028	मेष	11/09/2028
मक	31/05/2026	धनु	30/12/2026	वृश्चि	31/07/2027	मेष	29/02/2028	मीन	29/09/2028
कुंभ	18/06/2026	मक	17/01/2027	धनु	18/08/2027	मीन	18/03/2028	कुंभ	17/10/2028
मीन	06/07/2026	कुंभ	04/02/2027	मक	05/09/2027	कुंभ	05/04/2028	मक	04/11/2028
मेष	23/07/2026	मीन	21/02/2027	कुंभ	22/09/2027	मक	22/04/2028	धनु	22/11/2028

वृष - वृश्चि		वृष - तुला		वृष - कन्या		वृष - सिंह		वृष - कर्क	
22/11/2028		23/06/2029		22/01/2030		23/08/2030		24/03/2031	
23/06/2029		22/01/2030		23/08/2030		24/03/2031		23/10/2031	
तुला	09/12/2028	वृश्चि	10/07/2029	तुला	08/02/2030	कन्या	09/09/2030	मिथु	11/04/2031
कन्या	27/12/2028	धनु	28/07/2029	वृश्चि	26/02/2030	तुला	27/09/2030	वृष	28/04/2031
सिंह	14/01/2029	मक	15/08/2029	धनु	16/03/2030	वृश्चि	15/10/2030	मेष	16/05/2031
कर्क	01/02/2029	कुंभ	02/09/2029	मक	03/04/2030	धनु	02/11/2030	मीन	03/06/2031
मिथु	18/02/2029	मीन	19/09/2029	कुंभ	20/04/2030	मक	19/11/2030	कुंभ	21/06/2031
वृष	08/03/2029	मेष	07/10/2029	मीन	08/05/2030	कुंभ	07/12/2030	मक	08/07/2031
मेष	26/03/2029	वृष	25/10/2029	मेष	26/05/2030	मीन	25/12/2030	धनु	26/07/2031
मीन	13/04/2029	मिथु	12/11/2029	वृष	13/06/2030	मेष	12/01/2031	वृश्चि	13/08/2031
कुंभ	30/04/2029	कर्क	29/11/2029	मिथु	30/06/2030	वृष	29/01/2031	तुला	31/08/2031
मक	18/05/2029	सिंह	17/12/2029	कर्क	18/07/2030	मिथु	16/02/2031	कन्या	17/09/2031
धनु	05/06/2029	कन्या	04/01/2030	सिंह	05/08/2030	कर्क	06/03/2031	सिंह	05/10/2031
वृश्चि	23/06/2029	तुला	22/01/2030	कन्या	23/08/2030	सिंह	24/03/2031	कर्क	23/10/2031

वृष - मिथु		वृष - वृष		मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - कर्क	
23/10/2031		23/05/2032		22/12/2032		22/08/2033		23/04/2034	
23/05/2032		22/12/2032		22/08/2033		23/04/2034		22/12/2034	
वृष	10/11/2031	मेष	10/06/2032	मेष	11/01/2033	वृष	12/09/2033	मिथु	13/05/2034
मेष	27/11/2031	मीन	27/06/2032	मीन	01/02/2033	मेष	02/10/2033	वृष	03/06/2034
मीन	15/12/2031	कुंभ	15/07/2032	कुंभ	21/02/2033	मीन	22/10/2033	मेष	23/06/2034
कुंभ	02/01/2032	मक	02/08/2032	मक	13/03/2033	कुंभ	12/11/2033	मीन	13/07/2034
मक	20/01/2032	धनु	20/08/2032	धनु	02/04/2033	मक	02/12/2033	कुंभ	02/08/2034
धनु	06/02/2032	वृश्चि	06/09/2032	वृश्चि	23/04/2033	धनु	22/12/2033	मक	23/08/2034
वृश्चि	24/02/2032	तुला	24/09/2032	तुला	13/05/2033	वृश्चि	11/01/2034	धनु	12/09/2034
तुला	13/03/2032	कन्या	12/10/2032	कन्या	02/06/2033	तुला	01/02/2034	वृश्चि	02/10/2034
कन्या	31/03/2032	सिंह	30/10/2032	सिंह	23/06/2033	कन्या	21/02/2034	तुला	23/10/2034
सिंह	17/04/2032	कर्क	16/11/2032	कर्क	13/07/2033	सिंह	13/03/2034	कन्या	12/11/2034
कर्क	05/05/2032	मिथु	04/12/2032	मिथु	02/08/2033	कर्क	03/04/2034	सिंह	02/12/2034
मिथु	23/05/2032	वृष	22/12/2032	वृष	22/08/2033	मिथु	23/04/2034	कर्क	22/12/2034

चर दशा - प्रत्यन्तर

मेष - सिंह		मेष - कन्या		मेष - तुला		मेष - वृश्चि		मेष - धनु	
22/12/2034		23/08/2035		22/04/2036		22/12/2036		22/08/2037	
23/08/2035		22/04/2036		22/12/2036		22/08/2037		23/04/2038	
कन्या	12/01/2035	तुला	12/09/2035	वृश्चि	13/05/2036	तुला	11/01/2037	वृश्चि	12/09/2037
तुला	01/02/2035	वृश्चि	03/10/2035	धनु	02/06/2036	कन्या	01/02/2037	तुला	02/10/2037
वृश्चि	21/02/2035	धनु	23/10/2035	मक	22/06/2036	सिंह	21/02/2037	कन्या	22/10/2037
धनु	14/03/2035	मक	12/11/2035	कुंभ	13/07/2036	कर्क	13/03/2037	सिंह	12/11/2037
मक	03/04/2035	कुंभ	02/12/2035	मीन	02/08/2036	मिथु	02/04/2037	कर्क	02/12/2037
कुंभ	23/04/2035	मीन	23/12/2035	मेष	22/08/2036	वृष	23/04/2037	मिथु	22/12/2037
मीन	13/05/2035	मेष	12/01/2036	वृष	11/09/2036	मेष	13/05/2037	वृष	11/01/2038
मेष	03/06/2035	वृष	01/02/2036	मिथु	02/10/2036	मीन	02/06/2037	मेष	01/02/2038
वृष	23/06/2035	मिथु	22/02/2036	कर्क	22/10/2036	कुंभ	23/06/2037	मीन	21/02/2038
मिथु	13/07/2035	कर्क	13/03/2036	सिंह	11/11/2036	मक	13/07/2037	कुंभ	13/03/2038
कर्क	03/08/2035	सिंह	02/04/2036	कन्या	02/12/2036	धनु	02/08/2037	मक	03/04/2038
सिंह	23/08/2035	कन्या	22/04/2036	तुला	22/12/2036	वृश्चि	22/08/2037	धनु	23/04/2038

मेष - मक		मेष - कुंभ		मेष - मीन		मेष - मेष		मीन - मेष	
23/04/2038		22/12/2038		23/08/2039		22/04/2040		22/12/2040	
22/12/2038		23/08/2039		22/04/2040		22/12/2040		22/09/2041	
धनु	13/05/2038	मीन	12/01/2039	मेष	12/09/2039	वृष	13/05/2040	वृष	14/01/2041
वृश्चि	03/06/2038	मेष	01/02/2039	वृष	03/10/2039	मिथु	02/06/2040	मिथु	06/02/2041
तुला	23/06/2038	वृष	21/02/2039	मिथु	23/10/2039	कर्क	22/06/2040	कर्क	28/02/2041
कन्या	13/07/2038	मिथु	14/03/2039	कर्क	12/11/2039	सिंह	13/07/2040	सिंह	23/03/2041
सिंह	02/08/2038	कर्क	03/04/2039	सिंह	02/12/2039	कन्या	02/08/2040	कन्या	15/04/2041
कर्क	23/08/2038	सिंह	23/04/2039	कन्या	23/12/2039	तुला	22/08/2040	तुला	08/05/2041
मिथु	12/09/2038	कन्या	13/05/2039	तुला	12/01/2040	वृश्चि	11/09/2040	वृश्चि	31/05/2041
वृष	02/10/2038	तुला	03/06/2039	वृश्चि	01/02/2040	धनु	02/10/2040	धनु	23/06/2041
मेष	23/10/2038	वृश्चि	23/06/2039	धनु	22/02/2040	मक	22/10/2040	मक	15/07/2041
मीन	12/11/2038	धनु	13/07/2039	मक	13/03/2040	कुंभ	11/11/2040	कुंभ	07/08/2041
कुंभ	02/12/2038	मक	03/08/2039	कुंभ	02/04/2040	मीन	02/12/2040	मीन	30/08/2041
मक	22/12/2038	कुंभ	23/08/2039	मीन	22/04/2040	मेष	22/12/2040	मेष	22/09/2041

मीन - वृष		मीन - मिथु		मीन - कर्क		मीन - सिंह		मीन - कन्या	
22/09/2041		23/06/2042		24/03/2043		23/12/2043		22/09/2044	
23/06/2042		24/03/2043		23/12/2043		22/09/2044		23/06/2045	
मेष	15/10/2041	वृष	16/07/2042	मिथु	16/04/2043	कन्या	15/01/2044	तुला	14/10/2044
मीन	07/11/2041	मेष	07/08/2042	वृष	08/05/2043	तुला	06/02/2044	वृश्चि	06/11/2044
कुंभ	29/11/2041	मीन	30/08/2042	मेष	31/05/2043	वृश्चि	29/02/2044	धनु	29/11/2044
मक	22/12/2041	कुंभ	22/09/2042	मीन	23/06/2043	धनु	23/03/2044	मक	22/12/2044
धनु	14/01/2042	मक	15/10/2042	कुंभ	16/07/2043	मक	15/04/2044	कुंभ	14/01/2045
वृश्चि	06/02/2042	धनु	07/11/2042	मक	08/08/2043	कुंभ	08/05/2044	मीन	06/02/2045
तुला	01/03/2042	वृश्चि	30/11/2042	धनु	31/08/2043	मीन	30/05/2044	मेष	28/02/2045
कन्या	24/03/2042	तुला	22/12/2042	वृश्चि	22/09/2043	मेष	22/06/2044	वृष	23/03/2045
सिंह	15/04/2042	कन्या	14/01/2043	तुला	15/10/2043	वृष	15/07/2044	मिथु	15/04/2045
कर्क	08/05/2042	सिंह	06/02/2043	कन्या	07/11/2043	मिथु	07/08/2044	कर्क	08/05/2045
मिथु	31/05/2042	कर्क	01/03/2043	सिंह	30/11/2043	कर्क	30/08/2044	सिंह	31/05/2045
वृष	23/06/2042	मिथु	24/03/2043	कर्क	23/12/2043	सिंह	22/09/2044	कन्या	23/06/2045

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	86%	दम्पति, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	83%	धनार्जन, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
मोती	चंद्र	62%	भाग्योदय, पराक्रम
हीरा	शुक्र	50%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
माणिक्य	सूर्य	41%	दुर्घटना, ग्रह कलेश
लहसुनिया	केतु	28%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	22%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	0%	दुर्घटना, व्यय, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

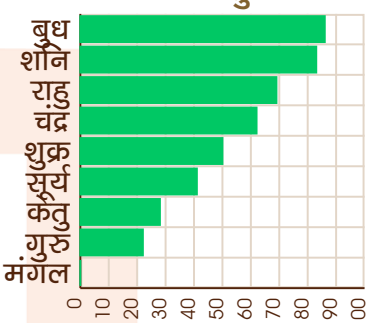

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	30/11/2028	58%	69%	0%	86%	34%	25%	70%	56%	3%
चंद्र	01/12/2038	52%	75%	0%	92%	22%	50%	83%	56%	3%
मंगल	30/11/2045	52%	69%	0%	73%	34%	50%	83%	56%	41%
राहु	01/12/2063	16%	50%	0%	86%	22%	56%	89%	81%	3%
गुरु	01/12/2079	52%	69%	0%	73%	47%	25%	83%	69%	28%
शनि	01/12/2098	16%	50%	0%	92%	22%	56%	95%	75%	3%
बुध	02/12/2115	52%	50%	0%	98%	22%	56%	83%	69%	28%
केतु	02/12/2122	16%	50%	0%	86%	22%	56%	70%	56%	52%
शुक्र	02/12/2142	16%	50%	0%	92%	22%	62%	89%	75%	41%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, मोती एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य व लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पुखराज व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको धनवान बनाएगा। रत्न शुभता से आपका विवाह कुलीन परिवार में होगा। यह रत्न आपको उदार और धार्मिक प्रवृति का रखेगा। आपके लिये यह शुभ रत्न होने के कारण इसे धारण कर आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते है। पन्ना आपको शिल्पकला में निपुण, चतुर और विनोदी बनाएगा। रत्न शुभता से आप एक कुशल व्यवसायी बनेंगे। क्रय-विक्रय विषयों से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यावसायिक साझेदारी से आपके अनुकूल फल प्राप्त होंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। पन्ना रत्न आपको उद्धोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है. तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यो से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप निर्लोभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र

के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते है। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते है। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते है। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं

जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र नवम भाव में स्थित है। चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। मोती रत्न शुभता से आप विद्वान और साहसी बनेंगे। भाग्य वृद्धि में भी मोती रत्न अनुकूल फल प्रदान करेगा। रत्न शुभता से आप अपने जीवनकाल में पर्याप्त संपत्ति अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपको यात्राओं के माध्यम से भी लाभ प्राप्त हो सकते है। मोती रत्न की शुभता से आपकी धार्मिक विचारधारा प्रबल होगी। धर्म क्रियाओं में पहले से अधिक श्रद्धा और विश्वास बनेगा। मोती रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको विदेश यात्राओं से लाभ देगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र आपके लिए पराक्रमेश है। चंद्र ग्रह की शुभता बढ़ाने और इनके साथ बन रहे अशुभ योगों को निष्फल करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न आपके पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहनों से सहयोग, विद्या-बुद्धि एवं संतान सुख दे सकता है। शुभ मोती आपको प्रसन्नचित्त रख सकता है। मोती रत्न से भाग्योदय तथा धर्मपालन में सहयोग प्राप्त किया जा सकता है. तृतीयेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र ग्रह को शक्तिशाली बना सकते है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। शुक्र रत्न हीरा आपको निडर और प्रसन्नचित्त बनायेगा। रत्न शुभता से आप

विद्वान, मनस्वी, धर्मात्मा और सदाचारी बनेंगे। रत्न शुभता आपको शारीरिक, आर्थिक अथवा ग्रहस्थ सुख देगी। आपको किसी स्त्री के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। हीरा रत्न आपको किसी ट्रस्ट के माध्यम से धनलाभ करा सकता है। आपको विदेश यात्रा करने के अवसर प्राप्त होंगे। सेवकों और वाहनों से प्राप्त सुख में बढ़ोतरी होगी। हीरा शेयर बाजार में विनियोजन से लाभ देगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते है.

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते है। ह्रदय रोग भी यह रत्न आपक दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते है। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। कुंडली में बन रहे योग सूर्य की शुभता में कमी कर रहे है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप अपने यश, कीर्ति व प्रसिद्धि के लिए विशेष सतर्क हो सकते है। आपको वाहनों के द्वारा कष्ट

प्राप्त हो सकते है। भूमि एवं भवन के विषय आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपमें संवेदनाओं की कमी हो सकती है। ह्द्रय की कठोरता समाज में आपके सम्मान में कमी कर सकती है। ह्द्रय संबंधी रोगों का आपको सामना करना पड़ सकता है। रत्न की प्रतिकूलता आपके विद्या क्षेत्र में भी बनी हुई है। अपने पद, सम्मान और आर्थिक स्थिति को लेकर आपमें अहंकार भाव आ सकता है। आपको भौतिक सुख-सुविधाओं के सुख भोगने के अवसर पर्याप्त नहीं मिल पाएंगे।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु लहसुनिया रत्न धारण करने से आप सत्यभाव से विमुख हो सकते है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आप कुछ कठोर हो सकते है। कार्यो में आपके द्वारा लापरवाही हो सकती है। यह रत्न आपके जीवन के अनेक प्रकार के दुःखों का कारण बन सकता है। दूसरों की आलोचना में आप आनंन्द का अनुभव करेंगे। मित्रों के द्वारा आपको कई प्रकार के कष्ट मिल सकते है। आपको आलोचना का सामना करना पड़ सकता है। आपके अंदर उत्साह की कमी हो सकती है। पैतृक धन का विनाश हो सकता है। लहसुनिया रत्न से धनार्जन के लिए आपको देशि-विदेश भटकना पड सकता है। आर्थिक विपन्नता आपको परेशान कर सकती है।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः पुखराज रत्न को धारण करने पर आपको टैक्स निर्धारण की त्रुटि के कारण परेशानी हो सकती है। आर्थिक स्थिति में गिरावट की स्थिति बन सकती है। सरकारी वसूली आपके धैर्य और विवेक को प्रभावित कर सकती है। उद्धोग धंधों की मनोकूल प्रगति नहीं हो पाएगी। यह रत्न सोना, चांदी, सरकारी नौकरी, कानूनी काम, बैंक, शिक्षा संस्थान, देवालय, धर्म संस्था आदि माध्यमों से आपको धन और यश की हानि करा सकता है। धन संग्रह और संचय में सामान्य से अधिक प्रयास करने पड़ सकते है। वाणी में विनम्रता का अभाव आ सकता है। आप सम्मान के प्रति विशेष सजग रहेंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्ट्मेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज

धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

मूंगा

आपकी कुंड़ली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपका अपना ससुराल पक्ष से संबंध खराब हो सकते है। यह रत्न आपको बहुत अनुकूल परिणाम नहीं दे पाएगा। रत्न धारण करने पर शुभचिंतको के द्वारा भी आपका भला नहीं हो पाएगा। रत्न धारण करने पर संभव है कि कानून नियमों के अन्तर्गत रहकर आप अपना जीवनयापन न कर पायें। मूंगा रत्न आपको गुदा संबंधित रोग दे सकता है। रत्न के कारण आपके शरीर में फोडे फुंसी या घाव होने के योग भी बन सकते है। मूंगा धारण करने पर आपको दुर्घटनाओं, आग और चोरी की वजह से धन हानि हो सकती है। यह रत्न आपको वाणी में कडवाहट दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

सूर्य
(22/12/2025 - 30/11/2028)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मोती, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व हीरा रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(30/11/2028 - 01/12/2038)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना, नीलम व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, माणिक्य व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(01/12/2038 - 30/11/2045)

मंगल की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती, गोमेद, माणिक्य व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(30/11/2045 - 01/12/2063)

राहु की दशा में आपका नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, माणिक्य, लहसुनिया व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(01/12/2063 - 01/12/2079)

गुरु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती, गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने

हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया व हीरा रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(01/12/2079 - 01/12/2098)

शनि की दशा में आपका नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, माणिक्य, लहसुनिया व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(01/12/2098 - 02/12/2115)

बुध की दशा में आपका पन्ना व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, हीरा, माणिक्य व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(02/12/2115 - 02/12/2122)

केतु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा, गोमेद, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(02/12/2122 - 02/12/2142)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

सूर्य - 30/11/2028

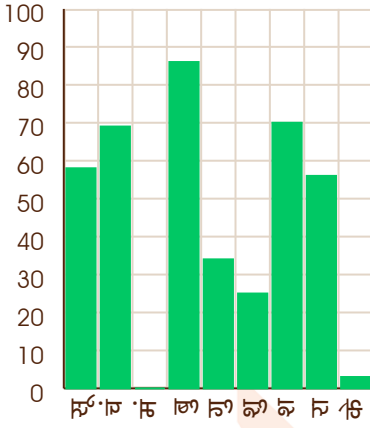

चन्द्र - 01/12/2038

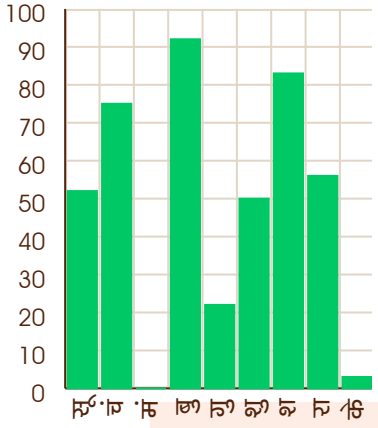

मंगल - 30/11/2045

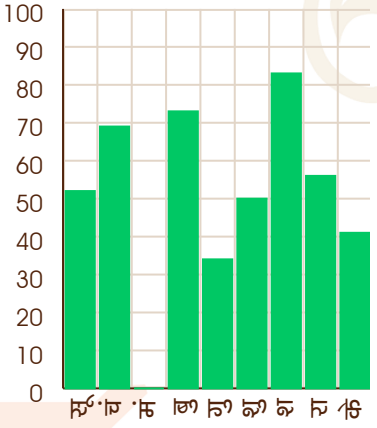

राहु - 01/12/2063

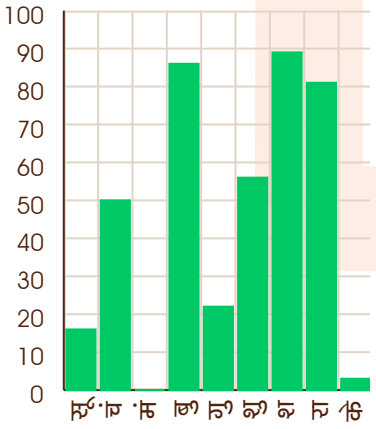

गुरु - 01/12/2079

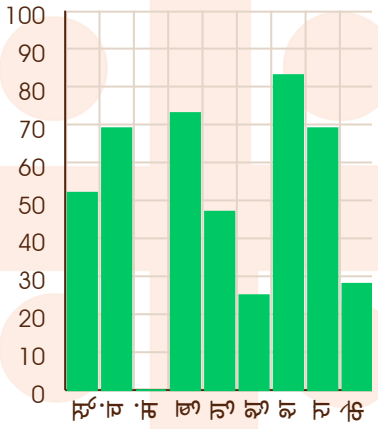

शनि - 01/12/2098

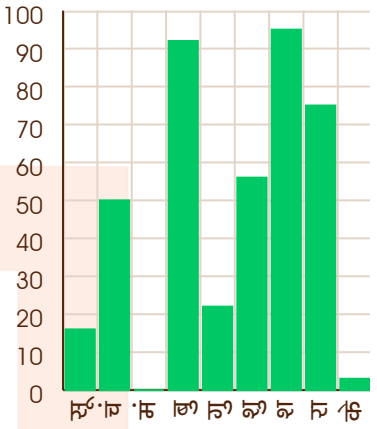

बुध - 02/12/2115

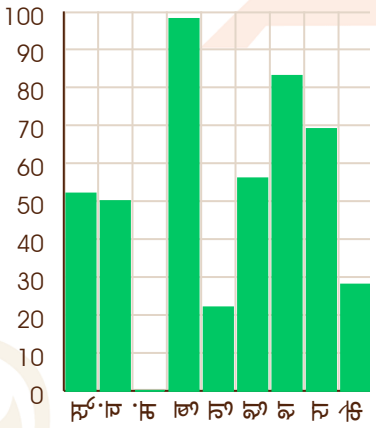

केतु - 02/12/2122

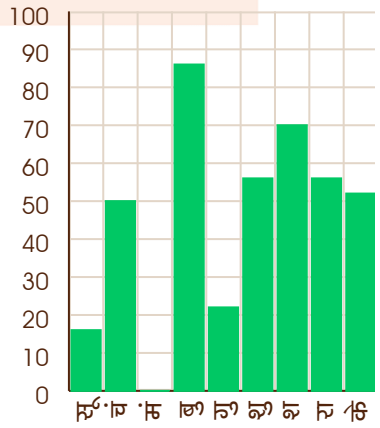

शुक्र - 02/12/2142

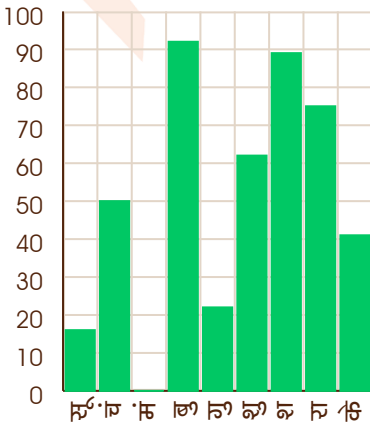

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक करायें तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्टेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा हैं। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते है।

यह आपके शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता, आय क्षेत्र में बाधाएं, अल्प आय, आर्थिक चिंता, कुटुंब से अल्प सुख, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। दीर्घकालीन रोग आपकी चिंताएं बढ़ा सकते हैं। मंगल का अष्टम भाव में स्थित होने से आप मांगलिक योग से पीड़ित है। दाम्पत्य जीवन कष्टकारी हो सकता है। संतान को भी कष्ट की संभावनाएं, प्रवास में धन हानि, मुख, नेत्र व कान के रोग, ऋण ग्रस्तता बढ़ोतरी हो रही है।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध

कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/02/2111-02/05/2113	22/09/2113-26/01/2114	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी। आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। साथ ही वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगे ।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही परस्पर संबंधो में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 22 है। दो एवं दो के योग से आपका मूलांक 4 होता है। मूलांक चार का स्वामी भारतीय मत से राहु तथा पाश्चात्य मत से हर्षल हेाता है। अंक दो का स्वामी चन्द्र है। चन्द्र एवं राहु या हर्षल का प्रभाव आपके जीवन में निरन्तर चलता रहेगा।

मूलांक स्वामी हर्षल या राहु के प्रभाव से आपकी प्रगति यकायक होगी। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कई बार आपको अचानक सफलताएं प्राप्त होंगी। विज्ञान के क्षेत्र में यह सफलता देगा एवं आपका दृष्टिकोण रूढ़वादी न होते हुये वैज्ञानिक रहेगा। जीवन आपका संषर्घशील रहेगा एवं आपकी सोच जमाने से अलग रहेगी। इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। आप रीतियों में परिवर्तन पसन्द करेंगे। धन संग्रह की अपेक्षा नाम, यश आपको अधिक प्राप्त होगा। सामाजिक परिवर्तन के आप हिमायती होंगे एवं सुधारवादी विचारधारा के कारण आप सामाजिक प्रथाओं में परिवर्तन कर अच्छी ख्याति अर्जित करेंगे।

चन्द्र प्रभाव से आप में कल्पनाशीलता अच्छी रहेगी एवं शारीरिक कार्यों की अपेक्षा मानसिक कार्य के क्षेत्र को आप अधिक पसन्द करेंगे। मानसिक कार्यों में आपको अच्छी दक्षता प्राप्त होगी। चन्द्रमा का स्वभाव घटना बढ़ना है। अतः आपके जीवन में भी काफी उतार-चढ़ाव आयेंगे। कभी तो आप एकदम उच्चता का शिखर छू लेंगे और कभी एकदम रसातल की स्थिति को निर्मित करेंगे। आपके कार्य करने के ढ़ंग में जल्दबाजी रहेगी। जिससे कभी-कभी आपको भारी हानि उठानी पड़ेगी।

आपके लिये अच्छा यही रहेगा कि आप अपनी योजनाओं पर धैर्य के साथ विचार करें एवं सोच समझकर प्रारम्भ करें। इसमें थोड़ा विलम्ब अवश्य होगा लेकिन सफलता के अवसर पूरे रहेंगे। जबकि जल्दबाजी में असफलता निहित रहेगी। आपको शीतरोग, रक्तदोष, कभी-कभी परेशान कर सकते हैं।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 4 है तथा भाग्यांक 7 है। मूलांक 4 का स्वामी हर्षल है तथा भाग्यांक 7 का स्वामी नेपच्यून है। मूलांक 4 एवं भाग्यांक 7 के बीच सम संबंध है। इसके

प्रभाववश आपके अंदर उच्च कोटि की कल्पनाशक्ति रहेगी। विचारों का धारा प्रवाह मंथन होता रहेगा। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपको काफी संघर्षों के बाद सफलताएं प्राप्त होंगी। आर्थिक स्थिति आपकी ज्यादा अच्छी नहीं रहेगी। समय-समय पर आपको अर्थाभाव रहेगा। कभी-कभी तो आप अत्यधिक धन की कमी महसूस करेंगे, जिससे आपका मानसिक तनाव काफी बढ़ जाया करेगा। रोजगार-व्याापर का क्षेत्र आप रुकावटों और संघर्ष के साथ पार करेंगे। कभी-कभी धैर्य खो देना आपके लिए अहितकर साबित होगा। यदि आप अपने कार्यक्षेत्र में धैर्य के साथ सोच-समझ कर कोई भी कार्य करते हैं तो निश्चित ही आपको सफलता प्राप्त होगी। आपकी सामाजिक स्थिति मध्यम श्रेणी में उच्च कोटि की रहेगी। रोजगार के क्षेत्र में आप काफी यात्राएं करेंगे और कुछ यात्राओं से आपको अच्छे आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। चली आ रही पद्धतियों में आप परिवर्तन करेंगे और उन परिवर्तनों से आपका कार्यक्षेत्र काफी प्रभावित होगा।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 34 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 43 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 4 की मित्रता 1 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 6, 7, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जून, जुलाई, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन-तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें। मूलांक 4 एवं भाग्यांक 7 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74

4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परितवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपकी जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

हर्षल आपके लिए दिनांक 21 जून से 31 अगस्त तक, पाश्चात्य मतानुसार, सूर्य के कर्क एवं सिंह राशि में रहने पर तथा भारतीय मत से 16 जुलाई से 16 सितंबर तक कर्क एवं सिंह राशि में सूर्य के रहने पर हर्षल की स्थिति प्रबल मानी गयी है। इस समय जल एवं अग्नि तत्व प्रबल रहते हैं, जो हर्षल या राहु के गुण हैं। अतः उपर्युक्त समय मूलांक 4 के लिये कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता हैं।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह के रविवार, सोमवार, शनिवार आपके लिए शुभ रहेंगे। यदि आप अपना कोई भी कार्य इन दिवसों में तथा अनुकूल तारीखों में प्रारंभ करें तो आपके लिए शुभ रहेगा।

शुभ तारीखें

आपको अपने किसी विशिष्ट व्यक्ति से, उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र इत्यादि लिखना हो अथवा कोई महत्वपूर्ण कार्य-व्यापार आदि प्रारंभ करना हो तो किसी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों का चुनाव करना कार्य में सफलतादायक रहेगा।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 5, 12, 14, 21, 23 एवं 30 दिनांक आपके लिए अशुभ फलदायी रहेंगे। अतः कोई भी रोजगार-व्यापार संबंधी या अन्य कार्य या उच्चाधिकारी या किसी विशिष्ट अधिकारी से संबंध बनाने हेतु उपर्युक्त दिनांक आपके लिए ठीक नहीं रहेंगे।

मित्रता या साझेदारी

आप अपनी मित्रता ऐसे लोगों से करें जिनका जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। इन तारीखों को जन्मे लोग आपके लिए शुभ रहेंगे। ऐसे व्यक्तियों से आपकी लंबी मित्रता रहेगी तथा ये आपके रोजगार-व्यवसाय में सहायक सिद्ध होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 प्रभावी पुरुष आपकी अच्छे साथी सिद्ध हो सकते हैं। उपर्युक्त मूलांक वाले पुरुषों से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकती हैं तथा उसमें सफल भी हो सकती हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को हुआ हो तो वे सभी पुरुष सहायक एवं लाभपूर्ण रहेंगे।

अनुकूल रंग

यदि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तो आपको चाहिए कि आप नीला, धूप-छांव, भूरा मिश्रित रंग के कपड़े पहनें और हो सके तो इस रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें। यह रंग आपके लिए अनुकूल रहेगा। हो सके तो अपने घर की दीवारों तथा पर्दों का चयन भी इन्हीं रंगों का करें। यह रंग आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपको चाहिए कि यदि आप भवन, कॉम्पलेक्स का चुनाव करते समय दिशा का चुनाव करें तो आपके लिए नैर्ऋत्य कोण दिशा अच्छी रहेगी। आपका शयन कक्ष नैर्ऋत्य दिशा में होने से रोजगार-व्यापार शुभ रहेगा तथा फर्नीचर आदि का रंग नीला, धूप छांव, भूरा मिश्रित रंग रखेंगे तो आपके लिए अधिक हितकर रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपका मूलांक 4 है। मूलांक 4 के मित्र अंक 1, 8 हैं। ये अंक आपके लिए सफलता के द्योतक हैं। यदि वाहन इत्यादि खरीदती हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 1,4,8 अंकों में से रखें। उदाहरणार्थ वाहन क्रमांक 5233 =4 इत्यादि। आपकी यात्रा का वाहन नंबर यही होने से आपकी यात्रा सफल रहेगी। अगर आप होटल में कमरा आदि बुक करवाती हैं तो उसका नंबर 103 = 4 लेना चाहिए।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तभी आपको रक्तचाप दोष या जुकाम, छूत के रोग शीघ्र हो जाते हैं। रोग होने पर, अशुभ समय आने पर, कष्ट और विपत्ति के समय आप गणेश चतुर्थी का व्रत करें तथा गजानन गणपति की उपासना करें।

व्यवसाय

दारु, स्पिरिट, तेल, मिट्टी का तेल, अर्क, इत्र, रेल विभाग, वायुसेना, जलदाय विभाग, कुलीगिरी, तकनीशियन, रंगसाज, अभियांत्रिकी, नक्शानवीस, दर्जी, बढ़ई का कार्य, डिजाइन के छापे का कार्य, बाबू, टेलीफोन ऑपरेटर, स्टेनो, टाइपिस्ट, शिल्पकार, पत्रकार, संग्रहकर्ता, विद्युत कार्य, वक्ता, उपदेशक, राज्य कर्मचारी, खनिज मजदूर, ठेकेदार, मोटर चालक आदि।

व्रतोपवास

शनिवार को हर्षल अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तैल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

चांदी की अंगूठी में आप सात से ग्यारह रत्ती का गोमेद बनवा कर शनिवार के दिन धारण करें। गोमेद के न मिलने पर आप कत्थई या काला-लाल हकीक भी पहन सकते हैं। इसे आप शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, दायें हाथ की मध्यमा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप राहु ग्रह की उपासना करें अथवा गणेश भगवान की आराधना करें। भगवान गणेश के अठ्ठाईशाक्षरी मंत्र 'ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व जनं मे वशमानय स्वाहा' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा चतुर्थी के दिन व्रत करें एवं भगवान गणेश को मोदक भोग लगाएं। इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि ऐसा संभव न हो सके तो भगवान गणेश के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके राहु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु राहु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

राहु गायत्री मंत्र – ऊँ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप राहु का ध्यान करें, मन में राहु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ राहु को अनुकूल बनाने हेतु राहु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ अस्सी माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।। जप संख्या 18000।।

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी सफेद चंदन की जड़ ला कर, नीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या त्रिधातु या लोहे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे हर्षल/राहु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में नागबेल, लोबान, तिल के पत्र, बचा, गडूची और तगर आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ राहु/हर्षल के प्रभाव क्षीण होकर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

राहु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को राहु के पदार्थ-अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्र पात्र, सप्त धान्य, उड़द, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कंबल, घोड़ा, रबड़ आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

राहु को अनुकूल बनाए रखने हेतु राहु यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण में वृष लग्नोदय काल में हुआ था। उस क्षण मेदिनीय क्षितिज पर कन्या नवमांश एवं मकर राशि का द्रेष्काण उदित था। फलस्वरूप इस बात का द्योतक है कि आप (जन्मकाल) बाल्यावस्था से ही निश्चित रूप से सुखी, सुलभ, स्नेहयुक्त एवं आनंन्दित जीवन व्यतीत करेंगे। आप सदैव ही नारी तथा धन से युक्त रहकर आनंद प्राप्त करेंगे।

आप सफलता प्राप्ति हेतु अंतिम क्षण तक सत्प्रयास करते रहेंगे मुख्यतः आप जीवन के 28 वें वर्ष के पश्चात् अपने परिश्रम को साकार कर लेंगे।

यद्यपि आप सहज स्वभाव के प्राणी हैं। आप में कुछ मुख्य गुण है कि आप प्रशंसनीय व्यक्ति हैं। आप उतावला होकर शीघ्रता पूर्वक कोई भी निर्णय नहीं लेतें बल्कि शांत चित्त हो खूब सोच विचार करने के पश्चात् अपने विवेक से दूसरा कदम उठाते हैं।

आप अपनी योजना को तुलनात्मक ढंग से विभिन्न प्रकारेण अनुकूलता एवं प्रतिकूलता के संबंध में विस्तारपूर्वक अध्ययनकर कार्यरूप देते हैं। इसके पश्चात् अपनी आंकाक्षा को एकाग्रचित होकर संबंधित प्रस्ताव को समर्पित करते हैं। परंतु आप यदा-कदा स्वभाव से प्रीतिपूर्वक व्यवहार करते है जो आपके लिए बोझ-स्वरूप दबाव पूर्ण हो सकता है। इसलिए आपको एक बार ऐसा विचार करना चाहिए कि अपनी बुनियादी गुण को त्याग कर ही अपने विषयक कार्य को सफलता के द्वार तक पहुंचा सकते हैं।

आपको शारीरिक सुख भोग के लिए सतत कठिन परिश्रम करके ही पुरष्कार स्वरूप धन, संपत्ति प्रतिष्ठा एवं आरामदायक जीवन व्यतीत करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आप एक बार प्रगति के पथ पर अग्रसर हुए तों आपकी अपेक्षित धन संचय की लालशा पूरी हो जाएगी तथा बहुत अधिक धन संचय कर लेंगे। क्योंकि आप महान कृपण हैं अतः जीवन पर्यंत धन संपत्ति संचय करते रहेंगे।

आपको बहुत धनोपार्जन हेतु सुदंर एवं अनुकूल व्यवसाय आरामदायक वस्तुओं का व्यवसाय कृषि उपस्करों का व्यवसाय, वित्तीय (लेन-देन) दलाली का व्यवसाय, कलात्मक वस्तुओं का व्यवसाय, रत्नादि एवं ट्रांसपोर्ट (मालवाहक) संबंधी कार्यों के द्वारा अतिरिक्त धन उपार्जन कर सकेंगे।

आप सदैव ही विपरीत योनि के साथ आंख मिलाते रहना चाहते हैं। आप सदैव कामुकता पूर्ण आनंद प्राप्त करना पसंद करते हैं। अंततः आपके महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील जनेन्द्रीय को क्षति होने की आशंका है। अस्तु उत्तम यह है कि आप इस प्रवृत्ति का त्याग कर दें।

आप निरंतर सुखद एवं शांतिपूर्ण घरेलू जीवन व्यतीत करेंगे। यह संभाव्य है कि आप मुख्यतया अपना सर्वोत्कृष्ट जीवन साथी बनाएंगे।

वृष राशीय जातक को निर्देश है कि आप अपने पति/पत्नी अथवा मित्रता के लिए

उपयुक्त राशि कन्या, मकर, मीन एवं वृश्चिक राशि के जातक अनुकूल हैं। इन राशियों का योग मानवीय एवं आनंददायक होगा। आप सदैव ही अपने पारिवारिक प्रसन्नता हेतु बहुत कुछ करते रहते हैं। आप वांछनीय एवं स्वस्थ्य जीवन के लिए सभी वांछित वस्तुओं की व्यवस्था एवं समर्पण करते हैं।

यद्यपि आप विस्तृत सम्पत्ति के स्वामी होंगे। आप शांतचित्त हृष्ट-पुष्ट शरीर से युक्त, संवेदनशील एवं जीवन में कुछ समय के बाद हल्के रोगों की आशंका है। आप गले के संक्रमण, कफ एवं शीत प्रभाव से शरीर में फोड़ा-फुंसी, दाद खुजली एवं शारीरकि पीड़ा से पीड़ित रहेंगे। अस्तु समय-समय पर अपने पारिवारिक चिकित्सक से संबंधित रह कर, इन रोगों के प्रति सतर्क रहें।

सप्ताह के शुक्रवार एवं शनिवार आपके लिए अच्छा दिन है। इसके अतिरिक्त बुधवार का दिन आपके साझीदारी व्यवसाय हेतु उत्तम एवं समयोचित है। रविवार, गुरूवार सोमवार, एवं मंगलवार का दिन आपके लिए अपव्ययकारी हो सकता है।

आपके लिए अंक 2 एवं 8 अंक अनुकूल और महत्वपूर्ण है। परंतु अंक 5 आपके लिए त्याज्य है।

आपके लिए सभी रंगों में सुंदर एवं अति उत्तम रंग सफेद, हरा एवं गुलाबी रंग है। रंग लाल आपके लिए त्याज्य है।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुदंर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकते हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे। आपकी प्रवृति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुदंर आकर्षक व्यक्तित्व विद्वान एवं साहसी पुरूष होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददे्श्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा केतु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में सुख संसाधनो को अर्जित करेंगे तथा इनका उपभोग करेंगे। वैभव एवं ऐश्वर्य से भी आप युक्त होंगे परंतु उनका पूर्ण सुख आपको युवावस्था के बाद ही प्राप्त होगा तथा इसके लिए काफी परिश्रम तथा संधर्ष करना पडेगा परंतु इसके बाद आप अपना यथोचित स्तर बनाने में समर्थ होंगे तथा समाज में भी आपके प्रभाव एवं आदर की वृद्धि होगी।

चल एवं अचल संपत्ति का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा तथा नानी से भी किंचित चल अचल संपत्ति के प्राप्त होने की पूर्ण संभावना बनेगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता आएगी लेकिन जीवन में आपको विवादित सम्पत्ति या जायदाद का क्रय-विक्रय नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको लाभ की अपेक्षा हानि होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। अतः इस दृष्टि से आपको पूर्ण सतर्क रहना चाहिए।

आप युवावस्था के बाद स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से ही उत्तम घर को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। इससे पूर्व आपको किसी सामान्य घर में निवास करना पड़ेगा तथा यह किसी मध्यम कालोनी में होगा लेकिन बाद में आप अच्छी कालोनी में गृह निमार्ण करेंगे तथा सुख पूर्वक इसमें निवास करेंगे। लेकिन पड़ोसियों से आपके संबंध मधुर अल्प मात्रा में ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यावस्था के बाद ही मिलेगा तथा पहले सामान्य रूप से ही वाहन सुख की प्राप्ति होगी।

आपकी माता शिक्षित महिला होंगी परंतु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव रहेगा इससे यदा कदा अन्य पारिवारिक जन उनसे परेशानी की अनुभूति कर सकते है लेकिन यह सब अल्पकालिक होगा। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं वात्सल्य का भाव रहेगा तथा समय समय पर आपको अपनी ओर से आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी लेकिन आपसी मतभेदो के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है।

आपको प्रारंभ से ही अध्ययन में सफलता प्राप्त करने के लिए काफी परिश्रम करना पडेगा तथा छोटी कक्षाओं में भी परिश्रम से ही आप उतीर्ण हो पाएंगे अतः स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में आपको काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। अतः यदि स्नातक परीक्षा की अपेक्षा आप कोई तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में परिश्रम करें तो इससे आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति होगी तथा परिश्रम भी अल्प मात्रा में ही करना पडेगा। अतः तकनीकी शिक्षा आपके लिए उत्तम एवं अनुकूल रहेगी।

नैसर्गिक पाप ग्रह केतु की सूर्य की राशि में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको रक्त चाप संबंधी कष्ट का सामना करना पड़ सकता है तथा यदा कदा हृदय रोगों से भी कष्ट की प्राप्ति हो सकती है। अतः आपको चाहिए कि प्रारंभ से ही खान-पान पर विशेष ध्यान दें

तथा ऐसी वस्तुओं या पदार्थो का परहेज करें जिससे ये समस्याएं उत्पन्न होती हों। इससे आप वृद्धावस्था में स्वस्थ रहेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगे। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रूचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रूचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगे तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगे। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

पंचमभाव में कन्या राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगे तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकते है तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकते है।

पंचमभाव में बुध की राशि के प्रभाव से आपको यथा समय संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी तथा आज्ञाकारिकता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी रखेंगे । वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख दुःख में माता पिता की पूरी सेवा करेंगे।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रूचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर रखेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगे तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यो में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि अनुभूति करेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा बुध भी सप्तम भाव में स्थित है। सामान्यतया वृश्चिक राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रकृति व्ययशील एवं धनवान होता है परन्तु बुध के प्रभाव से वह बुद्धिमान कला प्रिय आस्तिक एवं सांसारिक कार्यो में निपुण रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी बुद्धिमती एवं विदुषी महिला होंगी तथा संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में पूर्ण रूचि रहेगी। सांसारिक कार्यो में वह निपुण होंगी एवं अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। बुध के प्रभाव से वह एक आदर्श कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा परिवार एवं अन्य संबंधियों के प्रति अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका आकर्षण बना रहेगा तथा अंग प्रत्यंग भी सुडौल एवं पुष्ट होंगे। अतः सुंदरता के साथ साथ उनका व्यक्तित्व भी अन्य जनों को प्रभावित करेगा। वह समय समय पर सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी एवं भौतिकता के प्रति उनका आकर्षण होगा तथा नवीन उपकरणों से वह घर को सुसज्जित रखेंगी।

आपका विवाह विज्ञापन द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वंय भी अपनी इच्छा से प्रेम विवाह कर सकते है विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। बुध के प्रभाव से एक दूसरे के प्रति प्रेम आकर्षण एवं समानता का भाव रहेगाा तथा एक दूसरे की भावनाओं का पूर्ण आदर करेंगे इससे पारिवारिक शांति भी बनी रहेगी तथा जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह समृद्ध एवं अच्छे परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह के समय ससुराल से आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं बहुमूल्य उपकरण भी उपहार स्वरूप प्राप्त होगा। साथ ही विवाह के बाद भी आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण सेवा सम्मान का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी साथ ही अपनी मृदुवाणी से उन्हें प्रसन्न रखेंगी जिससे वे उनसे सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी एवं उनसे मातृवत स्नेह एवं वात्सल्य का भाव रखेंगी अतः वे भी उनसे पूर्ण प्रभावित होंगे तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं पर भी विचार विमर्श करेंगे। इस प्रकार एक दूसरे को पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे जिससे पारिवारिक सुख शांति में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ एवं अनुकूल रहेगी तथाा इससे आपको वांछित लाभ एवं उन्नति होगी यदि आप मित्र या मातृपक्ष के संबंधियों से साझेदारी करें तो

इससे विशेष उन्नति एवं लाभ होगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क विर्तकों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही राहु भी मित्र राशि में स्थित होकर दशम भाव में ही है। कुम्भ राशि एवं राहु दोनों वायुतत्व युक्त ग्रह है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र निरंतर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगा तथा इसमें आपको समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना कम ही करना पड़ेगा। साथ ही आपका कार्य श्रम साध्य एवं बौद्धिक दोनों ही प्रकार का होगा एवं इसमें स्थायित्व बना रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इससे वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलीयम फैक्टरी, संदेश वाहक तथा राजनीति के क्षेत्र वांछित सफलता एवं उन्नति प्रदान करेंगे। अतः आपको चाहिए उपरोक्त विभागों में ही अपना कार्यक्षेत्र प्रारंभ करें। यदि आप ऐसा करेंगे तो जीवन में आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा किसी भी प्रकार के अनावश्यक समस्या एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही उन्नति के शिखर पर पहुंचने में सफल होंगे। इसके अतिरिक्त राजनीति से संबंधित कार्यो में आपको शीघ्र सफलता प्राप्त होगी।

व्यापारिक क्षेत्र में विशिष्ट उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से आपके लिए लोहे, चमड़े का कार्य, फैक्टरी, उद्योग, पेट्रोल पम्प, खनिज पदार्थ का क्रय-विक्रय, शराब का व्यापार, प्रेस खेती वागवानी आदि कार्यो या उनके व्यापार से आपको वांछित लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। अतः यदि आप व्यापार करना चाहे तो उपरोक्त क्षेत्रों में व्यापारिक कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

मित्र एवं योग कारक ग्रह शनि की राशि में दशम भावस्थ राहु के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही आप अधिकार सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपके यश एवं प्रभाव में वृद्धि होगी। राजनीति में आप सम्मानीय पद अर्जित करेंगे तथा उच्च नेताओं एवं उच्चाधिकारियों से सम्पर्क स्थापित करके अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध करेंगे। इसके साथ ही अन्य सामाजिक संस्थाओं क्लबों आदि के भी आप कोई वरिष्ठ पदाधिकारी हो सकते है। राहु के प्रभाव से आपको वांछित यश प्रतिष्ठा तथा सम्मान मध्य अवस्था के बाद ही प्राप्त होगा।

आपके पिता जी एक तेजस्वी पराक्रमी एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा उनके प्रभाव को सभी लोग स्वीकार करेंगे। साथ ही अन्य जनों के प्रति उनके मन में सेवा तथा सहयोग का भाव रहेगा जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा के विषय में वे पूर्ण सतर्क होंगे। आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति के लिए उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा नई सफलताएं एवं उन्नति उन्हीं के प्रभाव से प्राप्त करेंगे। आपका भी उनके प्रति मन में श्रद्धा तथा सम्मान का भाव होगा परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेद के कारण संबंधों में अनावश्यक तनाव उत्पन्न हो सकता है। अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

नक्षत्रफल

आप उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण मनुष्य, वर्ण वैश्य, नाड़ी अन्त्य, योनि नकुल तथा वर्ग सिंह होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ज" या "जा" अक्षर से होगा। यथा- जगदीश, जगमोहन आदि।

आप अपने समाज में एक गणमान्य व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों से आप उचित मान सम्मान एवं आदर प्राप्त करेंगे। आप में सात्विक गुणों की प्रधानता रहेगी तथा आपातकाल में भी बुद्धिमता एवं शान्त स्वभाव से समस्याओं का सामना करेंगे तथा उनका समाधान निकालेंगे। आप सम्पूर्ण जीवन काल में समस्त भौतिक सुख सुविधाओं से सुसम्पन्न रहकर प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे। धन दौलत का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा प्रायः इनसे सुसम्पन्न ही रहेंगे। शास्त्रों के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा परिश्रमपूर्वक इनका आप ज्ञानार्जन करेंगे। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में भी आप पारंगत रहेंगे। अतः एक विद्वान के रूप में भी समाज में आप ख्याति प्राप्त करेंगे।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आपका स्वभाव हमेशा विनयशील रहेगा तथा अन्य जनों से आपका हमेशा विनम्र व्यवहार रहेगा जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे तथा आपकी प्रशंसा करेंगे। साथ ही समस्त धार्मिक कृत्यों का भी आप पालन करने के लिए यत्नशील रहेंगे एवं धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा का प्रदर्शन करेंगे। आपके मित्रों की संख्या भी प्रचुरमात्रा में रहेगी तथा सभी मित्रों से आपको यथोचित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा मन से उनके प्रति आभार प्रदर्शन करेंगे। इसके साथ ही समाज के सभी वर्गो में आप लोकप्रिय रहेंगे एवं प्रयत्न पूर्वक उनकी सेवा करते रहेंगे।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आपका शारीरिक कद लम्बा होगा तथा शरीर से आप स्थूल भी हो सकते हैं। आप एक शूरवीर व्यक्ति होंगे तथा बहादुरी से अपने समस्त संसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त विवाद आदि में आप शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आपके मन में नैसर्गिक रूप से दानशीलता की भावना विद्यमान रहेगी। अतः जीवन में समय समय पर यथा शक्ति आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। आप अच्छे कार्यों को सम्पन्न करने वाले व्यक्ति होंगे तथा दुष्कर्मों के प्रति आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी। आपके सत्कार्यों से अन्य सामाजिक जनों को भी लाभ पहुंचेगा। धन वैभव से पूर्ण रूपेण सम्पन्न होने के कारण समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व व्याप्त रहेगा तथा सभी लोग आपकी प्रभुता को मन से स्वीकार करेंगे। आप स्त्री तथा पुत्रादि संतति से युक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक अपने जीवन को व्यतीत करने में सफल रहेंगें। शरीर से आप सुन्दर रहेंगे तथा सभी लोग आप के सौन्दर्य की प्रशंसा करेंगे। कभी कभी आप अभिमानी वृति का भी प्रदर्शन करेंगे।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोळभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रूचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

मकर राशि में जन्म होने के कारण आपका कद ऊंचा तथा ललाट विशाल रहेगा। आप शरीर से विशेष बलवान नही होंगे परन्तु आखें अत्यन्त ही सुन्दर होगी। साथ ही शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। संगीत के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेंगी तथा इसका आपको

विस्तृत ज्ञान भी रहेगा। ठंड से आप काफी व्याकुलता का आभास करेंगे एवं इसको सहन करने में अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगे। सत्य के प्रति आपके मन में विशेष निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए जीवन में सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप में क्रोध का भाव अल्प मात्रा में विद्यमान रहेगा परन्तु कामभावना की आपमें अधिकता रहेगी। आप के मन में अन्य लोगों के प्रति प्रेम तथा स्नेह का व्यवहार रहेगा तथा घृणा या द्वेष अकारण किसी के प्रति आपके मन में नही रहेगा। इसके साथ ही अपनी आयु से अधिक आयु वाले व्यक्तियों से मित्रता करने के भी इच्छुक रहेंगे। लेखन कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी अतः काव्य सृजन के क्षेत्र में आप सफलता अर्जित कर सकेंगे। आप पूर्ण रूप से उत्साही नही रहेंगे फिर भी कार्यों को सम्पन्न करने में आपकी रूचि रहेगी। इसके

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने स्त्री तथा पुत्रों सहित उनके लालन पालन में अधिक रूप से व्यस्त रहेंगे तथा बाह्य रूप से धर्मानुपालन में भी तत्पर रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी। आप अत्यन्त ही सरल विचारों के व्यक्ति होंगे तथा अन्य लोगों की बातों से शीघ्र ही सहमत हो जाएगे तथा उनके कहे अनुसार ही करने को तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति आलस्य प्रधान भी रहेगी अतः आपके कार्य शनै शनै ही सम्पन्न होंगे लेकिन आप एक सौभाग्य शाली पुरूष होंगे तथा आपके प्रमुख कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न हो जाएंगे। यात्रा एवं घूमने फिरने के आप विशेष शौकीन रहेंगे तथा अपना अधिकाँश समय यात्रा तथा एवं भ्रमण में ही व्यतीत करेंगे। शारीरिक बल से आप प्रायः युक्त ही रहेंगे। आप अगम्य स्थानों तथा कठिन कार्यों को करने के लिए सर्वप्रकार से तत्पर रहेंगे जिससे लोग आपके साहस से प्रभावित होंगे। कभी कभी आपके मन में कठोरता का भाव भी उत्पन्न होगा जिसका आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। जीवन में आप कई बार वात से उत्पन्न रोगों से पीड़ित रहेंगे। इनसे आपको समय समय पर परेशानी तथा कष्टानुभूति होती रहेगी। इसके अतिरिक्त सद्गुणों की भी आपमें प्रधानता रहेगी तथा इनका आप जीवन में यत्नपूर्वक पालन करते रहेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने परिवार में विशेष स्थान प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा कुल की रीति एवं मर्यादाओं का पालन करने में अग्रणी रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उसकी वृद्धि करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप पूर्ण रूप से स्त्री के वश में रहेंगे तथा अधिकांश सांसारिक कार्यों को

उसी के निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा अतः एक विद्वान के रूप में भी समाज में आप आदरणीय तथा प्रसिद्ध रहेंगे। आप महिलावर्ग के मध्य भी लोकप्रिय रहेंगे तथा वे आपको पूर्ण सम्मान तथा प्रशंसा का पात्र समझेंगी। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा पूर्ण सुख को आप प्राप्त करने में सफल रहेंगे। बन्धुवर्ग के प्रति आपका विशेष मोह रहेगा तथा उनका पूरा लालन पालन स्वयं करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन दौलत का भी आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे प्रायः सम्पन्न ही रहेंगे। त्याग की भावना से भी आप युक्त रहेंगे तथा समय समय पर अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आपके अधिकांश नौकर सुन्दर एवं सद्गुणों से युक्त रहेंगे। आपके मन में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा दीन दुःखियों की सेवा एवं सहायता करने के लिए आप सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परिवार के सदस्य संख्यां भी प्रचुर मात्रा में रहेगी। सुख की प्राप्ति के लिए आप विशेष चिन्तित रहेंगे तथा उसको प्राप्त करने के लिए आजीवन तत्पर रहेंगे। आप अपने जीवन में किसी अन्य मित्र व्यक्ति या संबंधी की धन सम्पति का उपभोग करने वाले होंगे तथा सामाजिक जनों का हित चिन्तन भी करते रहेंगे एवं उनके हित के लिए कुछ न कुछ कार्य अवश्य सम्पन्न करते रहेंगे। आप एक चतुर सलाहकार भी होंगे तथा सलाह देने आदि कार्यों में निपुण होंगे। बन्धुवर्ग का आप पूर्ण रूपेण पालन करने वाले होंगे। साथ ही वीरता एवं बहादुरी के गुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहसपूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

संगीत के क्षेत्र में आप विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपका शरीर सुकान्ति तथा कोमलता से भी सुशोभित रहेगा। जिससे आपका स्वरूप सुन्दरता से युक्त रहेगा।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों की पूजा एवं सेवा करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे। साथ ही आप में अभिमान

की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका आप समय समय पर अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करते रहेंगे। आप का हृदय करूणा एवं कोमल भावों से भी युक्त रहेगा अतः दीन दुःखियों के प्रति आपके मन में विशेष दयाभाव रहेगा तथा इस भाव के अनुपालन हेतु आप नित्य प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप में शारीरिक बल पूर्ण रहेगा तथा आपके बल से लोग प्रभावित रहेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों तथा कलाओं में आप पारंगत रहेंगे तथा एक श्रेष्ठ विद्वान की तरह समाज में आदरणीय तथा ख्याति प्राप्त होंगे। आपका शरीर कान्ति युक्त रहेगा एवं परिवार के अतिरिक्त अन्य कई जनों का आपके द्वारा पालन किया जाएगा।

आप सर्वप्रकार से धनवैभव सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में आपका सभी वर्गों द्वारा हार्दिक सम्मान किया जाएगा। आपकी आखें भी बड़ी बड़ी होंगी एवं निशाने बाजी की कला में अत्यन्त ही निपुणता तथा विशेष योग्यता को अर्जित करेंगे। साथ ही आप गौरवर्ण के पुरूष होंगे। इसके अतिरिक्त नगर में आप एक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपकी आज्ञा पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुल योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वाभाविक रूप से परोपकारी व्यक्ति होंगे तथा दक्षता से अन्य जनों की भलाई के लिए कार्यों को सम्पन्न करने में नित्य तत्पर रहेंगे। आपके इन कार्यों से सभी समाजिक जन आप को हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। आप अपने जीवन काल में विपुल धन के स्वामी होंगे तथा अन्य धनाढ्य व्यक्तियों के लिए भी आप आदरणीय एवं सम्माननीय रहेंगे। आप में उच्चकोटि के विद्वानों के पूर्ण गुण रहेंगे तथा कई सामाजिक संस्थाओं के आप प्रमुख भी रहेंगे। माता पिता का आपके प्रति विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा आप भी उनकी उचित मान सम्मान सहित सेवा करते रहेंगे।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी।

आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए बैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनी करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र

वैधृतियोग तथा शकुनी करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा क्रयविक्रयादि कार्यों को आरम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि का ही अधिक योग बनेगा। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर एवं सिंह राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूपेण सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अच्छा नही चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए एवं शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, लोहा, नीलम, पंच धातु, तिल, तेल, चर्मपादुका आदि पदार्थो का किसी योग्य सुपात्र को शनिवार को दान करना चाहिए। इससे समस्त अशुभ फलों का प्रभाव न्यून होगा तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त शनि के मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री मातृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर वजन में चांदी लेकर उसी दिन दरिया में बहा देवे।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग

हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य आठवें खाने में है। इसकी वजह से आप बहुत गुस्सा करेंगे। आप अधीर, स्त्रियों के लिए लालायित, सच्चाई से आगे बढ़ने वाले, तपस्वी होंगे। मरने के वक्त आपको भयानक रोग या कष्ट नहीं होगा। आपकी आयु की रक्षा होगी। बहन की ससुराल में रह कर चोरी न करें तो अच्छा फल मिलेगा। यदि आप चोरी न करें तो भाग्यशाली होंगे। आपके सामने किसी की मौत नहीं होगी। आप बीमार व्यक्ति के पास बैठें तो रोगी स्वस्थ हो जाएगा। आमतौर पर आपका जीवन सुखी रहेगा। आप सच्चे और नर्म स्वभाव के होंगे। कभी तिरस्कृत भी होना पड़ सकता है। आप हर काम करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आपके धन का दूसरे लोग भी उपयोग करेंगे। आपका साधु स्वभाव होगा तो अपने लिये किये कार्यों को संसार को समर्पित करने की आप में भावना भी रहेगी।

यदि आपने स्त्रियों से झगड़ा किया, ससुराल वालों को धन के लिए तंग किया, चोरी ठगी की नियत रखी, दक्षिण दिशा के मुख्य दरवाजे वाले मकान में रिहाईश की तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से गुप्त रोग से दुःखी, अस्वस्थ रहेंगे। सरकारी विभाग से परेशानी, आर्थिक स्थिति खराब और आंखों की रोशनी कम हो सकती है। गंदी सोहबत में पड़ कर आप तबाह हो जाएंगे। आप पत्नी के अलावा दूसरी औरत से संबंध रखेंगे तो आपके भाग्य में धोखा लिखा है। जहरीले जीव-जंतुओं से सावधान रहें ये आपके मौत के कारण हो सकते हैं। आपको पीठ में दर्द, रक्तचाप की बीमारी हो सकती है। आपको आर्थिक नुकसान की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. रसोई को अपवित्र न बनायें।
2. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।

उपाय :

1. बड़े भाई या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में नौंवे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से आप दुःखियों के हमदर्द, समाज में आदरणीय, पैतृक जायदाद मिलेगी और उससे अधिक लाभ होगा। हर प्रकार से जीवन उत्तम बीतेगा। आपके जीवन के 24वें वर्ष में चंद्रमा का अच्छा फल मिलेगा। आप घूमने-फिरने के शौकीन होंगे। तीर्थयात्रा भी करेंगे। आपका स्वभाव सरल, संगीत में रुचि रखने वाले, धार्मिक और कुशल कार्यकर्त्ता होंगे। आप गणित विद्या के माहिर होंगे। आप धर्म

का पालन करेंगे। आपको अच्छी संतान का सुख नसीब होगा। आपके धन-दौलत में बरकत होगी। 34 वर्ष की आयु के बाद साधारण लेकिन 48 वर्ष की आयु के बाद आर्थिक हालात अच्छी हो जाएगी। आप विदेश का सफर करेंगे। दान-धर्म के कार्यो में पूरी दिलचस्पी रखेंगे। पिता के प्रति अच्छा व्यवहार रहेगा। पिता का पूरा सुख नसीब होगा। कभी-कभी आपसे गलत काम हो सकते हैं इसका विशेष ध्यान रखें। स्वभाव से साधू तथा व्यवहार में नम्र होंगे। यदि सिंह बन कर रहना चाहें तो उथल-पुथल होती रहेगी। आपके लिए नम्र बन कर रहना ही शुभकारक है। आप जीवन में तरक्की की चोटी तक पहुंच जाएंगे।

यदि आपने धार्मिक कार्यों के विरुद्ध कार्य किया या धर्म के नाम पर चंदा मांगा, माता को कष्ट दिया या माता का विरोध किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी अक्ल धोखा देगी, आपका छोटा दिल होगा और आवारा घूमने से हानि होगी। चांदी-पानी-चावल आदि सफेद वस्तुओं का कार्य हानि देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. झूठ-झूठ से दूर रहें।

उपाय :

1. तीर्थ यात्रा करें या धार्मिक कार्य करें।
2. चंद्र ग्रहण के समय 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से लाल किताब के अनुसार आठवें खाने में मंगल हो तो व्यक्ति मंगलीक होता है। आप मांगलिक पुरुष हैं। आपको माता-पिता का पूरा सहारा मिलेगा। आपको गृहस्थी का पूरा सुख मिलेगा। आपका हौसला बुलंद रहेगा। आप लौह पुरुष होंगे। आप नतीजा सोचे-समझे बिना, हिम्मत के साथ कष्टों का मुकाबला करेंगे। आप अपने काम-काज में मन लगा कर काम करने के आदी होंगे। आप इंसाफ पाने के लिए लड़ने को तैयार रहेंगे। आपके जीवन की रक्षा होती रहेगी। आप जीवन में बाधाओं को हंस कर सह लेंगे। ससुराल से संपत्ति का लाभ होगा। शत्रुओं पर जीत हासिल करेंगे या शत्रु भय से सामने न आयेगा।

यदि आपने विधवा स्त्री के साथ झगड़ा करके उसकी बददुआ ली, घर में जमीन के अंदर रहने वाली तंदूर-भट्टी हुई, लोगों से बिना कारण झगड़ा-फसाद किया, चाकू-छुरी हर समय अपने पास रखी तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारणवश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके छोटे भाई के लिए बेहद बुरा एवं भाई के कारण, लड़ाई-झगड़े होंगे। आपका भाई आपका बेड़ा गर्क कर सकता है। अचानक दुर्घटना से रक्त

विकार हो सकता है या नाखून के दोष की आशंका है। किसी आदमी पर बेवजह गुस्सा करना, पछतावा का कारण बन सकता है। आप गुस्सा करके नुकसान भी उठा सकते हैं। आप पर कोई आक्रमण हो इस बात की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर के अंदर जमीन में तंदूर/भट्टी न रखें।
2. तोता या मैना न पालें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री का आर्शीवाद लेवें।
2. तंदूर में मीठी रोटी लगा कर कुत्तों को खिलावें।

बुध

आपकी कुंडली में बुध सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुलीन होंगे। आप व्यवहार कुशल होंगे। आप प्रिंटिंग प्रेस, डाक्टर/कैमिस्ट का काम, रेडीमेड माल के व्यापार से धन कमाएंगे। नौकरी-व्यापार के लिए तो बुरा असर नहीं होगा। आप अपने काम धन्धे में 34 वर्ष की उम्र तक सफल हो सकेंगे। आपकी विदेश की यात्रा होगी। आप किसी भी प्रकार का काम करें, वह काम प्रारंभ होकर, बिखर जाएगा। आपका ससुराल पक्ष धनी और मजबूत होगा। आपकी तलवार में इतनी ताकत नहीं जितनी आपकी कलम में शक्ति है। कोर्ट-मुकद्दमे में आपकी जीत होगी। आप दूसरों के लिए भी माफिक रहेंगे। आप अपने दोस्तों या परिचित लोगों के सहायक होंगे। आपको दस्तकारी के काम, तकनीक कार्य और लकड़ी के काम में उत्तम फल मिलेगा। आपका जीवन सुलझा हुआ होगा। विज्ञापन या स्वयंवर द्वारा विवाह का योग होता है। आपकी पत्नी उच्च परिवार से होगी।

यदि आपने साहुकारा किया, भाई-साले के साथ साझेदारी की, पत्नी से झगड़ा किया, परस्त्री से चाल-चलन खराब किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपकी साली से घरेलू संबंध बनेंगे जो कि आपकी बर्बादी का कारण बनेगा। आपके विवाह में गड़बड़ी होगी। अगर विवाह में देरी हो तो 34 वर्ष की आयु तक निश्चित विवाह हो जाएगा। स्त्री से दूरी या तलाक तक की नौबत आ सकती है। आपके भाई-बंधु आपका विरोध करेंगे। झगड़ा-फसाद या मुकद्दमेबाजी या उलझन ज्यादा प्रभावी नहीं होगी। आपमें बुद्धि की कमी रहेगी। आपमें परिपक्वता देर से आयेगी। आप अपने परिवार को तोड़ सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिना सींग की गाय या बकरी न पालें।
2. हरी घास घर में न लगावें।

उपाय :
1. हीरा पहनें/हीरे के अभाव में पन्ना भी पहन सकते हैं।
2. चीनी खा कर पानी पीकर कार्य शुरु करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दूसरे खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप गुरु का दायित्व निभाएंगे शिक्षा तथा ज्ञान फैला कर उनकी समस्याओं का हल निकाल लेंगे। आपका गृहस्थ जीवन सुखी होगा। दौलत बहुत आ जाएगी। सरकारी कामकाज के अवसर मिलेंगे। आप अपनी जायदाद खुद बनाएंगे। आपके पिता के आशीर्वाद से आपकी दौलत में वृद्धि होगी। अगर आप सरकारी नौकरी करते हैं तो 27वें साल में सरकारी नौकरी में तरक्की होगी। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आप में हुकूमत करने की ताकत होगी और जीवन की हर मंजिल पर फतह पाएगें। आपका कुछ बुरा होने वाला होगा उसके पहले आपको पता चल जाएगा। आपको अचानक दबा धन मिलने की संभावना है। आपको विद्या का बहुत लाभ मिलेगा। आपकी पत्नी सुंदर होगी। आप जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आप बहादुर होंगे। खेती-बाड़ी या मिट्टी से संबंधित कामों में या कपड़े से संबंधित नौकरी-व्यापार में अच्छा लाभ होगा।

यदि आपने पत्नी का विरोध किया, सर्राफी-जौहरी का काम किया, माता-पिता का विरोध किया या माता-पिता को कष्ट दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपकी नजर पर बुरा प्रभाव पड़ने की शंका है। बुढ़ापे में स्वास्थ्य और आर्थिक हालत अच्छी नहीं रहेंगे। आपको दूसरे के झगड़े में पड़ने से नुकसान उठाना पड़ेगा। आप कुछ दुःखी रहेंगे ऐसी आशंका है। आप में बेरहमी भी होगी। पुलिस/कोर्ट से दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सर्राफी/जौहरी के काम न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. मकान में कच्चा हिस्सा जरुर रखें।
2. केसर/हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के आठवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपकी अच्छी आमदनी होगी। किसी भी लड़ाई-झगड़े में आपकी जीत होगी। औलाद की बीमारी के प्रति चौकन्ना रहें। आप में काम शक्ति की अधिकता रहेगी। अपने भोजन खाने-पीने पर पूरी चौकसी बरतें। आप परिश्रम करने में संकोच नहीं करेंगे। परंतु आलस्य आपको कर्महीन बना सकता है। आपको पत्नी और औलाद का अच्छा सुख मिलेगा। जन्म स्थान से दूर, देश से विदेश तक कहीं भी निवास स्थान बनाना पड़ेगा। जल से संबंधित कामों या समुद्री यात्रा में तथा विदेशी औरतों से सावधान रहना जरूरी है। आपकी पत्नी की जुबान से निकला शब्द पत्थर पर लकीर होगा अर्थात् आप अपनी पत्नी को न कष्ट देवें और न सतायें।

यदि आपका चाल-चलन खराब हुआ, ससुराल वालों को धोखा दिया या झगड़ा किया, सफेद बिना सींग की गाय घर में रखी तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप पर हमेशा ही कर्ज का बोझ बना रहेगा। अधिकतर बीमार रहा करेंगे। आपकी पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की कुटिल होगी। आप किसी की जमानत न दें, वरना जमानत आपको भरनी पड़ सकती है। जिसका भाग्य पर बुरा असर पड़ेगा। 25 वर्ष की उम्र के बाद शादी करें अन्यथा पत्नी सुख में बाधा आ सकती है। आपकी बदनामी भी हो सकती है। आपके गुप्तांग में रोग हो सकता है। आलस्य के कारण भी शराबी और कबाबी होना तथा पराई स्त्री से संबंध रखने से, गुप्त रोग हो सकते हैं और आपके कामों में रुकावट पैदा होने के कारण बनेंगे। आप अपने जीवन में कुछ ऐसा कर गुजरेंगे जिससे आपको पश्चात्ताप होता रहेगा। पत्नी से झगड़ा करना आप को हार और हानि देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दान या भिक्षा न मांगें।
2. ससुराल से धन आदि का धोखा न करें।

उपाय :

1. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालें।
2. धर्मस्थान में सिर झुकाएं।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आपका भाग्योदय 48वें वर्ष में होगा। आप अपने धर्म पर अडिग रहेंगे। जीवन के 57वें, 72वें और 89वें आयु में अच्छा फल मिलेगा। आपको पूरा आराम मिलेगा और उत्तम फल प्राप्त होंगे। लोहा, कोयला, रबड़ आदि काली चीजों के व्यवसाय से लाभ प्राप्त करेंगे। दस्तकारी में भी निपुण होंगे। आप अपने धन की सुरक्षा करेंगे। आर्थिक दृष्टि से आप प्रगति करेंगे। संतान सुख अवश्य मिलेगा। यदि आप नेकी करेंगे और धर्म का सहारा लेंगे तो मिट्टी को भी छुएंगे तो सोना हो

जाएगी। न्यायप्रिय, राज्याधिकारी, राजदरबार और धन-दौलत पर अच्छा असर पड़ेगा। भलाई करने से जिंदगी में सभी प्रकार के आराम मिलेंगे। बुजुर्गी संपत्ति का लाभ होगा, ससुराल वाले अमीर होंगे।

यदि आपने 55 वर्ष की आयु से पहले मकान बनाया, आपने परिवार के लोगों को हानि पहुंचाई, भाई से दूर रहे, धोखे-ठगी से धन कमाना शुरु किया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपकी शिक्षा अधूरी रह सकती है। आप गुस्सैल मिजाज के होंगे। आपके आमदनी और खर्च बराबर रहेंगे। शराब-मांस का सेवन करने से क्रोध की मात्रा बढ़ जाएगी और आप किसी की हत्या भी कर सकते हैं। आप फरेब करके पैसा बनाएंगे। बेईमानी से कमाया हुआ धन बुरा फल देगा। धोखे-ठगी से कमाया धन कैद और कफन ही देगा। विद्या में रुकावट, आपका भाई-बंधु और मित्रों से विरोध होगा, खानदान के लिए अशुभ होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. किराये के मकान में रिहाईश न करें।
2. ठगी-धोखे से धन न कमाएं।

उपाय :
1. घर में शुद्ध चांदी की ईंट रखें।
2. नये काम पर जाते समय या नया काम शुरु करते समय पानी या दूध का भरा घड़ा कुंभ के तौर पर रखें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप शील संपन्न, अच्छे स्वभाव के, शूरवीर, साहसी होंगे। आपका हर काम सराहनीय होगा। आपके उच्च विचार होंगे। आपको सबसे यथोचित सम्मान मिलेगा। आप बड़े कारखाने के मालिक होकर या उच्च पद पर रह कर बहुत बड़ी संपत्ति कमाएंगे। आपके जीवन में राजयोग रहेगा और अच्छा सुख प्राप्त होने की उम्मीद है। आप निश्चित ही बड़े व्यापारी और धनवान होंगे। फिजूल के खर्चों से सावधान रहें। धन-दौलत का अच्छा असर रहेगा। सिर के बाल जल्दी सफेद हो जाएंगे मगर उनको डाई न करें। आपका चरित्र बहुत ऊंचा होगा।

यदि आपने अपना सिर नंगा रखा अर्थात् सिर पर टोपी/पगड़ी न रखी, मौके के आफिसर से झगड़ा किया, अपने परिवार को तोड़ा तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से माता-पिता को कष्ट की आशंका है। शरीर में कोई विकार उत्पन्न होगा। धन-संपत्ति का नुकसान हो सकता है। आपमें कोई न कोई व्यसन विद्यमान हो सकता है, सावधान रहें। आप अपने हाथों संपत्ति को बेच भी सकते हैं। आपकी तंगदिली से दूसरों के साथ बैर पैदा हो सकता है। परिवार के लोगों से अनबन रहेगी।

माता के लिए कष्टकारक समय भी आ सकता है। आंखों पर बुरा असर पड़ने की आशंका है। सिर दर्द से आपकी परेशानी बढ़ सकती है। कोई काला आदमी आपकी धन-संपत्ति का नाश कर सकता है। ऊंची जगह से गिरने का भय, सरकारी अधिकारी से झगड़ा करने पर जुर्माने आदि का भय, बीमारी पर धन का खर्च हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़े अर्थात् नंगा सिर न रखें।
2. मौके के अधिकारी से झगड़ा न करें।

उपाय :
1. सिर पर सफेद टोपी या शरबती पगड़ी टोपी जरूर पहनें।
2. जौ अंधेरी जगह में बोझ के नीचे दबायें।
3. मीठा भोजन अंधों को बांटें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के चाथे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप पूर्ण आस्तिक होंगे। हर काम धीरज के साथ करेंगे। सभी के साथ आपका व्यवहार सौहार्दपूर्ण रहेगा। आप आशावान, गुरु और पिता की सेवा में संलग्न, चरित्रवान और जो मिले उसी में संतोष प्राप्त करने वाले होंगे। आपकी कन्या भाग्यवान और आपके लिए लक्ष्मी स्वरूपा होगी। कन्या के जन्म के बाद आपका घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाएगा। आपको पिता का लम्बे समय तक सुख मिलेगा। आप पिता और गुरु की भक्ति करने वाले होंगे। आपको जायदाद संबंधी कानूनी समस्या खड़ी हो सकती है। आप स्वयं एवं आपके पुत्र दीर्घायु होंगे। आपको अच्छा भवन और उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा।

यदि आपने कुत्ते को मारा या किसी दूसरे से मरवाया, कुत्ता पानी में गिराया, कुल पुरोहित से झगड़ा किया या उससे नाता तोड़ा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो देर से संतान पैदा होगी या संतान सुख में कमी बताता है। पुत्र संतान की अपेक्षा कन्या संतान अधिक होंगी, ऐसी आशंका है। पुत्र जन्म के बाद माता को कष्ट की आशंका है। मधुमेह रोग की आशंका है। रीढ़ की हड्डी, पेशाब की बिमारी होगी ऐसी आशंका है। दुर्घटना या ऊपर से गिरने का भय है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. कुत्ते को चोट न मारें।
2. माता से दूर न रहें।

उपाय :

1. चने की दाल, केसर धर्मस्थान में देवें।
2. कुल गुरु या कुल पुरोहित का आशीर्वाद प्राप्त करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु एकादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि एकादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि तृतीय स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वितीय भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा तथा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराते रहेंगे। आपको बड़े भाईयों से लाभ प्राप्त होता रहेगा। मई के बाद आपको रत्न आभूशण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। आप बचत करने में सफल रहेंगे।

मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से खर्च करेंगे। निवेश के मामले में यह वर्ष अनुकूल रहेगा, और आप अच्छा निवेश भी करेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 14 मई के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढोत्तरी हो सकती है। आपको बड़े भाईयों

का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपके पराक्रम व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। 30 मई के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा और आपको उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है।

यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आपके बच्चे इतने कामयाब होंगे कि आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। उस समय आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल है। यदि शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

14 मई के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, मई के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहें है। मई के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप पूजा पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगे। इस समय शत्रुप क्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे एवं घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेंगी। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप शारीरिक तथा मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। इस समय आप दूर या समीप की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं।आपके सांसरिक कार्य इस मास में अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्यय अधिक होगा। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आपको समय समय पर शुभफल भी प्राप्त होंगे।अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं महिला सहयोगियों से भी लाभार्जन करेंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। इस मास में धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे तथा समाज में आपको पूर्ण यश प्राप्त होगा।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ तथा भाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपके धर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा।संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं श्रद्धा पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा। इस मास में आपकी लाभ दायक यात्रा का योग भी बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सम्मान तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज में आप एक सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा तथा सुख साधनों को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आपकी रूचि रहेगी तथा समाज में पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा व्याप्त रहेगी।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्ता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होगी तथा समाज में आपको उचित सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग अर्जित होगा तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे मानसिक रूप से शान्ति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप सरकार या अधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों आदि की भी आपको इस समय प्राप्ति हो सकती है।अतः यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख तथा प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी इस मास में आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन भी पूर्ण प्रसन्न रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में आपको मनोच्छित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में यश तथा सम्मान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।अतः इस मास को आप सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

मई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रूप से व्यतीत होगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुष्ट मनुष्यों की संगति से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय आप आर्थिक संकट से भी उलझे रहेंगे। अतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता

रहेगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अत्यन्त परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी आप यथोचित पूजन तथा सत्कार नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप हानि प्राप्त करेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से लाभ अर्जित करेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी। जिसके फलस्वरूप कोई धार्मिक उत्सव सम्पन्न हो सकता है। इस प्रकार यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा।

जून 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी अतः इस समय आपके शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं आप से प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय सम्मान एवं सहयोग अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करेंगे। अतः आपकी अर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी इससे समाज तथा मित्रवर्ग में प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी तथा पूर्व विलंबित हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफल रहेंगे एवं सर्वत्र आनन्द एवं प्रसन्नता का वातावरण विद्यमान रहेगा।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है।अतः शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सचेत रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी क्षति हो सकती है।अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपको अपने पारिवारिक जनों तथा बन्धु वर्ग के मध्य यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित होगी तथा परस्पर संबध भी मधुर रहेंगे। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। फलतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाएंगे। आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी इस मास पूर्ण रूचि रहेगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा उसमें बल की वृद्धि होती रहेगी। शत्रुपक्ष को पराजित तथा भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे तथा सभी जनों से

आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। फलतः आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार अदि कार्यो में भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिये अत्यंत ही शुभफलदायक रहेगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुखी रहेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या वस्तुओं की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करने में आप सफल रहेंगे।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया शुभ रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही समाज में अन्य लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके शत्रु प्रबल रहेंगे तथा उनसे आप भयभीत तथा चिंतित रहेंगे। जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्नता तथा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी तथा कई अनावश्यक विध्नबाधाएं भी उत्पन्न होंगी। साथ ही आपका कोई कार्य बंद हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन होने की संभावना बनेगी। समाज में अन्य लोगों से इस मास में आपका अनावश्यक विवाद या संघर्ष होगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शारीरिक कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे

कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्धारा भी किसी प्रकार की क्षति या हानि हो सकती है। अतः सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको द्रव्य लाभ का योग बनेगा। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों को भी आप सुनेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से आप लाभार्जन करने में भी सफल हो सकते हैं। इस समय आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिबृद्धि होगी तथा समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होगी। अतः मन से आप पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया अशुभ रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस समय आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति तथा उद्विग्नता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आपके धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय आपको पूर्ण सहयोग रखना चाहिए तथा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा आप दण्डित भी किए जा सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे एवं धन का व्यय भी अनावश्यक रूप में होता रहेगा। अतः आर्थिक दृष्टि से भी आप शिथिल हो सकते है। साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आप को बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके संबधों में भी इस समय तनाव का वातावरण रहेगा तथा समाज से भी आप उपेक्षा प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पितजनित रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा दुर्घटना अदि से भी शरीर में रक्त विकार की संभावना हो सकती है। इसके अतिरिक्त इस समय अग्नि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आप स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रुओं की ओर से भी चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। इस मास में आपके उत्साह में भी कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम के बाद भी पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं होंगे। शारीरिक अस्वस्थता भी इस समय बनी रहेगी तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव में वृद्धि होगी। अपने बंधु एवं मित्र वर्ग से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव चलता रहेगा।मित्र वर्ग भी इस समय शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिसके कारण मन अशान्त तथा असंतुष्ट रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके सामाजिक जनों से भी वादविवाद या संघर्ष होने की संभावना बनी रहेगी जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः स्त्री से सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा बुद्धिबल से आपके कार्य सफल भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में रूचि उत्पन्न होगी। इस प्रकार आपका यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा।

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगेऔर आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगीजिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभुषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों मेंबढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकि शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारणबेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंग या पयर्टन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ,अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगें।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ फल अधिक मात्रा में प्रदान करेगा तथा शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे। इस समय शत्रु पक्ष से आप चिंतित एवं भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे।साथ ही इस मास में आपके घर में चोरी आदि भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में विघ्न बाधाएं आती रहेंगी। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति उपेक्षा का भाव रखेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वास्थ्य खराब रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते है। इस समय दूर समीप की कोई यात्रा भी कर सकते है। साथ ही सांसारिक कार्यो से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्ययाधिक्य की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा एवं अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे एवं समाज में यथोचित सम्मान भी प्राप्त होगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे साथ ही समाज में आपके यश में भी वृद्धि होगी। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय

व्यतीत करेंगे।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे जिससे आप पदोन्नति या विशेष लाभ भी प्राप्त कर सकते है। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनके परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में इस मास सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। अतः मन से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता एवं श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे तथा आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे। आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा एवं अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस माह में आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं।साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को अपनी बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप समस्त भौतिक सुख अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ फल दायक रहेगा। इस समय महिला वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर सम्पन्न होंगे। इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आपके मन में उत्सुकता उत्पन्न होगी। आपके मित्र तथा बन्धु जनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा सहायता प्राप्त होगी। इस समय आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज में भी आप सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके रूके हुए शुभ कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख साधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे एवं समाज तथा बन्धुवर्ग से पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों से आपका मेल मिलाप रहेगा। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यंत परिश्रम करने पर भी सफलता अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। धर्म के प्रति भी आपमें श्रद्धा की भावना नहीं रहेगी एवं धन हानि के योग भी बनते रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे एवं उनसे किसी भी प्रकार का सुख या सहयोग नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही शत्रुओं से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः इस मास में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति सतर्क रहें तथा अपने कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्नचित रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही आपके आय स्त्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे वांछित लाभ अर्जित होगा। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके चिर प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस समय सफल होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करेंगे तथा इनसे पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी अर्जित करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही उत्तम फल दायक रहेगा।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता

रहेगा। इस समय आपके यश में भी अभिवृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय प्राप्त होगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल हो सकेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न के प्रति भी अधिक रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रुवर्ग इस मास में आपका निर्बल रहेगा फलतः वे आपसे पराजित रहेंगे। स्त्री से भी आप सुख की प्राप्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवहेलना होगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक हानि प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य शुभ रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में भी सफल रहेंगे।साथ ही समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक इनका पूजन तथा आदर करते रहेंगे।साथ ही दूसरे लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपका उचित सहयोग एवं मित्रता रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सुख एवं सहयोग आपको प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी आप यदाकदा प्राप्त करेंगे।अतः आप ठंड या वातरोग से पीड़ित हो सकते है तथा आपके द्वारा कोई ऐसा कार्य भी सम्पन्न होगा जिसके लिए आपको पछताना पड़ेगा जिससे समाज में सम्मान में भी कमी आएगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। आपका शत्रुपक्ष इस समय प्रबल रहेगा अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा

असन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता आएगी या कोई अन्य कार्य छूट सकता या बन्द हो सकता है। साथ ही कार्यक्षेत्र में किसी प्रकार के परिवर्तन होने की भी संभावना रहेगी। समाज में अन्य जनों से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद एवं वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे समाजिक मान सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि के योग भी बनते है तथा शरीर में किसी प्रकार का रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनसे आपको कोई कष्ट नहीं होगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या कीमती द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते है। इससे आप मानसिक प्रसन्नता की प्राप्ति कर सकेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सफल होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्यार्जन करने में समर्थ होंगे तथा पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप सफल भी होंगे। आपके प्रभुत्व में इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी योग्यता को स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा कहीं से शुभ समाचार भी मिलेगा जिससे आपको प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस समय समाज से आपको पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय आप रक्त विकार से भी पीड़ित हो सकते है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को करने में सतर्कता का अनुपालन करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा परन्तु अल्पमात्रा में शुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्य मान रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे फलतः आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनकी ओर से चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा किसी प्रकार से दण्ड भी प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। साथ ही धन का व्यय भी

अधिक मात्रा में रहेगा। अतः आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके अतिरिक्त आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा तथा समाज में सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा कुछ न कुछ विवाद चलता रहेगा। आपकी इच्छाएं भी इस मास में अपूर्ण रहेंगी। अतः बुद्धिमता एवं सावधानी से अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ समय समय पर शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे साथ ही अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धनार्जन भी करेंगे। इस प्रकार आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे तथा समाज में भी न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार की कष्टानुभूति हो सकती है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी इस मास में बलवान रहेगा जिससे आप इनकी ओर से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा इनके द्वारा आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इस समय आप में उत्साह के भाव की न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी परेशान रहेंगे।साथ ही लोभ के भाव की आप में अधिकता दृष्टिगोचर होगी।बन्धु एवं मित्रों से आपके विशेष अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा इस समय मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी परस्पर विवाद होता रहेगा। अतः संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं लाभ अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही अधिकाशं कार्यो को अपनी बुद्धि बल से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप सामान्य धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय मेंसफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण सेयह वर्ष अच्छारहेगा।एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नही तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते है। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुघर्टना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रूचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते है। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नही रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संधंब भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा हैं। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद मे नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए,

नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। सप्तम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके व्यावसायिक जीवन में व्यवधान ला सकती है। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका संधंब भी खराब हो सकता है। 9 अगस्त से राहु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। आप अपने व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकती है।

15 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपकी आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी लोग आपको तंग कर सकते हैं जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। गुरु एवं राहु की युति निवेश के लिए अच्छी नहीं होती है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 फरवरी से आपका समय और ज्यादा खराब हो रहा है अतः धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना होगा। 09 अगस्त से राहु का गोचर अच्छा होने के कारण धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। अचानक आपको मातुल पक्ष के लोगों से लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता है तो उसमें दरार आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफी अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपके शत्रु भी आपके साथ मित्रवत व्यवहार करेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी संतान की उन्नति में बाधा आ सकती है। मानसिक कष्ट व शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं अतः उस समय उनको अपने मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 15 अक्टूबर से समय अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम नहीं रहेगी। लग्नस्थ शनि पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। पेट संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

9 अगस्त के बाद राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस समय के अंतराल में अच्छे हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से समय और बढ़िया हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने

लक्ष्य में सफल होंगे। लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

9 अगस्त से राहु का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक बेरोजगारों को नौकरी मिल जाएगी। व्यवसायियों को उनका ब्राण्ड नेम मिल सकता है प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 फरवरी के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

9 अगस्त के बाद आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि लग्न स्थान का शनि चोट चपेट की सम्भावन बनाएं हुए है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पूजा पाठ में आपका मन कम लगेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक शनिवार शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं लग्न स्थान में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए साल का पूर्वार्द्ध अच्छा नहींरहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी। अथकप्रयास एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। 5 मार्च के बाद वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो उससे आपको हानि हो सकती है। जमीन-जायदाद से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। 23 अक्तूबर के बाद व्यवसाय व नौकरी के लिए लंबी यात्रा हो सकती है। ये यात्रा सफल सिद्ध होगी। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए मिला-जुला रहेगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें।आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

5 मार्च के बाद कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। क्योंकि मई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। इस समय अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें।जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्गों एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए सामान्य रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 5 मार्च के बाद परिवार में छोटे भाई-बहनों का मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो

तो अनुकूलता प्राप्त होगी। 31 मई के बाद परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

23 अक्तूबर से आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकीमाता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी और आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से बरतनी चाहिए ।

5 मार्च के बाद का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंध में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकीसकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मानसिक चिंताएं भी रहेंगी।दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 23 अक्तूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 5 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। अगर आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो सफलता आपके पक्ष में होगा। षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक ही आपको उन्नति व सफलता मिलेगी।

मई के बाद चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 23अक्तूबर से आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपकीछोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 5 मार्च के बाद लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थ स्थल की यात्रा भी करेंगे।

कुछ समय के लिए आप प्रवास भी कर सकते हैं। 23अक्तूबर के बाद देश-विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। 5 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। दैनिक पूजा व दिनचर्या में काफी सुधार होगा। 15 अक्तूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवारके दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपनेबजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ मंगल के कारण गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रु परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं।

8 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच-विचार कर ही उसमें निवेश करें। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छी नहीं होती। द्वितीय स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु 18 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको लोन मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुबिधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। 18 मार्च से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से परिवारिक प्रतिकूलता दूर होगी एवं परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। 8 अक्टूबर से आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार चढ़ाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्ष भर संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। संतान इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद का समय आपके दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है। इस समयान्तराल में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रादि से भी बचना चाहिए।

स्वास्थ्य

द्वितीस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके परिवार, संचय, वाणी व आयु के प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोग होने की संभावना है।

आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जाएंगे। यह यात्रा मनोरंजनात्मक व आनन्ददायक रहेगा। इन यात्राओं में आपको कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 18 मार्च से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मन्दिर निर्माण, धार्मिक कार्य, भण्डारादि कार्यों में आप अच्छा दान करेंगे। गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अधिक से अधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। आप व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे। जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होंगे। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अच्छा नहीं होता। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा, जिससे वह अपने व्यापार को बड़े पैमाने पर ले जाएंगे।

धन संपत्ति

आपकी आर्थिक स्थिति के बारें में क्या कहना, इस साल तो आपकी बल्ले-बल्ले रहने वाली है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मार्च माह के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा।

12 अगस्त के बाद चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस साल आपकी जिन्दगी में बहुत बदलाव आने वाले हैं।

घर-परिवार, समाज

इस साल आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है, बस जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर

अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में कुछ परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और संयम बरतें। पिता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचम स्थान का राहु गर्भपात करा सकता है।

वर्ष का उतरार्द्ध आपकी संतान के लिए काफी उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। उनकी इस कामयाबी से समाज में भी आपके पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा।

स्वास्थ्य

सामान्यतः वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। द्वितीय स्थान के शनि आपको मानसिक परेशानी दे सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आपकी ऊर्जा कम हो रही है और आप कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात इस समय आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्यागकर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के करण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोतों का सृजन करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों

के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए अच्छी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास एवं श्रद्धा उत्पन्न होगी, जिसके चलते आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने आपको नियंत्रित रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठ रहेगा।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

इस वर्ष कर्क राशि का शनि तृतीय भाव में और सिंह राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए बहुत ही अनुकूल है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कार्य व्यवसाय में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। साझेदारी में व्यवसाय कर रहे व्यक्तियों की उन्नति होगी। 6 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। धन संचित करने में आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका व्यय होगा।

अप्रैल के बाद आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

घर-परिवार, समाज

यह साल पारिवारिक जीवन के लिए अच्छा नहीं रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का राहु परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है। ऐसे मे आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आए।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो

सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा मे भी सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपकी दूसरे संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे।

6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह समय काफी अच्छा रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से छोटी-मोटी बीमारियों से आप प्रभावित हो सकते हैं।

गुरु के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पाचन या गैस संबंधित परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। चतुर्थ स्थान का राहु आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। उच्च शिक्षा हेतु किसी अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। चतुर्थ स्थान का राहु एकेडमिक एजूकेशन में कमी करेगा। जो जातक नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। 5 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र पाठ अधिक करेंगे एवं योग इत्यादि क्रियाओं में भी रुचि लेंगे। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों को दान देना, मजबूरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा और यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 15 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ विशेष करेंगे, जिससे आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। क्योंकि लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा एवं नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका भरपूर लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति कर सकते हैं। अगस्त के बाद बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे एवं अपने कार्य में सफल रहेंगे।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात-निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 15 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। रुका हुआ अथवा फंसा हुआ धन वापस मिल सकता है। आपके छोटे भाई व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। भौतिक सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केश मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी और आपको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान के राहु आपके पारिवारिक माहौल में थोड़ी कटुता का वातावरण बना सकते हैं, जिसके कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। उस समय आपको विवेक से काम लेना होगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह के गोचर काफी अनुकूल हो जाएगा। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है एवं नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपको भाइयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। सामाजिक कार्यों के प्रति नैसर्गिक रूप से आपका लगाव बढ़ेगा, जिससे आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। परन्तु 15 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अच्छा हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए उत्तम रहेगा।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। मेहनत करने में कभी वे पीछे नहीं रहेंगे और आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से कोई बीमारी भुगत रहे हैं तो यह समय अधिक कष्ट कारक हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु अग्नितत्व राशि में होने के कारण पेट से सम्बन्धित व पाचन संबंधित रोग दे सकते हैं। 15 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है।

लग्न स्थान के गुरु मन में अच्छे विचार लाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ शनि किसी भी परीक्षा में उन्नति के संकेत दे रहा है। अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।

पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पढ़ाई-लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। अतः वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 15 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है।

तृतीयस्थ शनि एवं राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरुरी है। क्योंकि 27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। जिससे पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

इस साल कारोबार में अच्छी सफलता मिलने वाली है और बेहतर लाभ भी होगा। विभिन्न प्रकार के स्रोतों से धन का आगमन होगा। जो लोग ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा। 26 अप्रैल के बाद समय और भी रोमांचक और शानदार हो रहा है। हालाँकि चतुर्थ स्थान का शनि कुछ परेशानियाँ ला सकता है। लेकिन हताश होने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो के कारण कोई खास प्रभाव नहीं पड़ने वाला है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों को किंचित परेशानी हो सकती है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। अतः अपने से बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छा बनाकर रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपकी मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सहकर्मियों का सहयोग भी मिलेगा। इस समय आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे अरसे से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे। 19 अक्टूबर के बाद आपका समय कुछ प्रभावित हो सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ मे आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। आप अपने कार्यों के प्रति गंभीर बने रहेंगे, जिस कारण धन का आगमन भी सुचारु रूप से होता रहेगा। 26 अप्रैल के बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं। तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

16 सितम्बर के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। भूमि, घर व वाहन खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर विशेष ध्यान दें नहीं तो चतुर्थ स्थान का शनि आपको फंसा सकता है। कुछ अपने ही लोग आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जमापूंजी और लेन-देन के मामले में किसी प्रकार की कोताही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन-देन करें। कोई बड़ा-बुजुर्ग आदमी आपके साथ ठगी कर सकता है। किसी प्रकार का कर्जा लेने से परहेज करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की स्थिति पारिवारिक माहौल में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर रही है। आपके माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार मे किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धर्मपत्नी के लिए अच्छी है। अतः उनके साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद पारिवारिक स्थिति कुछ अनुकूल होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। उन लोगों को अच्छा सहयोग मिलगा। तृतीय स्थान के राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा में उन्नति करेंगे। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में आपका एक अलग ही व्यक्तित्व होगा।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

अप्रैल के बाद आपके बच्चों को उन्नति प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो जाएगा। उसके बाद आपके दोनों बच्चे एक साथ उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु केछछछछ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनर्चया पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

26 अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। लेकिन मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा, अन्यथा आपका वजन बढ़ सकता है। 19 अक्टूबर के बाद से आप अचानक छोटी-मोटी बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। जैसे - सिर दर्द और अपच आपको परेशानी में डाल सकती है। अतः अपनी सेहत के प्रति सावधान रहें। आँख, किडनी और लीवर से संबंधित कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। आलस्य भी आपके उपर हावी रहेगा। इस समय आपको दिमाग स्थिर रखने की आवश्यकता है। सुबह-शाम टहलना और प्रोटीनयुक्त पदार्थ अपने आहार में शामिल करना आपके लिए

हितकर होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को अथक परिश्रम के पश्चात् नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अक्टूबर के बाद वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपकी पूजा पाठ के प्रति विशेष रूचि रहेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। जागरण, साई संध्या इत्यादि धार्मिक गतिविधियों में संलग्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करे एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यदि आप नौकरी करते हैं तो यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने की प्रबल संभावना बन रही है। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं, इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। मई के बाद आपका कारोबार सही रास्ते पर आएगा और मुनाफा भी होगा। प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम मिलेंगे।

प्रतिद्वन्दी आपकी नकल करने की खूब कोशिश करेंगे लेकिन वे अपने मंसूबों में सफल नहीं होंगे। आप अपने अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण रखें। तभी आपको प्रतिष्ठा और धन दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे।

7 अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। नौकरी में पदोन्नती व कार्यों में सफलता मिलेगी। बड़े अधिकारी व उच्च लोगों का सहयोग मिलने के कारण व्यापारिक क्षेत्र में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित करेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। अचानक संचित धन में कमी आ सकती है। परिवार में रोगादि की अधिकता होने के कारण धन व्यय होगा। आर्थिक लेन देन के मामलों में सावधान रहना बहुत ही जरूरी है। जमीन खरीदते समय व निवेश करते समय कागजी कार्यवाई पर पूरा ध्यान देना होगा, नहीं तो आपके साथ धोखा हो सकता है। आधुनिक सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

अक्टूबर के बाद शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा बचाने के बारें में सोचना आपके लिए फायदेमंद होगा। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु जल्दबाजी में कोई भी बड़ा निर्णय न लें नहीं तो हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। जीवनसाथी के साथ अच्छे पल व्यतीत होंगे। पारिवारिक खुशियों में वृद्धि होगी। मई के बाद माता के साथ थोड़ी अनबन हो सकती है। उस समय राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जिससे अंतर्कलह हो सकती है। खुद पर नियंत्रण रखें। परिवार से जुड़ी किसी भी समस्या को छोटा न समझें और तुरन्त उसका हल निकालें।

तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। बांछित मान-सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। अक्टूबर के बाद परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

इस वर्ष आपके बच्चे महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से ही सम्पन्न करेंगे। मई के बाद बांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। आपकी दूसरी संतान अधिक प्रभावित करेगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी, परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उसका आकर्षण बढ़ेगा।

अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़े सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो आपका गर्भ खराब हो सकता है। माता पिता के प्रति संतान के मन में आदर व संमान का भाव कम होगा। इस समय के अंतराल में आपको उन पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो आपके बच्चे गलत संगति में फंस सकते हैं।

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। मई के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। इस पर ज्यादा सोच-विचार करने की जरूरत नहीं है। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी, लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं- जैसे-पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

बजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका बजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ शनि के कारण आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 7 अक्टूबर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा, जिससे आप आरोग्य बने रहेंगे, परन्तु

22 अक्टूबर को शनि ग्रह का गोचर पत्नी एवं संतान के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

कहते हैं कि अच्छे दिन आने से पहले बुरे दिन देखने पड़ते हैं। आपके साथ भी कुछ ऐसा हो सकता है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थितियों में सुधार होगा। 11 मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो स्थान परिवर्तन का योग बन रहा है। अक्टूबर के बाद मेकेनिकल इंजीनियर एवं हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले लोगों की अच्छी उन्नति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राएं होती रहेगी। परन्तु मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी करा सकती है। इस यात्रा से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

अक्टूबर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी। विदेश यात्रा की भी संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में राहु गुरु की युति के कारण सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 11 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। अक्टूबर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जैसे- जागरण, साई संध्या, माता की चौकी इत्यादि। तांत्रिक क्रियाएं व काला जादू के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तति का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- वीरवार के दिन पीला केला गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए मिला जुला रहेगा। मेहनत और लग्न से किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। 13 अप्रैल के बाद राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। 3 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। व्यवसायिक क्षेत्र में रूके हुए कार्य पूरे होंगे। व्यापारिक उन्नति के लिए आपको ऋण लेना पड़ सकता है। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तण होगा। इस अवधि में आप पर आजीविका क्षेत्र में मानसिक दबाव अधिक रहेगा। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। पैतृक संपत्ति, जमीन जायदाद से संबंधित मामलों में अनुकूलता नहीं मिलेगी। कुछ विरोधियों का भी सामना करना पड़ सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारी परेशान कर सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

पंचम स्थान का शनि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। अतः आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखमि उठाने से परहेज करें। वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में भी कमी कर सकता है। अप्रैल के बाद पैसे के मामले में सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास करना अच्छा नहीं होगा।

2 जून से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ हो रहा है। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है। 4 नवम्बर के बाद आपके सारे धनागम के स्रोत खुलेंगे तथा आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु पारिवारिक माहौल में कुछ विषम स्थिति उत्पन्न कर सकता है। अचानक किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि धर्म पत्नी के लिए शुभ नहीं है। 5 अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है अतः इस समय अपने सहन शक्ति को बढ़ाएं एवं अपनी वाणी पर पूर्ण नियन्त्रण रखें।

2 जून के बाद आपके पारिवारिक स्थिति में अनुकूलता आनी शुरू हो जाएगी। आपके माता पिता के लिए यह समय काफी शुभ है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 4 नवम्बर से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी।

4 नवम्बर से समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे तथा उनकी आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। नहीं तो 7 अप्रैल को लग्न स्थान में राहु का गोचर अचानक आपको बीमार कर सकता है, जिससे आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से ज्यादा परेशान हो सकते हैं। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें तथा अपने खान पान पर पूर्ण ध्यान दें।

4 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि करेगी, जिससे आप तंदुरूस्त एवं सेहतमन्द बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। मार्च के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में वांछित सफलता नहीं मिलने के कारण आप निराश हो सकते हैं। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो 2 जून के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

विद्यार्थियों के लिए 4 नवम्बर से समय काफी शुभ हो रहा है। अतः आपको वांछित शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

साल के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। 5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है।

13 जुलाई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ सुखद यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशष पूजा का आयोजन करेंगे। परन्तु 7 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में राहु का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। 2 जून के बाद गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करें तथा सोमवार का व्रत करें ।
- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मेहनत और लगन से किये गए कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसायी व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। परन्तु लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को ज्यादा लाभ मिलेगा। यदि आप शेयर, लॉटरी व सट्टा से जुड़े है तो यह समय काफी शुभ है। सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि आपको उच्चमहत्वाकांक्षी बना रही है। आप अधिक आय प्राप्त करने के प्रयास करते रहेंगे तथा परिश्रम के बल पर अपने व्यवसाय में वृद्धि करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई नया कार्य करना चाहते हैं तो यह समय अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि मित्रता में धोखे का योग बना रही है। 3 दिसम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः वर्षान्त में व्यापारिक निर्णय बहुत ही सोच विचार कर लें।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में एकादश स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। यदि आप शिक्षा, कानून व बैंक से जुड़े हैं तो इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। धनागम के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। हालांकि 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्त से सम्बन्धित गतिविधियों के लिए यह समय सही नहीं है अतः लेन देन करते समय सावधान रहें। लग्नस्थ राहु के कारण आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

28 जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए व फंसे हुसे पैसे मिलेंग। अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होने से आपको आनन्द की अनुभूति होगी। बहुत दिन से चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। पिता व भाईयों से धन लाभ होगा। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर अचानक धन व्यय होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

घर-परिवार, समाज

घर परिवार के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि से दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव बना रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिन्ता हो सकती है। परन्तु 6 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए काफी शुभ है। परिवार के सभी लोग एक दूसरे का सहयोग करेंगे, जिसके परिवार में स्नेह-सौहार्द का संचार होगा तथा भावनात्मक लगाव में भी वृद्धि होगी। 28 जून के बाद लम्बे समय से चली आ रही संतान संबंधी दिक्कतों का अन्ततः समाधान हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी तथा मांगलिक कार्य भी सम्पन्न होंगे। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को ग्रहण करने में भी आप समर्थ होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। मां-बाप के प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 6 अप्रैल से समय थोड़ा कष्टकर हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

28 जून से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। जातक को जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो जल्दी लाभ मिलेगा। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क में घ ूमना भी आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि रोग प्रतिरोधक शक्ति को विकसित कर रही है। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान श्रेष्ठ रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता में उन्नति के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा

होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में सफलता मिलेगी।

28 जून के बाद नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। साल के अंत में रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी अधिक यात्राएं होंगी। व्यावसायिक यात्रा के कारण आप ज्यादातर घर से बाहर ही रहेंगे। 6 अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तीर्थ यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी। 11 दिसम्बर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। आलस्यता व दीर्घ सूत्रता की भावना बनी रहेगी। दैनिक पूजा भी प्रभावित होगी। इस समय के अंतराल में आप कर्मनिष्ठ होंगे अर्थात् अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे तथा आप दान पुण्य अधिक करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे तथा दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय मन्त्र का पाठ करें तथा शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए तुला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें तथा घृणी सूर्याय नमः मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें तथा बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- आठमुखी रुद्राक्ष रत्न धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

काम काज के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक क्षेत्र बढ़ाना चाहते हैं तो अप्रैल के बाद ही विस्तार करें क्योंकि उससे पहले का समय अच्छा नहीं है। नौकरी करने वाले लोगों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कार्यस्थल पर आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है। आपकी छवि को धूमिल करने की कोशिश भी की जा सकती है, इसलिए सतर्क रहें। नौकरी छोड़ने का भी मन बना सकते हैं। वरिष्ठ सहकर्मियों से झगड़ा करने से बचें। सरकारी नौकरी वालों को ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है, नुकसान होने की संभावना ज्यादा है।

साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रभावित रहेगा। आपके मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। सकारात्मक बने रहें। 25 सितम्बर के बाद का समय आपके पक्ष में होगा। विरोधी शान्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग खुलेंगे। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का राहु खर्च में वृद्धि करेगा। निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक अनुकूलता के कारण लाभ होगा। शेयर, सट्टा व जुआ आदि से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। नयी संपत्ति क्रय करने का भी सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध में गोचर प्रतिकूल होने के कारण चोरी, बीमारी, दुर्घटना व अपव्यय के योग हैं। यदि धन संपत्ति से संबंधित कोई मामल कोर्ट कचहरी में चल रहा है तो उसमें सफलता प्राप्त नहीं होगी। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिसके कारण आपको कर्ज लेना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति

अनुकूल नहीं रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रहा है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद न करें। 6 मई से समय कुछ अच्छा होगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको कुछ पारिवारिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय में समझदारी से काम लेना आपके लिए हितकर होगा। आपके रास्ते में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। 25 सितम्बर के बाद षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे तथा समाज में लोग भी आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में पंचम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है, जिसका असर उनकी शिक्षा पर भी पड़ेगा, परन्तु 6 मई से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेंगे। बच्चे मान सम्मान में वृद्धि व गर्व का अनुभव कराएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध दूसरी संतान के लिए शुभ नहीं है। आलस्य के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आने कि संभावना बन रही है। उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां होने की प्रबल संभावना बन रही है। मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा। खान पान के साथ-साथ अपनी दिनचर्या में सुधार करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

6 मई से समय स्वास्थ्य के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि होने के कारण मानसिक शान्ति बनी रहेगी। आप दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। अगस्त के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान होंगे। परन्तु 25 सितम्बर के बाद समय काफि अच्छा हो रहा है। छठे स्थान का शनि आपको व्याधि मुक्त रखेगा तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विदेशी भाषा सीखने वाले लोगों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उन लोगों की उन्नति होगी। 6 मई के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को भी सफलता मिलेगी।

25 सितम्बर के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षा के लिए बहुत ही शुभ होता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। द्वादश स्थान का राहु अचानक विदेश यात्रा करा सकता है। 6 मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का अंत बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक द्वंद्वता के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। पंचमस्थ शनि के कारण पूजा-पाठए यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि कर्मों में आपका मन नहीं लगेगा, परन्तु 6 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सांस्कृतिक उत्सवों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा दान पुण्य अधिक करेंगे। अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दुर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डुओं का भोग लगाएं।

- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- चन्दन का तिलक लगाएं तथा गुरु के मन्त्र का पाठ करें।
- साधु संन्यासियों की सेवा करें तथा अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं एकदश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी वाले लोगों को जबरदस्त सफलता मिलने की संभावना है। आपको उच्च अधिकारियों का सहयोग व पदोन्नति मिलने के भी योग बने हुए हैं। आपके वेतन में बढ़ोत्तरी हो सकती है व कंपनी की तरफ से आपको सुख-सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में आपको वांछित सफलता भी मिल सकती है। अगर कोई नया काम करने की सोच रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए फायदेमंद होगा। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वाद-विवाद से बचें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सरकारी या निजी क्षेत्र से कोई बड़ा प्रोजेक्ट मिल सकता है। शॉर्टकट या कम मेहनत से धन कमाने का विचार अगर आपके मन में आ रहा है तो इस अवधि में उसका त्याग करें। शेयर बाजार में लंबी अवधि के लिए निवेश करना आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा। यदि आप प्रॉपर्टी से सम्बन्धित कार्य करते हैं, तो इस अवधि में अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहने वाला है। धनागम में अनियमितता बनी रहेगी। भौतिक सुख सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। द्वादशस्थ राहु के कारण आपको थोड़ी आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए धन बचाकर रखें और फिजूलखर्ची से बचें। किसी भी प्रकार का धन संबंधित लेन-देन करते वक्त सावधानी बरतें क्योंकि किसी नजदीकी व्यक्ति से धोखा मिलने की संभावना बन रही है।

22 जून से आर्थिक मामले के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आमदनी के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। किसी सरकारी आदमी के सहयोग से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा तथा कोई मुनाफे का बड़ा सौदा हाथ लग सकता है। जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी तथा आप वांछित बचत करने में सफल होंगे।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे

परिवार का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध और मधुर होंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है, परन्तु 22 जून के बाद यह स्थिति भी अच्छी हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई बहनों के लिए उन्नतिकारक व श्रेष्ठ है। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे समाज में आपकी ख्याति और बढ़ेगी तथा सभी लोग आपको सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 22 जून के बाद अचानक आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही अनुकूल है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध कोई खास नहीं रहेगा। द्वादशस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। परन्तु 22 जून के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल हो जाएगा।

यदि आप किसी पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में उससे छुटकारा मिल सकता है। 27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगी। आप आपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन करें एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालो विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। द्वादशस्थ राहु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको खूब लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। धार्मिक गतिविधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- अमावस्या तिथि को किसी ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक लिहाज से ग्रह स्थिति आपके पक्ष में बनी हुई है। कार्य व्यवसाय में जो परेशानियां आ रही थी उन सब से छुटकारा मिलेगा। व्यावसायिक गतिविधियां तेजी से चलेंगी। व्यापार में काफी ठोस व बड़े निर्णय लेंगे, जिससे आपके मुनाफे में बढ़ोत्तरी होगी। अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों से आप खुद को आगे पाएंगे। कस्टम, रॉयल्टी, वैट, इनकम टैक्स आदि से सम्बन्धित परेशानियां आ सकती हैं। किसी सरकारी मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है लेकिन घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद उसका भी समाधान मिल जाएगा।

11 सितम्बर के बाद आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं अतः उस समय आप सतर्क रहें तथा किसी पर भी आवश्कता से ज्यादा विश्वास न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति होगी तथा अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आपको बड़े अधिकारियों का समय समय सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अचल संपत्ति के साथ साथ वाहनादि का सुख भी मिल सकता है। मांगलिक कार्यों में या सामाजिक कार्यों में आप अधिक व्यय करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं परन्तु जुलाई के बाद यह स्थिति भी अच्छा हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके पास कोई पुराना कर्ज है तो उससे छुटकारा पा सकते हैं। आमदनी के नए स्रोत मिलने की उम्मीद है। विदेश अथवा दूर की यात्रा के माध्यम से भी धनार्जन होने के योग बन रहे हैं। यदि आपका पैसा कहीं रुका हुआ है तो थोड़े से प्रयास से उसकी प्राप्ति हो सकती है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा में अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में कोई मांगलिक कार्य

सम्पन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में सुख और शान्ति का वातावरण बनेगा। भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध और मधुर होंगे। भाई-बहनों की उन्नति होगी। दूर रहने वाले पारिवारिक सदस्यों का घरागमन अथवा उनके साथ सम्बन्धों में सुधार होने से मन प्रसन्न होगा। परिवार के सभी सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति अच्छा रहेगा। माताजी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

जुलाई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों को उदर संबंधित रोग हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर पड़ेगा। निर्णय लेने की शक्ति में कमी व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। दूसरी संतान के लिए यह समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। लेकिन घबराने की बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों के लिए शुभ हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के लिए शुभ है। संतान के उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा शिक्षा-दीक्षा में आने वाली रुकावटें दूर होंगी। आपके बच्चों को वांछित सफलता मिलेगी। यदि आपकी दुसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या सुधारें तथा व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करें। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष काफी अच्छा रहेगा। छठे स्थान में शनि तथा एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। सभी शत्रुओं को परास्त कर सफलता के मार्ग पर आप सबसे आगे रहेंगे। जो

व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में वांछित सफलता मिलेगी।

यदि आप कोई व्यासायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। यदि आप किसी नए शिक्षण संस्थान की तलाश में हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको एक अच्छे संस्थान की प्राप्ति होगी जहां से शिक्षा लेने के बाद आप को नई और सही दिशा की प्राप्ति होगी। जो लोग दूर देश में जाकर शिक्षा लेना चाह रहे हैं, उनके लिए भी समय अनुकूल है। बेरोजगार जातकों को इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

30 जुलाई के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी। परन्तु 30 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति आकृष्ट होगा।

आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। लक्ष्य प्राप्ति के लिए आप विशेष रूप से ईश्वर की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रुषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- प्रतिदिन गणेश जी के निम्नलिखित मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। वर्ष के प्रारम्भ में अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद समय बहुत ही शुभ होने वाला है।

आपके प्रयासों की सार्थकता ही आपकी सफलता को सिद्ध करेगी। जिससे विरोधी पक्ष भी आपकी तारीफ करने पर मजबूर हो जाएगा। सहयोगियों की सहायता से मान-सम्मान बढ़ सकता है। आय के बहुत सारे नये स्रोत सामने आ सकते हैं। जो लोग नौकरी में हैं, उन्हें तरक्की मिलने से वेतन वृद्धि हो सकती है। आप अपनी सारी ऊर्जा अपने नए प्रोजेक्ट में लगाएँ और अपने प्रयासों को दोगुना करें।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। 16 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपके संचित धन में वृद्धि होगी। कोई पुराना उधार वापस मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। जिसके चलते आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने के बारे में सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। ऋण और वित्तीय मामलों के संदर्भ में आपके प्रयास सफल हो सकते हैं।

यदि आप किसी से धन लिया हो अथवा उधारी हो तो उसे भी चुका कर कर्ज में कमी कर सकेंगे। आर्थिक सुधार के कारण व्यापार में सम्मान बना रहेगा। धन प्राप्ति के लिए आपको भाग दौड़ करनी पड़ सकती है। लेकिन आपको अपेक्षित नतीजे मिलने के कारण आत्म संतुष्टी भी होगी। भूमि व वाहन से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपकी माता जी के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक

जीवन में थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। एक बात जो आपको सभी लोगों से जुदा करती है, वह है आपका अचानक क्रोधित होना और जल्दी शांत नही होना। यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमान जनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। घर की शोभा बढ ाने के लिए कुछ सुंदर वस्तुओं की खरीददारी संभव है।

संतान

संतान की दृष्टि से 16 फरवरी तक समय अच्छा नहीं है, परन्तु उसके बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है, परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। उनको शारीरिक एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। आलस्यता एवं दीर्घसूत्रता के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपको स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। बाहर का खाना खाने से बचें अन्यथा फूड पॉयजनिंग से पीड़ित हो सकते हैं। आवश्यकता से अधिक परिश्रम आपको स्वास्थ्य की हानि दे सकता है इसलिए बेहतर है की आप पूर्ण विश्राम भी करें। त्वचा संबंधी विकार हो सकते हैं। 16 फरवरी के बाद समय अनुकूल हो रहा है। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो को सफलता मिलेगी परन्तु अथक परिश्रम के बाद। यदि

आप किसी के मित्र के साथ साझेदारी में कोई नया काम शुरु करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगा।

यात्रा-तबादला

16 फरवरी के बाद नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह तबादला आपके घर से दूर भी हो सकती है। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान सम्पन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर मन्त्र साधना कर सकते हैं। गुरुजनों पर आपको अटूट विश्वास होगा।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।
- माता पिता व अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(22/12/2025 - 30/11/2028)

सूर्य की महादशा 22/12/2025 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 30/11/2028 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य अष्टम भाव में अवस्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, पिता, राजकीय कृपा, साहस तथा क्रोध का प्रतिनिधित्व करता है जबकि अष्टम भाव अप्रत्याशित लाभ, छुपी प्रतिभा, आध्यात्मिक लक्ष्य तथा लाभ का सूचक है। अतः इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, साझेदारों से लाभ तथा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हागी।

स्वास्थ्य :

आपकी जीवन शक्ति में वृद्धि होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपको आपके मार्ग में आनेवाली सभी समस्याओं का सामना करने की शक्ति तथा उत्साह प्राप्त होगा। आप में प्रतिरोध की क्षमता प्रबल है। कभी-कभी आप सरदर्द, लू, प्रदाह आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इन सभी समस्याओं से बचाव के लिये आपको सन्तुलित आहार लेना चाहिए। सभी अतिशयताओं का परित्याग करें।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं ओर आपके साधन पर्याप्त हैं। फिजूल खर्ची से बचें अन्यथा आपका बैंक बैलेंस प्रभावित हो सकता है। आपको पैतृक अथवा अप्रत्याशित धन की प्राप्ति हो सकती है। सट्टेबाजी और निवेश का परित्याग करें। आपको सेवा-अवकाश से लाभ, बोनस तथा ग्रैच्यूइटी की प्राप्ति हो सकती है। कुल मिलाकर आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी।

व्यवसाय :

आपको सफलता, यश ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। सूर्य की अष्टम भाव में स्थिति के कारण कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं, किन्तु वे लाभदायक सिद्ध होंगे। आप किसी उच्च सरकारी पद पर आसीन होंगे क्योंकि आपमें प्रशासकीय क्षमता विद्यमान है। आप संस्थाओं, निगमों और अन्य संगठनों के प्रबन्धक पद के लिये अति उपयुक्त हैं। आप सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी-वैज्ञानिक सेवाओं का चयन अपनी जीवन वृत्ति के लिये कर सकते हैं। पेशेवर खेल भी लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। सेवारत व्यक्तियों को सफलता, आमदनी, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ की प्राप्ति होगी जबकि व्यापारियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

परिवार :

बच्चों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको अपने विकल्पों के प्रति हठधर्मी नहीं होना चाहिए और अपने विचार दूसरों पर आरोपित नहीं करने चाहिएं। अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न हो सकता है। आपके जीवन साथी को आर्थिक लाभ मिलेगें और उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आप कैसा व्यवहार करें यह आप पर निर्भर करता है। आपकी माता को सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा और बच्चों से सुख मिलेगा। आपके पिता

की आध्यात्मिक कार्यों में रुचि हो सकती है। आपके छोटे भाई-बहनों को उनके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी, और मातृ-पक्ष से लाभ मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को जीवन-वृत्ति में सफलता मिलेगी। आप स्वभाव से उदार तथा स्वामिभक्त हैं अतः आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी।

शिक्षा :

आप धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कर सकते हैं। अध्यात्म में आपकी रुचि हो सकती है।

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(22/12/2025 - 18/09/2026)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 22/12/2025 को प्रारंभ होगी और 18/09/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी प्रसिद्धि बढ़ेगी, धन का संचय होगा, सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे। निवेश से लाभ होगा। शिशु का जन्म हो सकता है। धर्म में रुचि होगी। संतान के साथ मामूली मतभेद हो सकते हैं। आपको मामूली बीमारी हो सकती है। वसीयत आदि से अप्रत्याशित धन मिल सकता है। आपके बहुत से कार्य समाजसेवार्थ होंगे।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा। आपके पिता को प्रयास से सफलता मिलेगी। माता की अध्यात्म में रुचि होगी। भाई-बहनों का समय भाग्यशाली रहेगा। उनके लिए लोकप्रियता, समृद्धि और यात्रा का योग है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। उनका विवाह हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को लाभ होगा।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(18/09/2026 - 26/07/2027)

आपकी सूर्य की महादशा 22/12/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 18/09/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार और सट्टेबाजी में लाभ होगा। साझेदारों से लाभ मिलेगा। मुकदमे में विजय होगी। आपका विवाह हो सकता है। जनमानस से व्यापार, व्यवहार द्वारा लाभ हो सकता है। आपको तरक्की, सम्मान, प्रसिद्धि, धन और सुख की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य, पद और अधिकार उत्तम होंगे। आपके बहुत से मित्र होंगे जिनसे लाभ मिलेगा। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी विदेशियों से व्यवहार और अनुबंधों में सफल रहेंगे। आपके पिता को धन मिलेगा, आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। माता को अचल संपत्ति से लाभ होगा। भाई-बहनों को सट्टेबाजी या निवेश से लाभ होगा, उनकी कोई लंबी मात्रा हो सकती है या उच्चशिक्षा में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो समय लाभकारी रहेगा। परामर्शदाताओं को सम्मान प्राप्त होगा। व्यापारियों को कार्य में सफलता मिलेगी। आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, वाक्शक्ति सुदृढ़ रहेगी। उनकी छोटी यात्राएं हो सकती हैं, परिश्रम से सफलता मिल सकती है।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। आपको स्नायविक विकार, पेट के दर्द आदि से सावधान रहना चाहिए। कष्टों से छुटकारे के लिए समाजसेवी संस्थाओं, आश्रम आदि को दान दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(26/07/2027 - 01/12/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 22/12/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 26/07/2027 को आरंभ होकर 01/12/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में वाहन सुख मिलेगा। माता-पिता से सहायता मिलेगी और मित्रों से लाभ होगा। जायदाद से धनार्जन होगा। कार्य-व्यवसाय में असंतोष हो सकता है क्योंकि प्रगति के अवसर कम हो सकते हैं। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं।

आप में साहस और ऊर्जा भरूपर रहेंगे ओर प्रसिद्धि प्राप्त होगी। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं या कोई लंबी यात्रा हो सकती है।

जीवनसाथी को समाज, कार्य-व्यवसाय में प्रगति प्राप्त होगी। पिता के धन में वृद्धि होगी; साझेदार से लाभ होगा। आपकी माता का ध्यान धर्म में लगेगा। भाई-बहनों के शत्रु परास्त होंगे; इच्छाओं की पूर्ति होगी।

आपकी संतान पर मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ सकता है। उनकी भाग्यशाली यात्राएं हो सकती हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारों से लाभ होगा। व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

छाती, ज्वर और संक्रमण आदि से सतर्क रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए श्वान को भोजन दें या भूरे श्वान को पालें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(01/12/2027 - 30/11/2028)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आपका दांपत्य सुख उत्तम रहेगा। जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ होगा। व्यापार में धनार्जन होगा। विरासत में अचल संपत्ति मिल सकती है। अध्यात्म में

रुचि होगी। दुर्घटना से रक्षा होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा। सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। दान-धर्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी की प्राच्य विद्या, तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। उन्हें अप्रत्याशित धन मिल सकता है। घरेलू सुख उत्तम होगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे, उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। माता को निवेश या सट्टे से धनलाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, कर्ज़ से मुक्ति का योग है। आपकी संतान लोकप्रिय, प्रसन्न, संतुष्ट होगी; परिवार के सदस्यों और मित्रों का उन्हें सहयोग मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आपको सफलता मिलेगी, कार्यालय में संबंध उत्तम रहेंगे, वाक्शक्ति उत्तम रहेगी। परामर्शदाताओं को लाभकारी परिणाम मिलेंगे। व्यापारीगण सकारात्मक अनुबंधों पर हस्ताक्षर करेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उत्सर्जन तंत्र, नेत्र और गले के रोगों से बचें। अशुभ से बचने के लिए श्वेत वस्त्र, चावल, चीनी दान में दें।

महादशा :– चन्द्र
(30/11/2028 - 01/12/2038)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपकी कुंडली में यह 30/11/2028 को आरंभ और 01/12/2038 को समाप्त होगी।

चन्द्र नवम् भाव में अवस्थित है। अतः अपने दशा काल में आपको उत्तम स्वास्थ्य, धन तथा समृद्धि प्रदान करेगा और आप उदार होंगे। आपका झुकाव ईश्वर की ओर होगा क्योंकि नवम भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा दार्शनिक लाभ, अन्तर्ज्ञान, बलिदान, दान-पुण्य के कार्य, स्वप्न, दृष्टि, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का सूचक है।

स्वास्थ्य :

महादशा का स्वामी चन्द्र नवम् भाव में अवस्थित है। यह अपने भाव की रक्षा का रहा है और कोई अशुभ शक्ति इसका नाश नहीं कर सकती। इस दशा-काल में किसी बड़ी बीमारी या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है और एक सुखमय तथा क्रियाशील जीवन बीतेगा। आप सामान्य ढंग से अपने कर्त्तव्यों तथा दैनिक कार्यों का सम्पादन करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

इस दशा काल में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और आप उसका विस्तार करेंगे। आप पिता की सहायता तथा समर्थन से, जो स्वयं भी समृद्धिशाली होंगे, अपनी संपत्तिओं की वृद्धि करेंगे। इस अवधि में आपकी विदेश-यात्रा की सम्भावनाएं हैं और अपनी सम्पत्ति का विस्तार करने के अवसर आपको मिलेंगे।

व्यवसाय :

एक व्यवसायी के रूप में आप एक-सुखी व्यक्ति होंगे और इस अवधि में सन्तुष्ट रहेंगे। यदि आप सेवारत हैं तो जीवन में उन्नति के पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे और यदि व्यवसायी हैं तो न्यायप्रिय और धर्मपरायण होने के कारण आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे और आपके सहकर्मी और श्रेष्ठ तथा अधीनस्थ व्यक्ति आपकी सराहना करेंगे। व्यापार के क्रम में आप विदेश-यात्रा का सकते हैं और वहां भी आप ख्याति अर्जित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण व शांतिपूर्ण होगा। आपकी पत्नी आपका सहयोग तथा सहायता करेंगी। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी रहेंगे और माता-पिता, खासकर पिता, की आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय व उपयोगी बनाने में भूमिका अहम होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षण-वृत्ति (छात्रवृत्ति) में आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और सफलता आपके कदम चूमेगी। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लें तो उसमें भी सफल होंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(30/11/2028 - 30/09/2029)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 30/11/2028 को प्रारंभ होकर 01/12/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 30/11/2028 को प्रारंभ होकर 30/09/2029 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। चंद्रमा मन का कारक है। नवम भाव में स्थित होकर यह तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप समृद्ध और गुणवान होंगे। ध्यान-साधना में रुचि होगी और सत्कार्यों में भाग लेंगे। गुरु की सेवा करेंगे। आपके पिता को आप से लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। रात के समय सोने से पूर्व चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए चंदमा को दूध अपिर्त करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(30/09/2029 - 01/05/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 30/11/2028 को प्रारंभ होकर 01/12/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 30/09/2029 को प्रारंभ होकर 01/05/2030 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर मंगल कुंडली के 11,2 और 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है। इस अवधि में आप व्याधिग्रस्त, व्यसनों से त्रस्त, कटुवचन बोलने वाले हो सकते हैं। विवाहित जीवन में तनाव संभव है। धन की कमी हो सकती है। विवाह के अतिरिक्त संबंध बन सकते हैं। आय में कमी का योग है।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(01/05/2030 - 31/10/2031)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 30/11/2028 को प्रारंभ हुई और 01/12/2038 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 01/05/2030 को प्रारंभ होकर 31/10/2031 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप अपने कार्य में प्रवीण होंगे, खूब यात्राएं करेंगे। विश्व के कार्यकलापों का ज्ञान बढ़ेगा, प्रसिद्धि मिलेगी। साहस जरुरत से अधिक बढ़ सकता है। वासना में वृद्धि के कारण अवांछित कार्य कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(31/10/2031 - 01/03/2033)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 30/11/2028 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 31/10/2031 को प्रारंभ होकर 01/03/2033 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभग्रह है और द्वितीय भाव में स्थित होकर कुंडली के 6, 8, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आपको हर काम में सफलता मिलेगी। धन का संचय होगा और पारिवारिक वातावरण सुख-सुविधा से युक्त होगा। व्यायाम द्वारा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कटुता में कमी आएगी। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। ईमानदारी की भावना बढ़ेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(01/03/2033 - 01/10/2034)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 30/11/2028 को प्रारंभ हुई और 01/12/2038 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 01/03/2033 को प्रारंभ होकर 01/10/2034 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई,

भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के लग्न, 5 और 8 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आपके बहुत से कर्मचारी और मातहत होंगे। मित्रों की संख्या कम होगी। आय संभवतः सरकारी माध्यम से होगी। राजनीति में सफलता और सम्मान प्राप्त हो सकते हैं। जीवन स्वस्थ, प्रसन्नतायुक्त और दीर्घायु होगा। शनि शक्तिशाली ग्रह है और जातक के धैर्य और कर्मठता की परीक्षा लेता है। भाग्योदय में देर हो सकती है मगर होता जरुर है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें :

1. नदी, तालाब, घर के मछलीघर आदि की मछलियों को आटे की गोलियां दें।
2. भोजन का पहला कौर गाय को दें।
3. पीपल को जल दें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(01/10/2034 - 01/03/2036)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 30/11/2028 को प्रारंभ हुई थी और 01/12/2038 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 01/10/2034 को प्रारंभ होकर 01/03/2036 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर बुध लग्न पर दृष्टिपात कर रहा है और अपने प्रभाव को लग्न के कार्यो पर डाल रहा है।

इस अवधि में आप गुणवान और दयालु होंगे। वेषभूषा आकर्षक रहेगी। विधि और व्यापार के ज्ञान में वृद्धि संभव है। कार्यक्षमता बढ़ेगी और सफलता सरलता से प्राप्त होगी।

ज्ञान, विज्ञान, गणित, ज्योतिष, खगोलशास्त्र आदि में आपकी रुचि रहेगी। धार्मिकता बढ़ेगी। स्वास्थ्य और शारीरिक बल उत्तम रहेंगे। ज्ञान का दुरुपयोग करने से बचें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(01/03/2036 - 30/09/2036)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 30/11/2028 को प्रारंभ हुई ओर 01/12/2038 को समाप्त

होगी। केतु अंतर्दशा 01/03/2036 को प्रारंभ होकर 30/09/2036 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में अचानक कई परिवर्तन हो सकते हैं। जायदाद आदि में हानि हो सकती है; सुख-चैन में कमी संभव है। माता को भी कष्ट हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान जी की पूजा करें। प्रतिदिन हनुमान चालीसा का जाप करें। मंगलवार और शनिवार को व्रत करें। व्रत के दिन नमक न लें। इसके अतिरिक्त कुत्तों को भोजन दें और भूरा कुत्ता पालें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(30/09/2036 - 01/06/2038)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 30/11/2028 को प्रारंभ होकर 01/12/2038को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 30/09/2036 को प्रारंभ होकर 01/06/2038 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली होंगे। धन-धान्य से परिपूर्ण रहेंगे। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। भावनात्मक समस्याओं से सावधान रहें।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(01/06/2038 - 01/12/2038)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 30/11/2028 को प्रारंभ होगी और 01/12/2038 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 01/06/2038 से प्रारंभ होकर 01/12/2038 को समाप्त होगी।

महादशा :- मंगल
(01/12/2038 - 30/11/2045)

मंगल की महादशा को 01/12/2038 आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 30/11/2045 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। इसके पहले आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपको लाभ, इच्छाओं की पूर्ति तथा भौतिक समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ और पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है तथा आपके अच्छे स्वास्थ्य की संभावना है।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवनी शक्ति और उत्साह होगा। अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप में आवश्यक कर्मशक्ति तथा ऊर्जा होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपका स्वास्थ्य एक सीमा तक प्रभावित हो सकता है। आँख तथा मूत्राशय संबंधी समस्याओं, सरदर्द, ज्वर आदि की सम्भावना है। कुछ घाव तथा चोट आ सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनोपार्जन अपने प्रयासों से करेंगे। पैतृक सम्पत्ति, तथा ट्रस्ट से आय, बोनस या अवकाश ग्रहण से लाभ की सम्भावना है। आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा। आपको कहीं से अचानक धन की प्राप्ति होगी। जीविका के लिए सशस्त्र सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य, लोहा-इस्पात से सम्बन्धित व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, समुद्री उत्पाद, कुटीर उद्योग आदि का व्यापार उत्तम होगा। आप एक सफल दन्त चिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों की छोटी यात्राएं होंगी, उन्हें कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपका चिर प्रतीक्षित स्थानन्तरण या परिवर्तन होगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों की आय में वृद्धि होगी। हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा। व्यापार में उन्नति होगी और आय में वृद्धि होगी। अप्रत्याशित

परिवर्तन तथा विकास की सम्भावना है जो अन्ततः लभदायक होगा। मार्केटिंग तथा जन-सम्पर्क कौशल उत्तम होगा और आप अपने क्षेत्र में बहुत अच्छा करेंगे।

वाहन, यात्रा, सम्पत्ति :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको वाहन तथा पारिवारिक सुख मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लम्बी यात्राएं होंगी। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। सम्पत्ति की दृष्टि से यह एक उत्तम दशा है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा में कुछ परिवर्तन हो सकता है। विज्ञान, लेखा, स्थतिकी, गणित आदि में आपकी रुचि होगी। आपका शोध की ओर झुकाव होगा और आप इस दशा के दौरान अपनी परियोजना पूरी करेंगे। आपकी खेलों तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में रुचि होगी। उच्च शिक्षा के लिए यह दशा उत्तम है। आपका दाखिला आपकी पसन्द की संस्थाओं में होगा।

परिवार :

परिवर में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की आय और लाभ में वृद्धि होगी। आपको आपके जीवन साथी से लाभ होगा। जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिए निवेश व सट्टा लाभदायक तथा समृद्धिदायक होगा। आपके पिता का अच्छे कार्य में व्यय होगा, उनकी यात्रा होगी और साझीदारी में लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विरोधियों पर विजय मिलेगी, कार्य स्थान में स्थिति सुधरेगी और स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति में सुधार होगा। आपके बड़े भाई-बहनों के कार्यों में कुछ परिवर्तन होगा। इस दशा के दौरान आप में पहलशक्ति बहुत होगी और आपका खिंचाव पर विज्ञान की ओर होगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। इसके बाद आने वाली राहु दशा के कारण कुछ समस्याएं आएंगी। गुरु आराम व सुख देगा और आपका विवाह भी हो सकता है। शनि के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होंगी। बुध की अंतरदशा के फलस्वरूप आपको यश और ख्याति, सम्पत्ति, समृद्धि, उच्च प्रतिष्ठा तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। केतु कुछ तनाव उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको आराम, विलासिता, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी जबकि सूर्य के कारण लम्बी यात्राएं होंगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(01/12/2038 - 29/04/2039)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/12/2038 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 01/12/2038 को प्रारंभ होकर 29/04/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपकी आय बढ़ेगी। कटु और तीखे बचनों से बचें। परिवार में शांति बनाये रखें। आपकी क्रियाशीलता बढ़ेगी; विभिन्न हॉबियों में हिस्सा लेंगे। मंगल की एकादश भाव पर दृष्टि के कारण कार्यों में सफलता मिलेगी, दबदबा बढ़ेगा। प्रगति सरलतापूर्वक होगी।

आपके जीवनसाथी धन कमाएंगे। आपको उनसे लाभ होगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे। बेकार की यात्राएं होंगी। उन्हें धनहानि से सावधान रहना चाहिए। माता धनी बनेंगी ; निवेश से लाभ होगा। भाई-बहनों की सक्रियता और जिम्मेदारी बढ़ेगी; उनके प्रतिद्वंद्वी परास्त होंगे।

आपकी संतान की शिक्षा-दीक्षा उत्तम रहेगी। वे तकनीकी विषयों में खास तौर पर सफल रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो अपनी पथप्रदर्शन शक्ति का परिचय देंगे। व्यापारी और परामर्शदाता धन कमाएंगे।

उत्सर्जन तंत्र के रोग और गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(29/04/2039 - 16/05/2040)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/12/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 29/04/2039 को प्रारंभ होकर 16/05/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित घटनाएं आपको सुर्खियों में रखेंगी। समाजसेवा में मन लगेगा। परिश्रम और दक्षता द्वारा सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। माता से लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। निवास में परिवर्तन या सुधार संभव है। भूमि से खूब लाभ हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता खूब धन कमाएंगे। उनके जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। आपकी माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें उपहार

आदि से लाभ होगा, उनके खर्चे बढ़ेंगे, नेत्रों की देखभाल करनी चाहिए।

आपकी संतान शारीरिक कार्य जैसे खेलकूद आदि में उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कठिन परिश्रम करने से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अचल संपत्ति में निवेश करने से भविष्य में लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घुटनों या पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरवजी के रूप में पूजा करें।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(16/05/2040 - 22/04/2041)

आपकी मंगल की महादशा 01/12/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 16/05/2040 को प्रारंभ होकर 22/04/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और प्रसन्न रहेंगे। खूब धन कमाएंगे। परिवार में सुख, उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध रहेंगे। आपकी मधुर वाणी से जनता प्रभावित होगी। विरासत या उपहार से धन मिल सकता है। प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिलेगी।

नौकरी मिल सकती है। अदालत में सफलता मिलेगी। प्रोन्नति और कार्य में प्रगति का संकेत है। विशिष्ट व्यक्तियों से मित्रता बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी को अचानक अप्रत्याशित लाभ या परिवर्तन का संकेत है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता सफल और धनी होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, शत्रुओं पर विजय, अचल संपत्ति के क्रय, वांछित स्थान पर तबादले का योग है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, सम्मान में वृद्धि होगी, व्यापार में लाभ होगा, प्रोन्नति मिल सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो सम्मान और प्रोन्नति का संकेत है। परामर्शदाता सफल और धनी बनेंगे। व्यापारियों को अचानक धन या अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चेहरे और मुख की मामूली व्याधि संभव है। उत्तम भोजन के सेवन में अति न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(22/04/2041 - 01/06/2042)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/12/2038 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/04/2041 को प्रारंभ होकर 01/06/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको हर प्रकार से लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। धन, ज्ञान और सम्मान का संकेत है। साख उत्तम रहेगी। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। संतान से सुख मिलेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। कमर्ठता, धैर्य और कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। कुछ धन आसानी से मिल जाएगा।

आपके जीवनसाथी को पहले किये निवेश से आय होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं होंगी; उत्साह उच्चस्तर का रहेगा। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं ; आय अच्छी होगी। आपके भाई-बहनों की यात्रा हो सकती है; उच्च शिक्षा, भौतिक सुख, आत्मविश्वास में वृद्धि और कार्यो में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान सामूहिक गतिविधियों में भाग लेगी, उन्हें विरोधियों पर सफलता मिलेगी, प्रसन्न और उत्साही होंगे। अगर से सेवारत हैं तो कार्यों में सफल होंगे, चुनाव में जीत सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों और घुटनों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए पांचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(01/06/2042 - 29/05/2043)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/12/2038 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 01/06/2042 को प्रारंभ होकर 29/05/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में व्यापार में लाभ होगा। साझेदारों के साथ विचार-विनिमय बढ़ेगा। व्यापार से संबंधित यात्रा हो सकती है। विदेश भी जा सकते हैं। कार्यक्षेत्र में उत्थान होगा। किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। घरेलू सुख मिलेगा। ज्योतिष, कविता, धर्म और गणित में रुचि बढ़ेगी। संचार माध्यम और व्यापार में सफल हो सकते हैं। प्रसन्नचित्त और स्थिर बुद्धि वाले होंगे; बहुत से मित्र रहेंगे।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। आपके पिता धन कमाएंगे। माता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। उन्हें पुस्तकों से प्रेम होगा। भाई-बहनों को निवेश से और शिक्षा से लाभ होगा। उनकी यात्राए हो सकती हैं, उच्चशिक्षा में रुचि होगी, धनी बनेंगे।

आपकी संतान को पत्र व्यवहार से लाभ होगा; जनता से संपर्क बढ़ेगा। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा, अनुबंध पर हस्ताक्षर, लेखन या प्रकाशन से लाभ का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे। परामर्शदाताओं की समृद्धि बढ़ेगी। व्यापारियों को लाभ में बढ़ोत्तरी मिलेगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए गाय को चारा खिलाएं।

अंर्तदशा :- मंगल - केतु
(29/05/2043 - 25/10/2043)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/12/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/05/2043 को प्रारंभ होकर 25/10/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। कभी-कभी कार्यवश घर से दूर जा सकते हैं। आपके बहुत से मित्र होंगे जो आपकी मदद करेंगे। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। समाज, कार्यक्षेत्र और व्यापार में लाभ होगा; चुनाव में जीत होगी, शत्रुओं पर विजय की संभावना है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को धन का लाभ और संचय होगा। माता का व्यक्तित्व चमकेगा। भाई-बहनों के लिए धनार्जन का संकेत है, प्रसन्न रहेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी, मामापक्ष से लाभ होगा।

आपकी संतान की शिक्षा में बाधाएं आ सकती हैं। उन्हें ऊर्जा के अपव्यय से बचना चाहिए, बिना लाभ की गतिविधियों से दूर रहें। अगर से कार्यरत हैं तो कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं।

अगर आप कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ हो सकता है, जबकि व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; छाती में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(25/10/2043 - 24/12/2044)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/12/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 25/10/2043 को प्रारंभ होकर 24/12/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप हर प्रकार से समृद्ध बनेंगे। साझेदार के माध्यम से या विरासत में धन या अचल संपत्ति प्राप्त हो सकते हैं। घरेलू सुख उत्तम होगा। व्यापार में आय बढ़ेगी। सम्मान में वृद्धि होगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध होंगे। परिवार में खुशहाली रहेगी। विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा। दान-धर्म में रुचि लेंगे। परिवाजन और मित्र इज्ज़त करेंगे।

आपके जीवनसाथी विभिन्न माध्यमों से धनार्जन करेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता सौभाग्यशाली रहेंगी, प्रसिद्ध और धनी बनेंगी, मित्र उनकी मदद करेंगे। भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रु परास्त होंगे, कार्यालय उत्तम रहेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारियों की आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली तकलीफ का तुरंत इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :- मंगल - सूर्य
(24/12/2044 - 01/05/2045)

आपकी मंगल की महादशा 01/12/2038 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 24/12/2044 को प्रारंभ होकर 01/05/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपको किसी अप्रत्याशित स्थान से धन प्राप्त हो सकता है। सेवानिवृत्त होने वालों को पेंशन, ग्रेच्युटी आदि प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी मगर उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी जिससे आपको भी लाभ पहुंचेगा। शिक्षा उत्तम होगी। धन प्राप्त हो सकता है। वाक्शक्ति से दूसरों को प्रभावित करने में सफल होंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी, उच्चपद प्राप्त होगा। पिता के खर्चे बढ़ेंगे, शत्रुओं पर विजयी होंगे। भाई-बहनों को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन एवं उच्चपद प्राप्त होंगे।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफलता, सरकार से लाभ, वाहन, अचल संपत्ति का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो संचार माध्यम से लाभ होगा; लघु यात्राएं होंगी। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पाचन और प्रजनन तंत्रों के रोगों से सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए गुड़, घी और तांबे का दान दें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

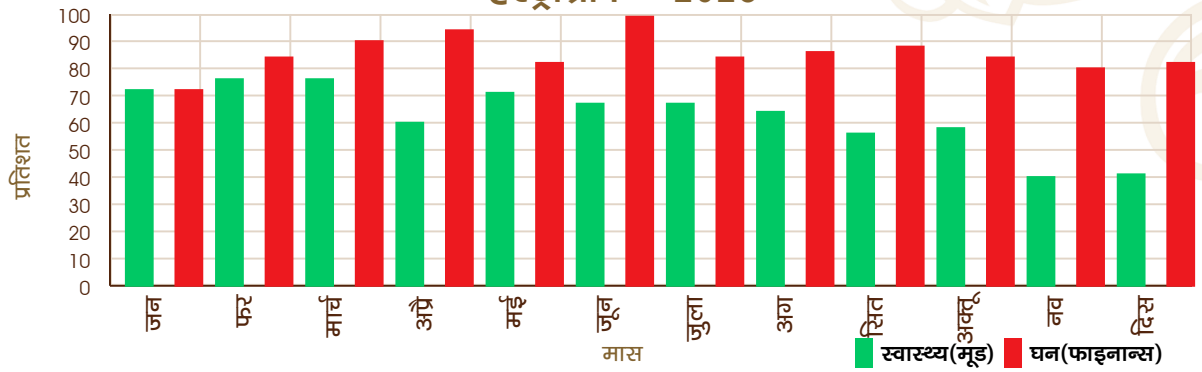

एस्ट्रोग्राफ - 2026

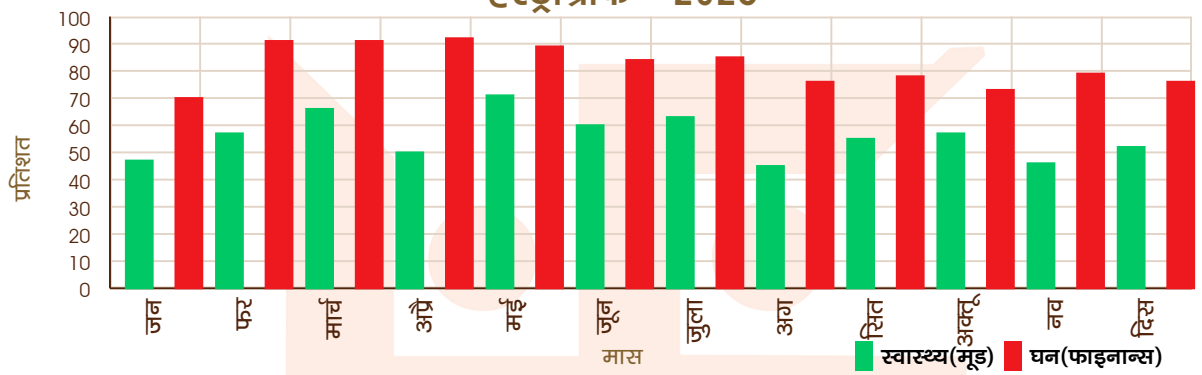

एस्ट्रोग्राफ - 2027

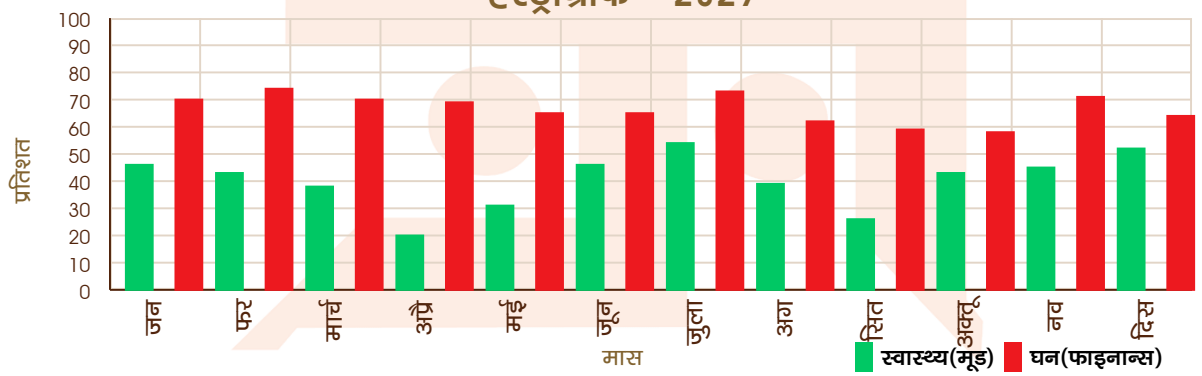

एस्ट्रोग्राफ - 2028

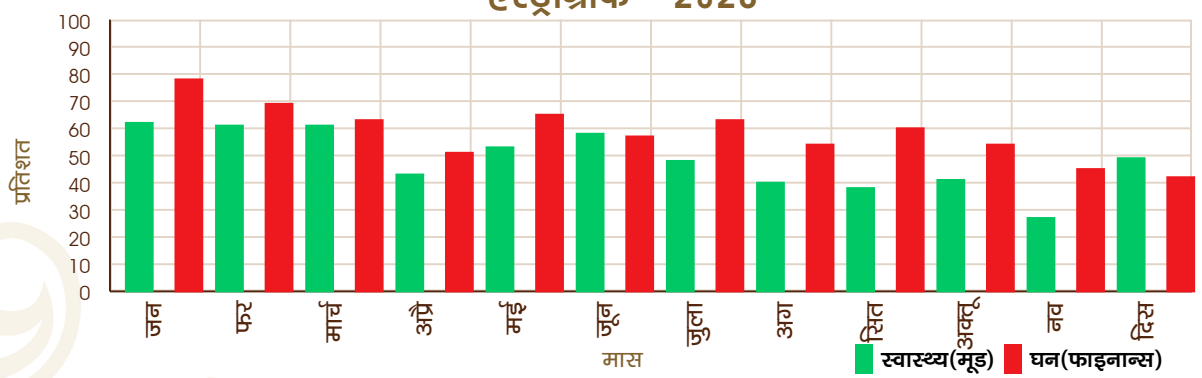

एस्ट्रोग्राफ - 2029

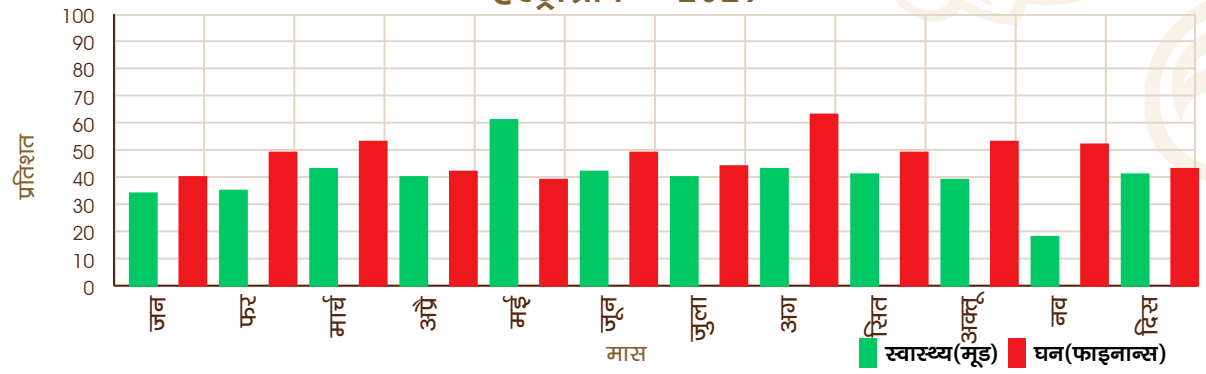

एस्ट्रोग्राफ - 2030

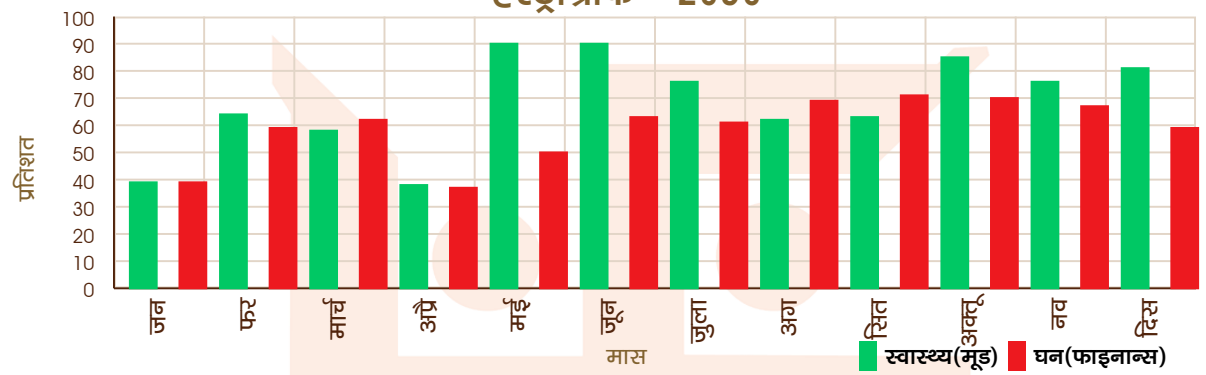

एस्ट्रोग्राफ - 2031

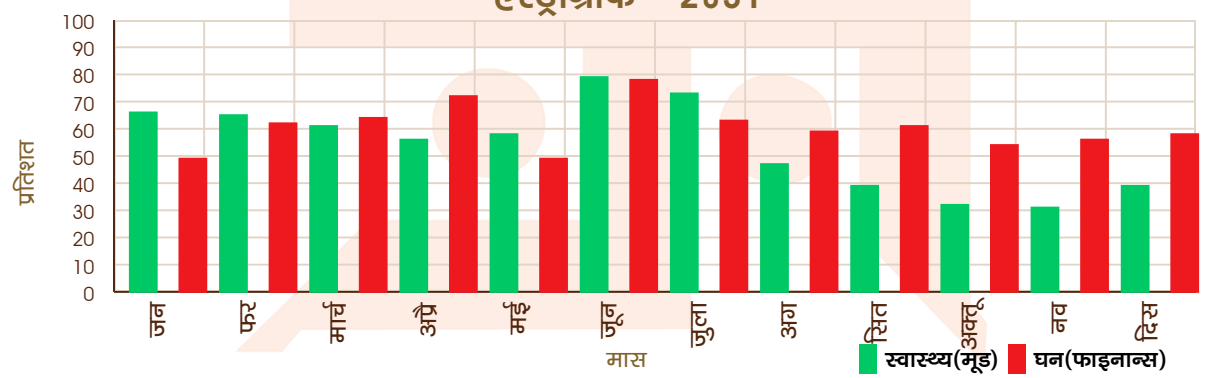

एस्ट्रोग्राफ - 2032

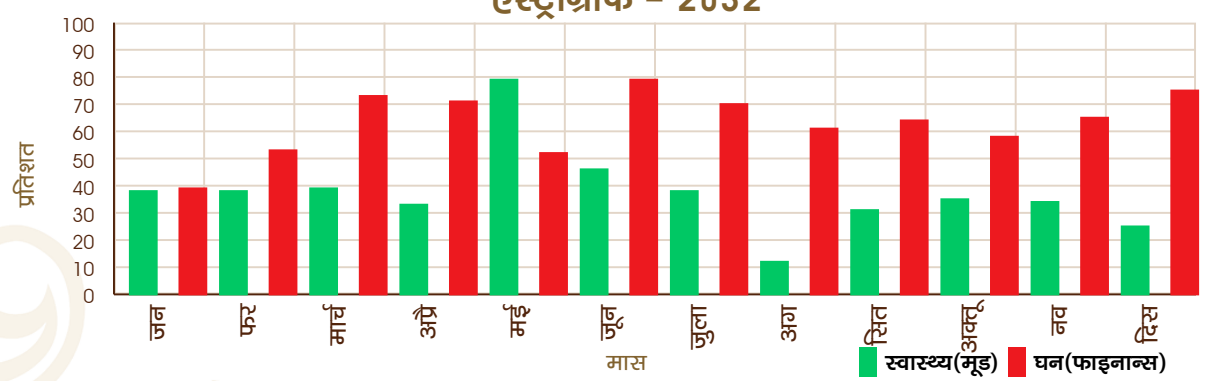

एस्ट्रोग्राफ - 2033

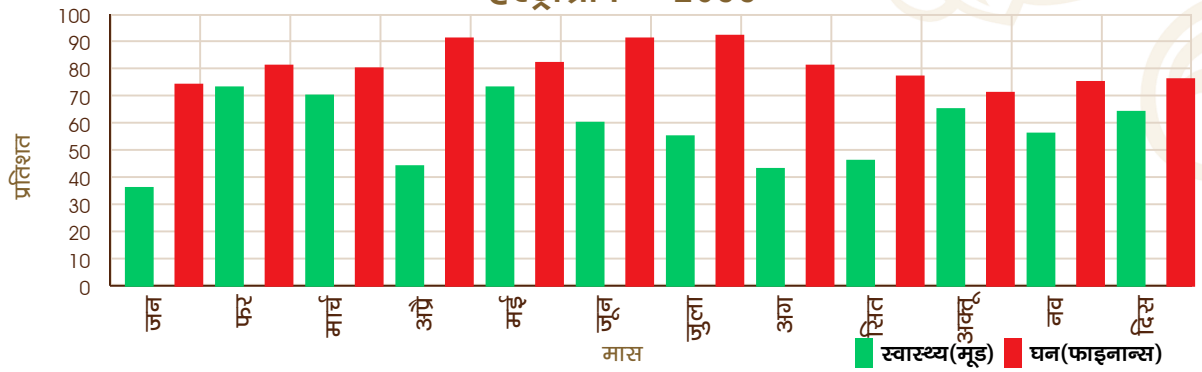

एस्ट्रोग्राफ - 2034

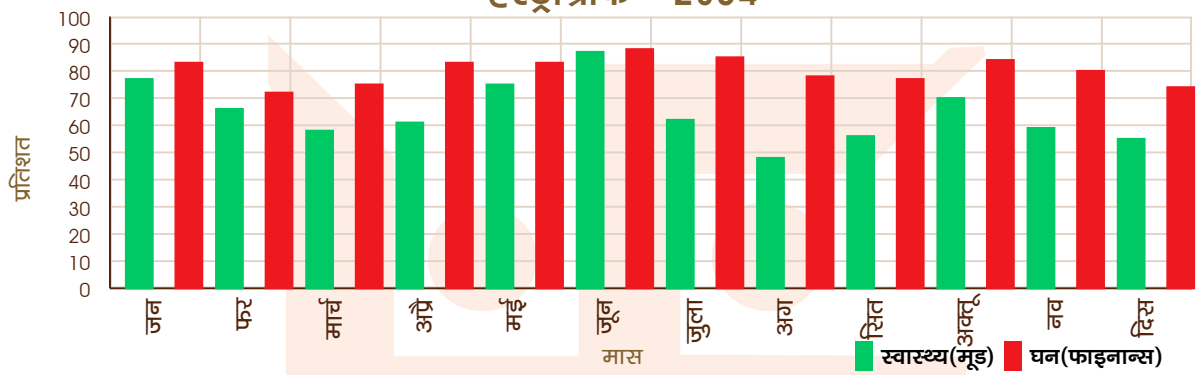

एस्ट्रोग्राफ - 2035

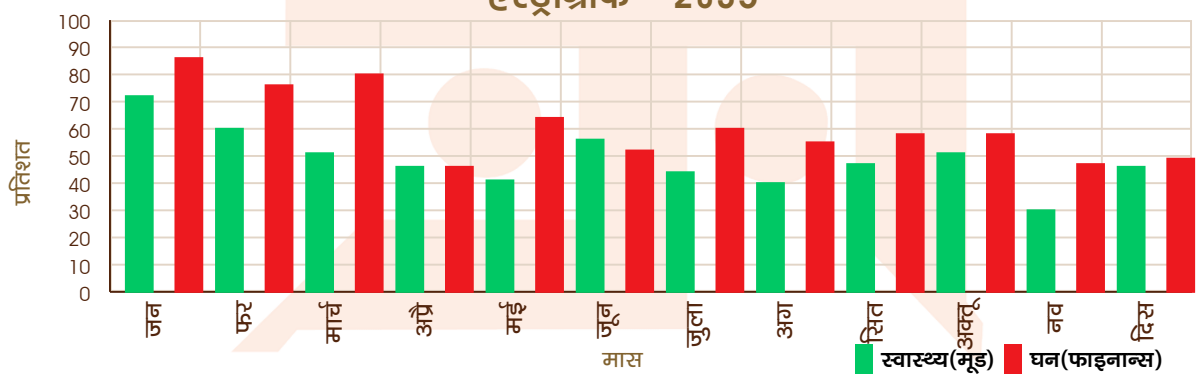

एस्ट्रोग्राफ - 2036

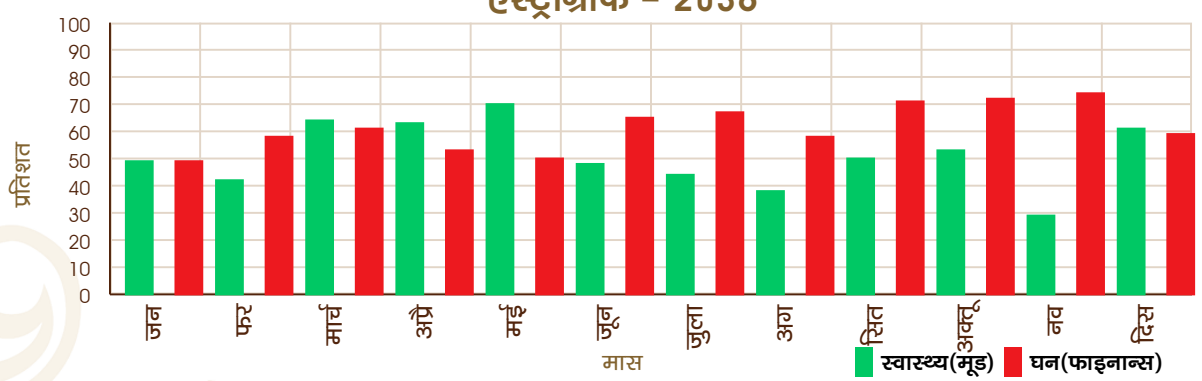

एस्ट्रोग्राफ - 2037

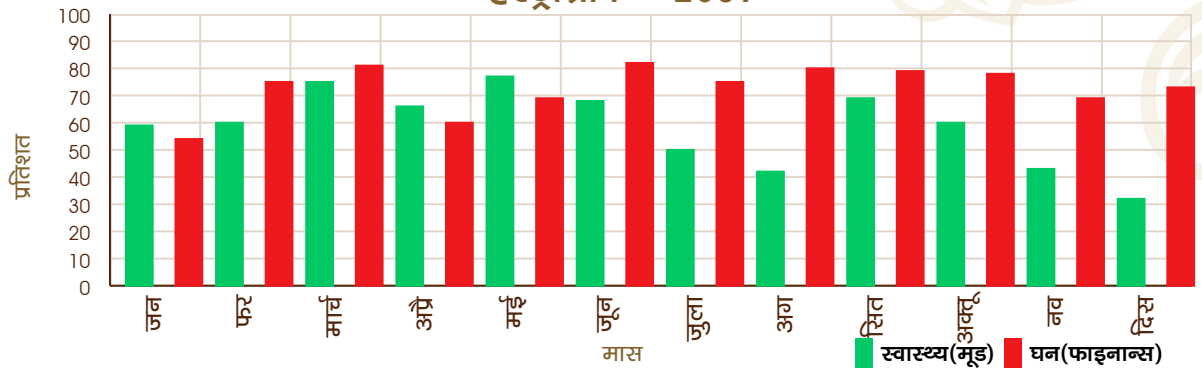

एस्ट्रोग्राफ - 2038

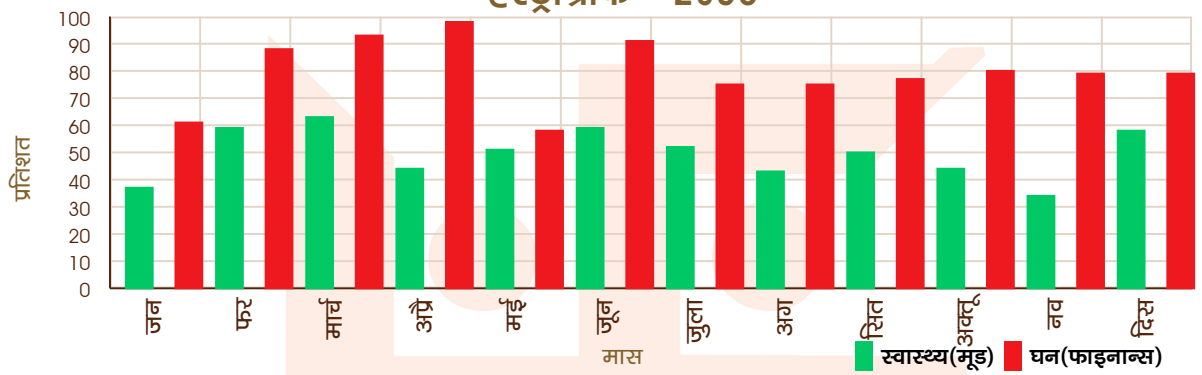

एस्ट्रोग्राफ - 2039

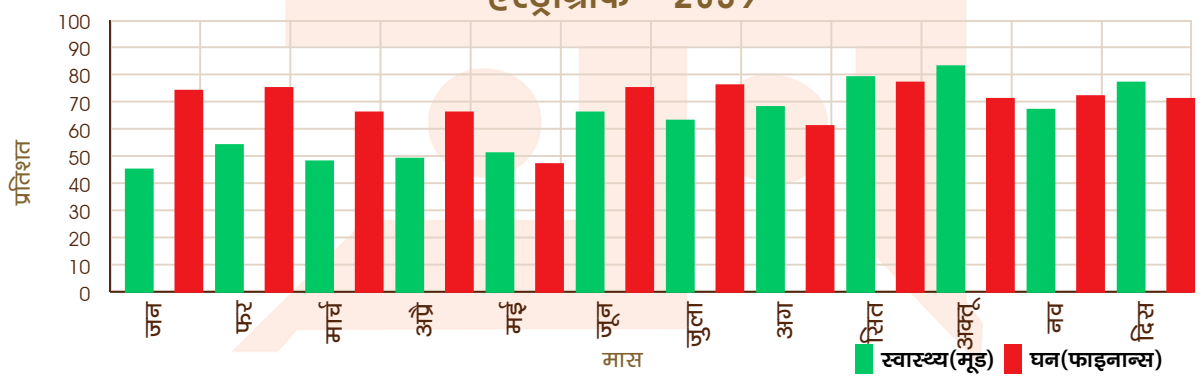

एस्ट्रोग्राफ - 2040

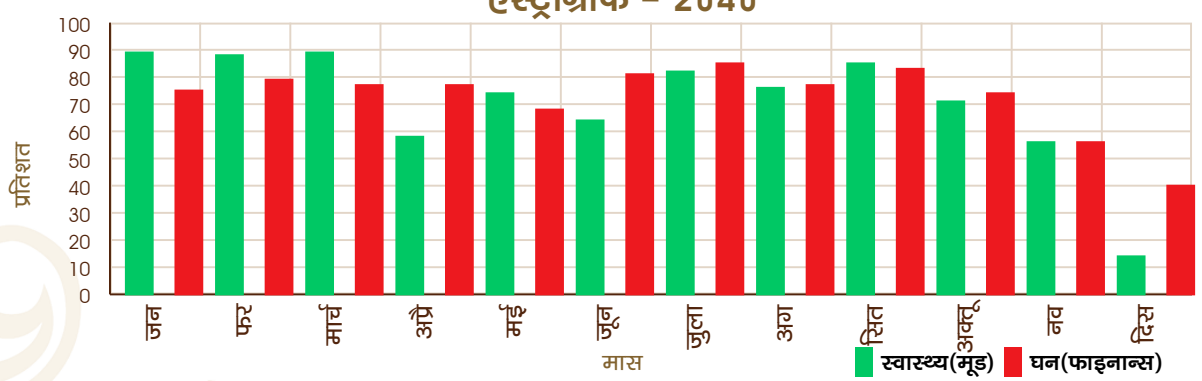

एस्ट्रोग्राफ - 2041

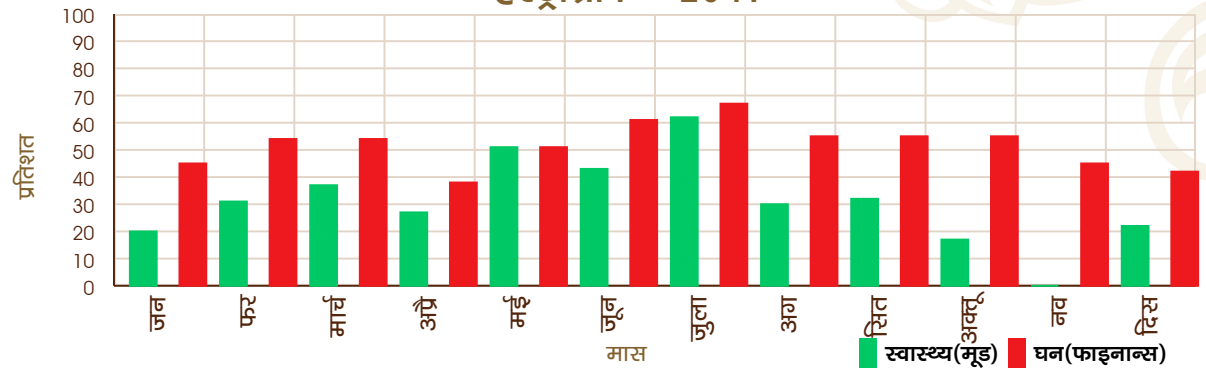

एस्ट्रोग्राफ - 2042

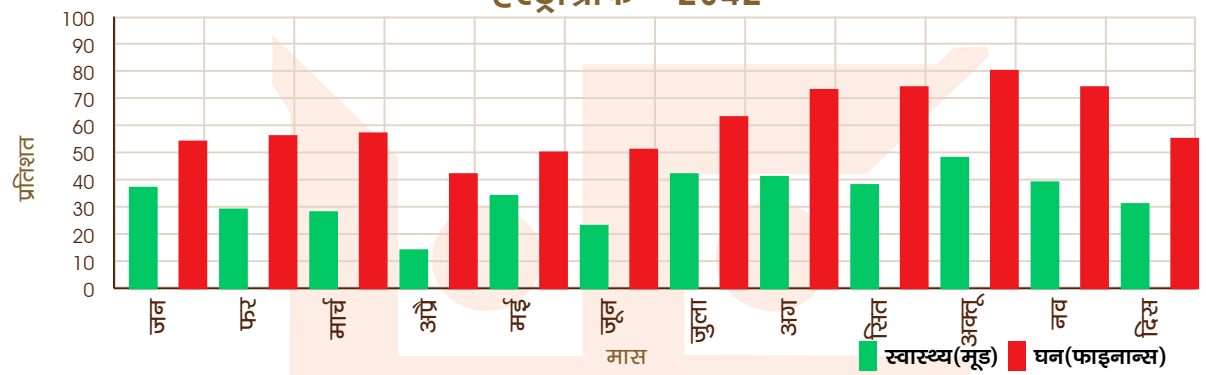

एस्ट्रोग्राफ - 2043

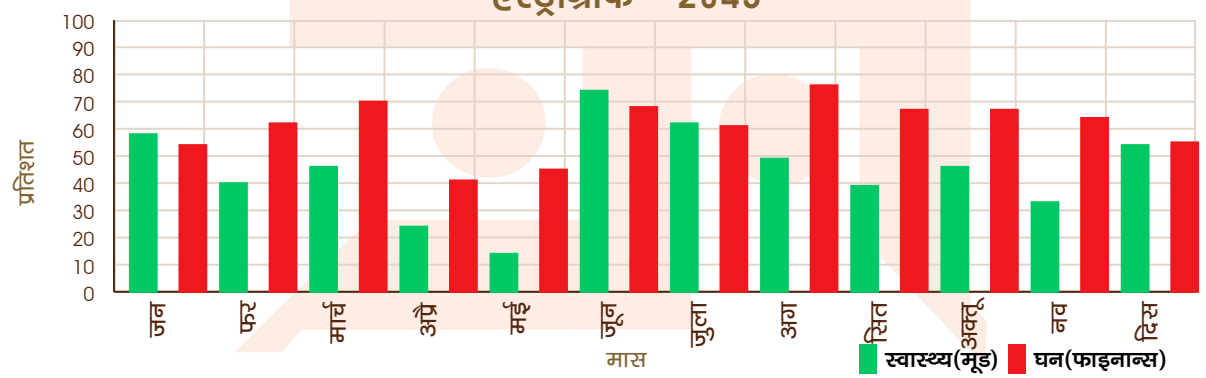

एस्ट्रोग्राफ - 2044

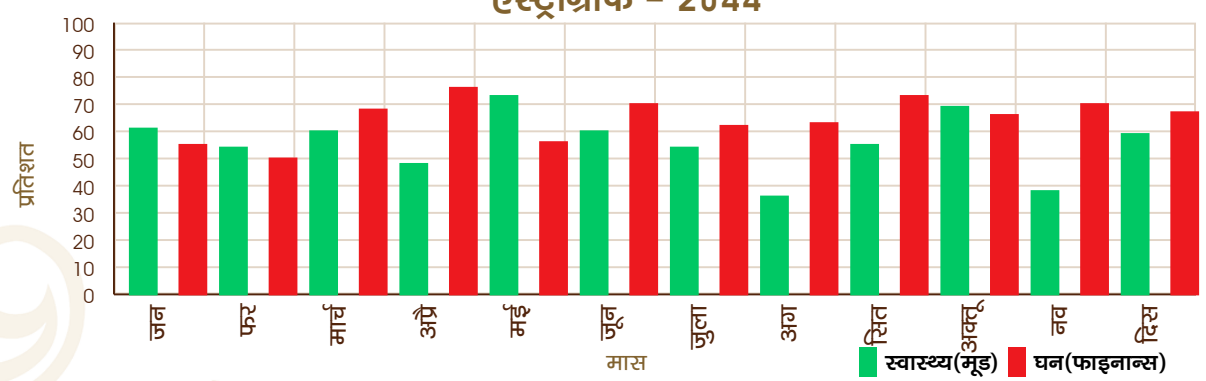

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63

।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,केतु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,चंद्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

दत्तकपुत्रप्राप्ति योग

दत्तात्मजः स्यादुदयास्तनाथसम्बन्धहीनो विबलः सुतेशः ।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश निर्बल हो और लग्नेश तथा सप्तमेश में से कोई संबंध स्थापित न हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल,बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दत्तक पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,मंगल,शनि,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका

जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शुक्र योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 302-6 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश सप्तमेश और राशीश द्विस्वभाव राशि में हों तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि,मंगल योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका दो विवाह संभाव्य है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-4 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।